उपन्यासकार कुशवाहा कांत द्वारा रचित

काला भूत



कुशवाहा कांत

प्रकाशक :
कांत प्रकाशन

कुशवाहा 'कान्त'

काला सूल



धायँ ! धायँ !! धायँ !!!

कई गोलियाँ उसके शरीर से टकराईं। परन्तु उस भयानक भूत पर उन गोलियों का कुछ असर न हुआ। उसे जरा भी व्यथा न मालूम हुई।

•

आँखें खोलकर उसने चारों ओर देखा। सबसे पहले उसका ध्यान अपने शरीर पर गया। उस पर एक चादर पर पड़ी थी। उसके भीतर वह विवस्त्र लेटा था। शर्म से लाल हो उठा वह।

•

मूल्य—चार रुपया





कुशवाहा कान्त

साइकिल हवा को चीरती हुई उड़ी जा रही थी। वह युवक अपनी धुन में मस्त उसे और तेज चलाने का प्रयत्न कर रहा था। शायद जल्दी ही उसे कहीं पहुँचना था।

सड़क एकदम सुनसान थी।

आधी रात की घोर नीरवता में केवल उस युवक की सायकिल के पहियों का 'सर्र-सर्र' शब्द सुनाई पड़ रहा था।

चारों ओर निस्तब्धता थी।

सड़क के दोनों किनारों पर बने विशालकाय मकानों के खम्भे भूतों से लग रहे थे।

उन दिनों मिर्जापुर में प्लेग का आतङ्क छाया था। शहर के लोग अपने प्राणों की रक्षा के लिए दूर भाग गये थे।

कोई भी नहीं बचा था।

यहाँ तक कि दिन में भी वहाँ रात का समाँ नजर आता था।

शाम होते-होते ही आस-पास के गाँवों में सियार तथा सियारिनें आकर भयंकर बोली बोलने लगते।

तात्पर्य यह है कि वैभवशाली मिर्जापुर उस समय एक बीहड़ जंगल में परिवर्तित हो रहा था।

इस समय उस युवक की साइकिल 'पसरहट्टे' की सड़क पर जा रही थी।

एकाएक 'घनननन्' का शब्द हुआ।

शायद युवक ने अपनी साइकिल की घण्टी बजाई थी। उसे सामने किसी मनुष्य की आहट मिली थी।

परन्तु ऐसी अँधेरी रात तथा विकट परिस्थिति में

यहाँ कोई मनुष्य क्यों आने लगा ?

थोड़ी दूर और बढ़ने पर युवक ने देखा—लगभग बीस गज की दूरी पर एक भयंकर काली शक्ल पूरी सड़क छेंक कर खड़ी है।

युवक ने पुनः घण्टी बजाई, परन्तु वह आकृति अपनी जगह से न हटी और न हिली-डुली ही। युवक के हृदय में भय का संचार होने लगा। उसे अपने हृदय की धुक-धुकी बढ़ती हुई मालूम दी।

फिर भी वह धैर्य धारण किये आगे बढ़ने लगा।

एक क्षण में ही उसकी साइकिल उस आकृति के पास आ गई।

उसने देखा एक पर्वताकार काला भूत बीच सड़क पर चुपचाप खड़ा था।

भूत के शरीर पर कपड़े बिलकुल नहीं थे। वह एक-दम नंगा तथा उसके शरीर का रंग आबनूस की तरह काला था। बदन तथा मुँह पर लम्बे-लम्बे बाल थे।

उसके हाथों तथा पैरों में एक-एक बालिश्त के नाखून थे। उसकी आँखें अँधेरे में भी दहकते अङ्गारे की तरह जल रही थीं।

युवक काँपने लगा।

साइकिल का हैण्डिल सँभालना मुश्किल हो गया, परन्तु उसने अपनी चेतना-शक्ति लुप्त न होने दी। उसने हैण्डिल घुमाकर उस भूत के बगल से निकल जाने का प्रयास किया, लेकिन वह ऐसा न कर सका। क्योंकि एकाएक उसे गहरा धक्का लगा और वह जमीन पर आ रहा।

परन्तु वह साहसी युवक, जिसकी अवस्था अभी

केवल बीस ही वर्ष की थी और जिसकी वेष-भूषा से यह प्रकट होता था कि वह कालेज का विद्यार्थी है, तुरन्त ही उठ खड़ा हुआ।

उसके हृदय ने जोरों से धड़ककर खतरे की सूचना दी। उसका हाथ तुरन्त ही अपनी पैण्ट की जेब में गया और दूसरे क्षण एक महाशक्तिशाली रिवाल्वर दिखाई देने लगी।

धायँ! धायँ!! धायँ!!! घोड़ा तीन बार दबा और युवक का रिवाल्वर गरज उठा।

'धायँ-धायँ' का शब्द दिशाओं को प्रताड़ित करता, दूर, अति दूर क्षितिज के पास जाकर विलीन हो गया।

उस काली आकृति की जगह यदि कोई लोहे का पुतला होता तो वह भी इन तीन फायरों में मिट्टी में मिल गया होता, परन्तु यह देखकर युवक के आश्चर्य का पारावार न रहा कि वह कालाभूत, पहले की ही तरह चुपचाप बिना हिले-डुले खड़ा रहा।

विस्मय से युवक के मुख से एक हल्की-सी चीख निकल पड़ी।

वह चित्र-लिखित-सा खड़ा रहा।

उसकी हिम्मत ने जवाब दे दिया। उसका साहस विलीन हो गया, वह थर-थर काँपने लगा।

धीरे-धीरे उस काली शक्ल में हरकत पैदा हुई।

वह कुछ हिली, और उसका बड़े-बड़े नाखूनों वाला भयंकर लम्बा हाथ युवक की ओर बढ़ने लगा।

युवक का डर से बुरा हाल था। उसने समझ लिया कि वह एक ऐसे भूत के सामने खड़ा है, जो उसे बिना खाये

न छोड़ेगा।

उसका कम्पन और भी बढ़ गया।

काली शक्ल के उस भयंकर हाथ ने आगे बढ़कर युवक की नाक पकड़ ली। युवक को ऐसा मालूम हुआ, मानों किसी ने उसकी नाक में सैकड़ों सूई चुभो दी हो।

उसे असह्य पीड़ा होने लगी और दूसरे ही क्षण वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा।

अब काली शक्ल ने उसकी नाक छोड़ दी और उसे उठाकर अपनी पीठ पर लाद लिया। उसके बाद बायें हाथ में उस युवक की सायकिल लटका ली और चलता बना।

उस काले दैत्य में जाने कितना बल था कि वह उस युवक और उसकी सायकिल को उठाये तेजी से भागा चला जा रहा था, परन्तु उसके शरीर पर थकावट का नामोनिशान तक नहीं था।

वह तेजी के साथ चलता रहा।

शीघ्र ही वह फतहा बाजार के उस हिस्से में आ पहुँचा, जहाँ सुनसान मैदान में ऊँची चहारदीवारी के अन्दर एक सुविशाल भवन बना हुआ था।

वह चहारदीवारी के सामने आकर खड़ा हो गया।

अपना दाहिना हाथ फाटक की ओर उठाकर धीरे से उसने कुछ इशारा किया। उसके इशारा करते ही लोहे का वह विशाल फाटक धड़-धड़ करता एक ओर खुल गया।

वह भयंकर भूत युवक को लादे अहाते के अन्दर घुसा।

भीतर खाली मैदान था खूब बड़ा, और उसमें नाना प्रकार के फूलों के पौधे लगे थे, जिन पर मधुर गन्धयुक्त फूल विकसित होकर अपनी मधुर सुगन्धि फैला रहे थे।

फूलों की खुशबूदार क्यारियों से होता हुआ वह भयंकर नर-पिशाच अहाते के भीतर बने एक सुन्दर मकान के प्रमुख द्वार की ओर बढ़ा।

उसके पास पहुँचकर वह क्षण भर तक रुका और पुनः अपना दाहिना हाथ उठाकर दरवाजे की ओर संकेत किया।

दरवाजे में ताला बन्द था।

परन्तु, उस भूत के हाथ उठाते ही वह ताला चटख कर खुल गया और थोड़ी ही देर बाद उस दरवाजे के पल्ले भी विलीन हो गये।

अब अन्दर जाने का रास्ता साफ दिखाई देने लगा। भीतर बहुत ही घना अन्धकार था। किसी आदमी की आहट न सुनाई पड़ने के कारण ऐसा मालूम होता था कि यह मकान बहुत दिनों से सुनसान पड़ा है।

यदि दूसरा कोई होता तो भय से थर्रा उठता। उस घोर अन्धकार युक्त डरावने मकान में घुसने का कभी साहस न करता।

लेकिन वह भयानक काला नरपिशाच निशंक उस मकान में घुस गया और दो-तीन काली कोठरियाँ तेजी के साथ पार करने के बाद आँगन में आ पहुँचा।

यहाँ तक तो वह चुपचाप चला आया था और रास्ते भर उसने थकावट की कोई गहरी साँस भी न ली थी, परन्तु आँगन में पहुँचकर उसने जोरों से जम्हाई ली।

उसके जम्हाई लेते ही इस प्रकार का शब्द हुआ, मानों कहीं बिजली गिरी हो।

जोर से जम्हाई लेने के बाद वह मुँह में ही कुछ बुदबुदाने लगा, मानो कोई मन्त्र पढ़ रहा हो।

दूसरे ही क्षण युवक और उसकी सायकिल समेत, वह मकान की तीसरी मञ्जिल पर एक कोठरी के अन्दर पहुँच गया।

कोठरी में अन्धकार था।

परन्तु भूत ने कोई खटका दबाकर रोशनी कर दी।

वह रोशनी गाढ़े नीले रङ्ग की थी, जिसमें अलकतरे से पुती हुई दीवारें बड़ी भयंकर लग रही थीं। उस कमरे के डरावने सामान तो और भी भयोत्पादक थे।

एक खूंटी से किसी मृत मनुष्य की नंगी लाश लटक रही थीं।

लाश पर छूरे के बहुत से घाव थे जिनमें से टप-टप रक्त गिरकर फर्श पर फैल रहा था। कमरे में सर्वत्र बहुत-सी हड्डियाँ पड़ी हुई थीं, जिससे मालूम होता था कि उस भयंकर भूत ने जिन-जिन मनुष्यों का भक्षण किया है, उन्हीं अभागों की ये हड्डियाँ हैं।

दूसरी ओर तमाम नर-कंकाल एक पंक्ति में खड़े थे। प्रत्येक ढाँचा एक दूसरे के कन्धे पर इस प्रकार हाथ रखे था—जैसे वह सभी एक दूसरे के गहरे दोस्त हों।

उस भूत को वहाँ आया देखकर सभी कंकालों के जबड़े हिलने लगे। खटाखट ऊपर नीचे करके उन ढाँचों ने यह प्रकट किया कि वे सब बहुत भूखे हैं और जाने कब से उस नर-पिशाच के आने की बाट देख रहे हैं।

उनसे थोड़ी ही दूर पर कुछ मानव खोपड़ियाँ लटक रही थीं।

उनके सर की चोटी ऊपर कुण्डे से बँधी थी। एक खोपड़ी किसी मुल्ला की प्रतीत होती थी, वह दाढ़ी के बल उल्टा लटक रहा था।

कमरे में एक ओर लोहे का तख्ता पड़ा था, जिसके चारों कोनों पर चार चुल्ले लगे थे, और उनमें रस्सी बँधी थी।

भूत ने युवक की साइकिल एक कोने में रख दी और उसे ले जाकर उस लोहे के तख्ते पर लिटा दिया।

तत्पश्चात् उसके दोनों हाथ तथा पैरों को रस्सियों द्वारा तख्ते में लगे चुल्लों से कसकर बाँध दिया, पुनःआप भी पास रखी हुई कुर्सी पर बैठ गया।

वह युवक अभी बेहोश था।

थोड़ी देर तक तो भूत ने उसे यूँही पड़े रहने दिया और होश में आने की प्रतीक्षा करता रहा।

परन्तु घण्टों बीत जाने पर भी उस युवक की चेतना-शक्ति न लौटी तो वह उठा और बाहर चला गया।

थोड़ी ही देर बाद वह पानी से भरा हुआ लोटा लेकर लौटा। चुल्लू में पानी भरकर युवक के मुँह पर छींटे देने लगा वह।

आह!अब मालूम हुआ कि वह पानी नहीं बल्कि किसी अभागे का ताजा खून है, एकदम सुर्ख और गाढ़ा-सा।

भूत बार-बार उसके मुख पर खून के छींटे देने लगा। थोड़ी देर बाद वह युवक सुगबुगाया। अब भूत ने छींटा देना बन्द कर दिया और उसके ऊपर झुककर उसकी हालत देखने लगा। उसी समय युवक ने अपनी आँखें खोल दी।

परन्तु उस भयङ्कर पिशाच को अपने ऊपर झुका,लाल-लाल नेत्रों से घूरता हुआ पाकर वह जोरों से चीख उठा।

एकाएक उस भूत के मुख से कुछ डरावने शब्द निकलने लगे।

वह अपनी मेघ-गर्जन सदृश आवाज में बोल उठा—

"युवक !...डरो नहीं। जो मैं कहता हूँ उसे ध्यान

[illegible] सुनो और मेरी बातों का साफ-साफ जवाब दो। याद रखो ! मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं, परन्तु यदि तुमने मेरी बातों का उत्तर सीधी तरह न दिया तो तुम तड़पा-तड़पा कर मार डाले जाओगे !..."

उसकी बातें सुनकर युवक को कुछ ढाढस बँधा।

उसने उठकर बैठने की कोशिश की परन्तु बँधा रहने के कारण उठ न सका। यह देखकर उसका डर और बढ़ गया और उसे यह स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा कि यह भयानक नर-पिशाच उसे खाने के लिए लाया है।

मृत्यु की भयंकर प्रतिमा उसकी आँखों के सामने नाचने लगी।

उसके नेत्रों से अश्रु धारा प्रवाहित होने लगी।

"नादान ! रोता क्यों है ? मैं कष्ट देने के लिए तुझे नहीं लाया हूँ। मेरी बातों का साफ-साफ उत्तर देने से ही तू इस बन्धन से मुक्त हो जायगा। याद रख !...मुझे सब बातें मालूम हैं...झूठ बोलने का प्रयत्न न करना, नहीं तो कुत्ते की मौत मारा जायगा। मैं बड़ा ही निष्ठुर हूँ..."

युवक सिसकियाँ लेता बोला—"पिशाचराज ! मैं आपकी सब बातों का उत्तर देने के लिए प्रस्तुत हूँ, परन्तु आप कृपा करके यह न पूछें कि मैं इतनी रात को, जब कि सारा शहर सुनसान पड़ा है और चारों ओर प्लेग की तूती बोल रही है, अकेले ही कहाँ जा रहा था।"

"मैं यही तो तुझसे जानना चाहता हूँ।" वह पिशाच भयंकर हँसी हँसकर बोला।

पिशाच की बात सुनकर युवक का समस्त शरीर अशक्त पत्ते की भाँति काँप उठा।

सोचने लगा वह—

यह पिशाच उससे जो पूछना चाहता है, उसे कैसे बता सकता है वह ?

जिस बात को वह किसी से कहने का साहस तक नहीं कर सकता, उसे ही उसके सामने कैसे कहे ?

दोनों ओर मृत्यु अपना मुँह बाये खड़ी है।

क्या करे वह, क्या न करे ?

किस ओर जाय किस ओर न जाय ?

दिल कड़ा करके किसी प्रकार कहा युवक ने—"यह मैं नहीं बता सकता पिशाचराज !...कृपया इसके लिए मुझे क्षमा करें, क्योंकि मैं वचनबद्ध हूँ।"

"क्या ? नहीं बता सकते ?..." मेघ-सा गरजता हुआ वह पिशाच खड़ा हो गया।

उसके नेत्र और भी भयंकर हो गये। आकृति और भी भयावह हो उठी ! शरीर के बड़े-बड़े रोंगटे कांटों से खड़े हो गए।

वह गरज कर बोला—"पाजी लड़के !...कहा मान, नहीं तो देख, मैं तेरी ढिठाई का क्या मजा चखाता हूँ !..."

भूत ने अपनी कुर्सी में लगे किसी यन्त्र को दबाया।

'खट' का शब्द हुआ और बहुत ही महीन सुरीली आवाज से भयंकर कमरा गूँज उठा।

युवक को यह जानकर महान आश्चर्य हुआ कि उस लोहे की सतह जिस पर वह बँधा हुआ था, धीरे-धीरे गर्म हो रही है।

अब उसे कष्ट होने लगा।

उस तख्ते की गर्मी इतनी बढ़ गई कि बर्दाश्त करना उस युवक के लिए कठिन हो गया।

गर्मी उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई।

युवक ने व्याकुल होकर करवट बदलनी चाही, परन्तु वह ऐसा न कर सका।

धीरे-धीरे तख्ते की सतह तवे के समान जलने लगी और साथ ही युवक का शरीर भी विकट दाह से पीड़ित हो उठा।

वह चिल्लाने लगा पुनः बेहोश हो गया।

परन्तु उस पिशाच को जरा भी दया न आई। खूंटी पर टँगी हुई उस जख्मी लाश से अभी तक खून जारी था।

खून की धारा से कमरे का फर्श लाल हो रहा था।

वे भयानक जबड़े एक बार पुनः दाँत किटकिटा उठे जैसे उस युवक को भक्षण करने के लिए अत्यन्त बेचैन हों। पिशाच उठा और उसने एक बर्तन में उस खून को समेट लिया। तत्पश्चात् युवक के पास आकर खड़ा हो गया और उसके मुँह पर खून के छींटे देने लगा।

लेकिन युवक को होश कैसे आता ?

आग की भयानक गर्मी ने उसे चेतनाहीन कर दिया था। बचा हुआ खून लेकर पिशाच ने एक सबसे तगड़े हड्डियों के ढाँचे के मुँह से लगा दिया।

"लो, तुम अपनी प्यास बुझा लो..." वह पिशाच बोला।

उसके कहते ही जबड़े का मुख हिला।

और आश्चर्य !

पात्र का समस्त खून उसकी हड्डियों के भीतर बहता दिखाई पड़ने लगा।

● ●

ब्रजेश कुमार का मकान मिर्जापुर के चेतगंज मुहल्ले में है। वह बड़े घर का लड़का है।

उसके पिता डिप्टी कलक्टर हैं। किसी वस्तु का अभाव नहीं है उसे। नौकर-चाकर, दौलत और ऐश्वर्य के सभी प्रसाधन उपलब्ध हैं। उसके विशाल बँगले को देखकर किसी राजमहल का भान होता है।

माँ का प्यार उससे बचपन में ही बिछड़ गया।

एक बहन है, नाम है प्रेमलता।

प्रेमलता जैसा नाम है, वह वैसी सुकुमारी भी है। उसने अभी-अभी बाल्यावस्था की चपलता त्याग कर यौवनावस्था की मदभरी, अल्हड़ उम्र में प्रवेश किया है।

ब्रजेश कुमार की अवस्था केवल बीस वर्ष है अभी। वह नेटिव कालेज मिर्जापुर के बी० ए० क्लास का बिद्यार्थी है।

कालेज के श्रेष्ठ छात्रों में उसकी गणना है।

वहाँ के प्रिंसिपल मि० भल्ला उसे बहुत चाहते थे। उसके क्लास में कुछ ऐसे लड़के भी थे, जो पाँच छः साल से उसी दरजे में बराबर फेल हो रहे थे और उनकी उम्र भी बहुत हो चुकी थी। अर्थात् वे विद्यार्थी जीवन को पार कर चुके थे।

उनका नाम था—युसुफ, करीम, अब्दुल्ला, रज्जन तथा श्याम सरोज।

उन दिनों मिर्जापुर में 'गोल्डेन गैंग' नामक एक बदमाशों का गिरोह था, जो लड़कियों का अपहरण किया करता था।

प्रतिदिन किसी न किसी की लड़की गायब हो जाती थी। शायद ही कोई दिन खाली जाता हो।

लाख सर पटकने पर भी अपहृत लड़की का पता न चल पाता। रोज इस तरह से लड़कियों के गायब होने से अधिकारी परेशान थे। आकस्मिक ढङ्ग से वे बदमाश लड़कियाँ उड़ा ले जाते थे।

पुलिस हैरान थी।

डिटेक्टिव परेशान थे।

कोतवाल, दरोगा सब पर हवाइयाँ उड़ रही थीं, परन्तु सब विवश थे।

दिनों-दिन 'गोल्डेन गैंग' का आतंक बढ़ता जा रहा था। अब स्थिति यहाँ तक हो गई थी कि लोग अपनी लड़कियों को बाहर तक न निकलने देते।

गङ्गा स्नान में तथा 'नौरातर' के मेले में, जिनमें स्त्रियाँ हजारों की संख्या में जाती थीं, अब खोजने पर पर भी नहीं मिलती थीं।

ब्रजेश भी 'गोल्डेन गैंग' के विषय में बहुत दिनों से सुनता आ रहा था।

अब तक इस ओर अधिक ध्यान नहीं दिया था उसने।

हाँ, उसने अपनी बहन प्रेमलता को अवश्य सावधान कर दिया था, ताकि वह उन दुष्टों से बची रहे।

जिस दिन की घटना हम पहले परिच्छेद में लिख आये हैं, उसके एक दिन पहले की बात है, ब्रजेश उस शाम को फील्ड से जरा पहले ही चला आया था।

वह अपने बाहरी कमरे में टेबुल के पास बैठा हुआ कुछ सोच रहा था।

एकाएक उसके सहपाठी अब्दुल, युसुफ, करीम, रज्जन तथा श्यामसरोज ने उस कमरे में प्रवेश किया। ब्रजेश ने खातिरदारी से बैठाया उन्हें।

चाय-पानी होने के बाद कुछ देर तक यूं ही गप-शप होती रही।

इसके बाद युसुफ ने कहा—"ब्रजेश ! आज का समय कितना सुहावना है। चलो कहीं घूम आया जाय !..."

"कहाँ चलोगे ?..." ब्रजेश ने पूछा।

"बरघाट..." अब्दुल्ला ने उत्तर दिया।

ब्रजेश ने आश्चर्य से कहा—"रात को बरघाट, साढ़े नौ बज गये हैं, कुछ ख्याल भी है ?..."

"क्या हर्ज है? मोटर तो साथ है..." अब्दुल्ला बोला।

"अच्छा चलो !..." कुछ सोचकर ब्रजेश ने कहा।

वह उठा और कपड़े पहनने लगा। उसने अपने सहपाठियों को अप्रसन्न करना उचित न समझा। परन्तु एकाएक न जाने क्यों उसका हृदय धड़क उठा।

उसे किसी भावी विपत्ति की आशंका हुई।

विचार करता हुआ अपने साथियों से बोला—"छोड़ो

यार !...आज मुझे कुछ काम है, फिर किसी दिन चलूँगा...''

उसकी बात पर कई हँस पड़े।

''देखो! लगे न नखरा-तिल्ला करने...'' श्याम सरोज ने मुस्करा कर कहा—''तुम्हारा नहीं-नहीं तो 'पसरहट्ट' वालियों से भी ज्यादा बढ़ गया है!...''

''और नहीं तो क्या ?'' युसुफ बोला।

अन्त में ब्रजेश के नहीं-नहीं करने पर भी वे सब उसे घसीट ले गए।

ब्रजेश चुपचाप मोटर में आ बैठा।

मोटर हवा से बातें करने लगी। ड्राइवर का इशारा पाकर वह बरघाट की ओर अविराम गति से भाग चली?

हवा के तीव्र झोकों से हृदय में कँपकँपी उठने लगी।

मिर्जापुर शहर से लगभग पाँच मील दक्षिण की ओर एक पहाड़ी पर बरघाट है। वहाँ एक पहाड़ी नदी भी बहती है जिसमें घड़ियाल बहुत हैं।

वहाँ कोसों तक कहीं गाँव-गिराँव नहीं है।

दिन को पत्थर वालों के कारण दो एक मनुष्य दिखाई भी पड़ जाते हैं, परन्तु रात्रि में तो यह प्रेतों का निवास-स्थान-सा प्रतीत होता है।

चन्द्रमा अभी उदय नहीं हुए थे। मोटर घनघोर अन्धकार को भेदती उड़ी जा रही थी।

उसमें गजब की तेजी थी।

पलक मारते भर में वह बरकछा के आगे निकल गई।

अब बरघाट का ढाल शुरू हो गया।

एकाएक 'किर्र' की आवाज हुई, ड्राइवर ने मोटर में ब्रेक दे दी।

मोटर रुक गई, सबों ने देखा कि वे बरघाट के किनारे

पर हैं, सभी उतर पड़े।

किन्तु—

जैसे ही ब्रजेश उतरा, अब्दुल्ला आदि उसपर भूखे बाघ की तरह टूट पड़े और उसे रस्सी से कसकर बाँध दिया।

"अरे...अरे...ठहरो तो...ठहरो तो भाई!..." ब्रजेश कहता ही रह गया।

आई हुई इस अचानक विपत्ति से वह घबड़ा उठा।

नम्रता से पूछा उसने—"भाइयों! मेरा क्या अपराध है, क्यों मुझसे इस प्रकार का व्यवहार कर रहे हो?..."

"ब्रजेश!..." अब्दुल्ला ने कहा—"हम तुम्हें जरा भी दुःख नहीं देना चाहते...केवल हमारी कुछ बातों को मान लेने से ही तुम छोड़ दिए जाओगे। वर्ना याद रखो, तुम्हें इसी तरह बँधी हालत में, इस विकराल नदी में छोड़ दिया जायगा...और तुम भयानक घड़ियालों के भक्ष्य बनोगे..."

ब्रजेश ने एक दृष्टि नदी की ओर उठाई।

वह गरजती हुई विद्युत-वेग से बही जा रही थी। रात्रि की उस भीषण नीरवता में उस पहाड़ी नदी की भयंकर आवाज सुनकर उसका कलेजा दहल उठा।

दीनतापूर्वक बोला—"नहीं-नहीं, ईश्वर के लिए मेरी जान न लो। मैं तुम लोगों की बातें मानने को तैयार हूँ। बोलो, तुम लोग क्या चाहते हो?..."

सभी साथी थोड़ी देर के लिए एक ओर चले गये। एकान्त में जाकर सब कुछ गुप्त वार्ता करते रहे।

फिर वे सब करीब आ गए!

अब्दुल्ला एक क्रूर हँसी हँसकर कहने लगा—"हम लोग तुमसे केवल दो बातें करना चाहते हैं। वह यह कि

हम लोगों ने मिलकर एक गुप्त कमेटी स्थापित की है, जिसके विषय में शायद तुमने भी सुना होगा...उसका नाम 'गोल्डेन गैंग' है..."

"गोल्डेन गैंग!..." आश्चर्य विस्फारित नेत्रों से व्रजेश ने कहा।

"हाँ...हाँ !...घबड़ाओ नहीं,ध्यानपूर्वक सुनते जाओ, हमारी कमेटी को स्थापित हुए लगभग तीन वर्ष हो गये। ...इस कमेटी के केवल छः मेम्बर हैं। पाँच को तुम यहाँ देख रहे हो,और छठवें मेम्बर हैं इस शहरके कोतवाल रतन सिंह, वे ही हमारी कमेटी के प्रधान हैं और उन्हीं के कारण हम लोग अभी तक बचे आ रहे हैं..." अब्दुल्ला ने कहा।

व्रजेश काँप रहा था। अब तक उसे यह नहीं मालूम था उसके क्लास के विद्यार्थी युसुफ, करीम आदि ही 'गोल्डेन गैंग' नामक गुप्त संस्था के धाता-विधाता हैं।

वह यह भी नहीं जानता था कि ऐसे बुरे काम में शहर के कोतवाल का भी हाथ हो सकता है।

अभी तक बाह्य जगत से वह सर्वथा अनभिज्ञ था।

उसे इस बात पर अटल विश्वास था कि कोतवाल सरकार द्वारा हमारी रक्षा करने के लिए भेजा गया है। यदि उसे मालूम होता कि कोतवाल रतन सिंह जो हम पर शासन करने के लिए नियुक्त हुआ है, गोल्डेन गैंग का का प्रधान है...और नागरिकों की बहू-बेटियों को नष्ट-भ्रष्ट कर रहा है तो वह इसे सहन न कर सकता।

उसका युवा हृदय—उसका नया रक्त शासन के इन ठेकेदारों से गहरा प्रतिशोध लेने के लिए उतावला हो उठा।

अब्दुल्ला पुनः बोला—

"हमारी कमेटी की बैठक बासलीगञ्ज के उस भयानक मकान में होती है, जो मिर्जापुर निवासियों में भुतहा

नाम से प्रसिद्ध है...हैं...हैं... तुम्हारी आँखें लाल-लाल क्यों हो रही हैं, क्या तुम्हें हम पर क्रोध आ रहा है...

ब्रजेश ! तुम हम लोगों का कभी कुछ बिगाड़ नहीं सकते और इस समय तो तुम भयानक गर्त के किनारे बँधे पड़े हो...जरा-सी शान दिखाते ही नीचे ढकेल दिए जाओगे और तुम्हारा यह फूल-सा शरीर पहाड़ी चट्टानों से टकराकर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा...कुशल इसी में है कि तुम चुपचाप हमारी बातें मान लो...

इस समय हमें रुपयों की जरूरत है। हम जानते हैं, तुम धनवान हो और हम लोगों की भली प्रकार सहायता कर सकते हो...

इसलिए हम चाहते हैं कि तुम हमारी कमेटी के सदस्य बन जाओ !...ऐसा करने से हम लोगों का काम बखूबी चलता रहेगा और तुम भी बढ़िया माल पाया करोगे..."

"तुम लोग जितना रुपया चाहो, मुझसे ले सकते हो, परन्तु मुझे मेम्बर बनाने का विचार छोड़ दो !..." ब्रजेश ने कहा।

अब्दुल्ला हँसकर बोला—"ब्रजेश! इस तरह तुम नहीं छूट सकते। क्योंकि हमें भय है, तुम छूट जाने पर हमारा गुप्त हाल सरकार के कानों तक पहुँचाये बिना न रहोगे ! परन्तु जब स्वयं भी हमारी कमेटी के मेम्बर बने रहोगे और तुम्हारा नाम तथा दस्तखत हमारे रजिस्टर में रहेगा तो हमें कुछ भी हानि न पहुँचा सकोगे...बोलो, क्या तुम्हें हमारी बातें स्वीकार हैं..."

ब्रजेश चुप रहा।

सोचता रहा वह। क्या करे, क्या न करे ?

अगर इन दुष्टों की बात नहीं मानता तो मौत

निश्चित है। ये बेरहम उस पर तनिक भी दया नहीं करेंगे।

"जल्दी बोलो, देर हो रही है?..." अब्दुल्ला ने उसे धमका कर कहा।

बेचारा ब्रजेश क्या करता?

विवश हो गया वह। अब्दुल्ला के बहुत धमकाने पर अन्त में उसने सारी बातें स्वीकार कर ली।

उसका नाम कमेटी के रजिस्टर में लिख गया और हस्ताक्षर भी ले लिया गया। इसके बाद उसके बन्धन खोल दिए गए।

थोड़ी देर बाद अब्दुल्ला ने ब्रजेश से कहा—

"देखो, कल आधी रात को कमेटी की एक बैठक होगी, उसी मकान में...तुम्हें आना पड़ेगा..."

● ●

खून से भरा लोटा लेकर वह नरपिशाच युवक के पास आकर खड़ा हो गया और उसके मुँह पर छींटे देने लगा। युवक का हृदय घृणा से भर गया।

दयनीय स्वरों में बोला वह—"पिशाचराज! आप यह क्या कर रहे हैं? मुझे क्षमा कीजिये, मुझसे यह अपराध हो गया। मैं अपने अपराध के लिए पश्चात्ताप कर रहा हूँ।"

"नहीं! नहीं!..." पिशाच मेघ-गर्जन सदृश स्वरों में बोला--"अब तू क्षमा नहीं किया जा सकता। मैं तुझे इसी जगह भूनकर खा जाऊँगा, तू मुझे समझा क्या है!...मैं भूत हूँ, मनुष्य भक्षी पिशाच..."

थोड़ी देर सन्नाटा रहा।

इसके बाद पिशाच पुनः बोला—"अच्छा ले, मैं तुझे जीवन दान देता हूँ, परन्तु कभी ऐसी गलती न करना..."

पिशाच ने फिर कोई खटका दबाया...और सुरीली तान

बन्द हो गई। साथ ही वह लोहे का तख्त भी ठंडा होने लगा।

थोड़ी देर में उसकी गर्मी बिल्कुल जाती रही।

युवक का सारा शरीर झुलस गया था, यह देखकर उस नरपिशाच को भी दया आ गई।

उसने उसके बन्धन खोले और एक कुर्सी पर लाकर बिठा दिया।

तत्पश्चात् बोला—"हाँ! कहो! तुम्हारा नाम क्या है और तुम इतनी रात को जा कहाँ रहे थे?..."

युवक ने बताया—"मेरा नाम ब्रजेश कुमार है। मैं चेतगंज में रहता हूँ, और आजकल यहाँ के नेटिव कालेज के फोर्थ ईयर का विद्यार्थी हूँ।

आप शायद यह जानते होंगे कि शहर में एक भयंकर संस्था है, जो गुप्त रूप से लड़कियों का अपहरण किया करती है।

इस संस्था का नाम (Golden Gang) गोल्डेन गैंग है। इसमें छः मेम्बर हैं। वे नित्य नई-नई सुन्दर लड़कियों को फँसाकर लाते हैं और उनके साथ बलात्कार करके उन्हें अपनी पिस्तौल का निशाना बनाते या दूर किसी शहर में ले जाकर किसी होटल या चकले में 'पेशा' करने के लिए बेच देते हैं।

इस प्रकार न मालूम कितनी असहाय बालिकायें असमय में ही काल-कवलित हुई हैं।

कल के पहले, अर्थात् परसों तक, मैं इस संस्था से विशेष परिचित नहीं था और न तो यही जानता था कि इसके सदस्य कौन-कौन हैं। ... कल इस कमेटी के दुष्ट सदस्यों ने धमकाकर मुझे भी अपनी संस्था का सदस्य बना लिया, क्योंकि मैं काफी रुपया खर्च कर उनकी सहायता कर सकता हूँ!

परन्तु आप विश्वास रखें, मुझे इस कार्य से बड़ी घृणा है। मैं यह नहीं चाहता था कि भोली-भाली बालिकाओं का कौमार्य लूटकर उन्हें नष्ट कर दिया जाय, परन्तु क्या करूँ, विवश होकर मुझे कल स्वीकार करना पड़ा।

अब भी मुझे प्राणों का भय है, इसीलिए मैंने उन दुष्टों का साथ देना स्वीकार किया है।

आज आधी रात को उसी 'गोल्डेन-गैंग' की बैठक होने वाली थी। मैं उसी में उपस्थित होने के लिए जा रहा था, जब आप मुझे यहाँ उठा लाये ...।'

"अच्छा'! उसके मेम्बर कौन-कौन हैं ?..." पिशाच ने पूछा।

"उसके प्रधान हैं इस शहर के कोतवाल रतन सिंह और अन्य मेम्बर हैं यहाँ के नेटिव कालेज के बी० ए० क्लास के विद्यार्थी और मेरे सहपाठी—युसुफ, करीम, अब्दुल्ला, रञ्जन तथा श्याम सरोज। बस इन्हीं छहों ने मिलकर इतना बड़ा तूफान मचा रखा है। लड़कियों को फँसाने के लिए इसके साथ कुटनियाँ भी हैं!

कमेटी की घृणित कार्यवाइयाँ वासलीगंज के एक सुविशाल मकान में हुआ करती हैं और लड़कियाँ शहर तथा दूर देहातों से पकड़कर लायी जाती हैं...परन्तु शहर से लाई हुई लड़कियों की संख्या बहुत होती है।"

इतना कहकर ब्रजेश चुप हो गया।

"देखो ब्रजेश कुमार!..." वह कालाभूत जरा कोमल आवाज में बोला—"तुम समझदार हो! समाज की दशा तथा देश की पुकार तुमसे छिपी नहीं है। फिर भी आश्चर्य है कि तुमने ऐसे कर्म में सहयोग देना स्वीकार कर लिया। खैर! अब तुम्हें उन दुष्टों से डरने की आवश्यकता नहीं।

मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। अब तुम उन दुष्टों को साफ-साफ बता दो कि उनका साथ नहीं दे सकते। शायद तुम नहीं जानते कि मैं क्यों तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ, सुनो—

मेरा अवतार दुष्टों का दमन करने, उन्हें उनकी करनी का मजा चखाने तथा समूल नष्ट करने के लिए हुआ है।

इसलिए तुम्हें उचित है कि तुम मेरे पथ का अनुसरण और इन दुष्टों की ज़ड़ें खोदकर समाज का उद्धार करने में मेरी सहायता करो। बोलो तैयार हो ?..."

"मैं तैयार हूँ ! आप मुझे क्या आज्ञा दे रहे हैं ? आप जो भी कहेंगे मैं वहीं करूँगा पिशाचराज !..."

"आज अधिक रात हो गई है। चलो, तुम्हें घर पहुँचा दूँ। कल तुम ग्यारह बजे रात को पुनः इसी जगह आना तो इस विषय में बातें होंगी! याद रखो। दिन में मत आना, मैं केवल रात में ही यहाँ रहता हूँ...अगर तुम दिन में आने की कोशिश करोगे तो जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

कहकर पिशाच ब्रजेश को लिए-दिए उस मकान की छत पर आ गया।

इस समय वह खुली छत पर था।

ऊपर नीलाकाश में चन्द्रमा हँस रहा था।

पिशाच बोला—"क्या अब भी मुझसे डरते हो ?..."

"नहीं..." ब्रजेश ने मुस्करा कर उत्तर दिया।

स्वच्छ चाँदनी में ब्रजेश की दन्त पंक्तियाँ रजत-रेखा-सी चमक उठीं।

पिशाच ने कहा—"अच्छा तो तुम मेरे कन्धे पर चढ़ जाओ !"

बिना किसी शंका के ब्रजेश उछलकर उसके कन्धों पर चढ़ गया।

नरपिशाच कुछ बड़बड़ाने लगा।

कुछ देर तक वह यूँ ही बड़बड़ाता रहा।

इसके बाद एकाएक धड़ाके की आवाज हुई और वह भयानक जीव, वह भयंकर काला भूत, ब्रजेश के साथ लुप्त हो गया।

छत सूनी हो गई। चन्द्रमा खिलखिला उठा, दिशायें हँस पड़ीं।

× × ×

बड़ा-सा कमरा !

साज-सजावट अत्यन्त मनोहारी।

स्थान-स्थान पर नवयुवतियों के नग्नचित्र टँगे हैं। बिजली का तीव्र प्रकाश हो रहा है। कमरे के एक ओर बड़ी-सी मेज रखी है, उसके चारों ओर सात-आठ कुर्सियाँ पड़ी हैं।

मेज की बगल में ही एक बड़ा-सा पलंग बिछा है, जिस पर एक बालिश्त मोटा गद्दा लगा है।

मेज के चारों ओर छः पुरुष बैठे हैं इस समय।

इनमें से पाँच तो नेटिव कालेज के विद्यार्थी तथा 'गोल्डेन गैंग' के कर्णधार युसुफ, करीम, अब्दुल्ला, रज्जन व श्याम् सरोज हैं।

छठवें हैं शहर के कोतवाल रतन सिंह, जो इस गुप्त कमेटी के प्रधान तथा सर्वेसर्वा हैं।

शराब की बोतलें मेज पर पड़ी हैं और ये दुष्ट प्याले पर प्याले ढाल रहे हैं।

मदिरा देवी की उपासना में ये दीन-दुनिया सबकी सुध भूल गये हैं।

"कोतवाल साहब !..." अब्दुल्ला ने प्याले की शराब पीकर कहा—"कल रात वाली घटना भी बड़ी मजेदार रही। हम लोग ब्रजेश को बहकाकर वहीं ले गये और आखिरकार मृत्यु का भय दिखलाकर, अपनी कमेटी का मेम्बर बना ही लिया !...अब हमें रुपयों की कमी नहीं सतायेगी, क्योंकि ब्रजेश बड़ा धनवान है !..."

"परन्तु वह अभी तक आया क्यों नहीं ? उसे आज कमेटी की बैठक होने की सूचना दे दी गई थी।" करीम ने कहा।

"खैर, वह नहीं आया तो तुम्हारी बला से, तुम लोग अपना काम करो...हाँ ! बताओ, आज कौन-सा माल लाये हो ?..." कोतवाल रतनसिंह ने झूमते हुए कहा।

"आज एक देहाती शिकार हाथ लगा है साहब! चौदह वर्ष की अवस्था, पक्का रंग, कीर जैसी नासिका और बिम्बाफल जैसे अधर...उफ् ! कोतवाल साहब ! सचमुच आज का माल चखने लायक है।" श्यामसरोज ने वर्णनात्मक ढङ्ग से कहा।

"अच्छा !...तो लाओ, जल्दी करो।" कोतवाल कुर्सी पर से उठकर बोला।

उसके उठते ही सब अपने-अपने प्याले छोड़कर उठ खड़े हुए।

कोठरी के दक्षिण ओर एक दरवाजा था। जिनमें इस समय एक मजबूत ताला बन्द था। अब्दुल्ला ने उसे खोला।

भीतर एक क्षीण प्रकाश की रेखा दीख पड़ी।

साथ ही किसी के सिसक-सिसक कर रोने की आवाज भी आई। अब्दुल्ला भीतर घुस गया।

एक कोठरी थी, जिसमें छोटा-सा लैम्प अपनी क्षीण

ज्योति से यहाँ का घना अन्धकार दूर करने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहा था, और पास ही चारपाई पर एक बालिका अधलेटी-सी पड़ी थी।

वह फफक-फफक कर रो रही थी।

उसके अंग प्रत्यंग से यौवन फूट रहा था।

उसके गालों पर आँसुओं की बूंदें ऐसी मालूम हो रही थीं, मानों स्वच्छ आकाश के तारे।

रूप की छटा ऐसी...।
शशि की निशा शिरानी,
उग आया यौवन दिनकर।
छवि विलसित तन-सरवर में,
दो सरसिज लसे मनोहर॥

इतनी मोहक थी वह सुन्दरता। वह अब्दुल्ला को देखते ही खड़ी होकर जोरों से रोने लगी, परन्तु अब्दुल्ला का ध्यान उसके रोने की ओर नहीं गया।

वह तो उसका रूप देखकर पहले से ही मदोन्मत्त हो रहा था।

आते ही उसने उसके कपोलों का चुम्बन कर उसे गोद में उठा लिया और कोठरी से बाहर निकल गया।

"छोड़ दो...छोड़ दो मुझे!..." रोती हुई वह युवती छटपटाने लगी—"मुझ पर रहम करो...रहम करो।"

मगर उस खूँखार दरिन्दे के पास रहम नाम की कोई चीज थी ही नहीं जैसे।

बाहर बिछे पलँग पर उस बेचारी को पटक दिया उसने। युवती ने उठना चाहा कि तभी दूसरे ने उसकी नाक से एक शीशी लगा दी। वह अचेत हो गई।

इसके बाद जो-जो दुष्कृत्य किये उन दुष्टों ने, वह

हमारी लेखन-शक्ति के बाहर की बात है। बारी-बारी से सभी दुष्टों ने अपनी कामलिप्सा पूरी की।

अपना काम पूर्णतया: समाप्त कर चुकने पर सब निशाचर अपनी क्रूरता की हँसी हँसते हुए एक ओर खड़े हो गए।

युवती का लहूलुहान शरीर पलंग पर पड़ा रहा।

"अब आखिरी नियम का पालन होना चाहिए। इसे कहीं ले जाकर बेचना ठीक नहीं, क्योंकि इधर कुछ आवश्यक काम आ पड़े हैं..."

कहकर कोतवाल ने अपना रिवाल्वर निकाल लिया।

धायँ! धायँ!!

दो बार आवाज हुई...और देखते ही देखते महाविनाशकारी रिवाल्वर ने उस बालिका के प्राण ले लिये।

वह नि:सहाय बालिका दो बोल भी न कह सकी।

एक निर्दोष कली खिलने के पहले ही रौंद कर नष्ट कर दी गई।

इस भीषण दुष्कृत्य को देखकर कमरे की दीवारें हाहाकार कर उठीं।

कोतवाल ने मेज में लगे किसी खटके को दबाया। 'खट' की आवाज हुई और फर्श की पटिया सरककर कुछ दूर हो गई। उस जगह एक छोटा-सा चौकोर गड्ढा दिखाई पड़ने लगा, जो कुएँ से भी अधिक गहरा था। वह मृत लड़की उसी गड्ढे में डाल दी गई और उसका मुँह यन्त्र द्वारा फिर बन्द कर दिया गया।

आज की कार्रवाई समाप्त हो गई।

सब अपने-अपने घरों को जाने के लिए दरवाजे की ओर बढ़े परन्तु एकाएक ठिठक कर खड़े हो गये।

दरवाजे के बीचोबीच इनका रास्ता रोके वही भीम-

काय नरपिशाच, वही कालाभूत खड़ा था।

उसका रंग अँधेरी रात्रि से भी काला था। उसके शरीर पर बड़े-बड़े बाल थे।

एकदम नग्न था वह।

उसके खूँखार पंजों में पैने नाखून थे।

उसकी आँखें अंगारे की तरह जल रही थीं। उसके बड़े-बड़े दाँत जबड़े से बाहर निकले हुए भयंकर हँसी हँस रहे थे।

● ●

जिन दिनों की यह घटना है, उस समय मिर्जापुर में एक कालेज था, उसका नाम था नेटिव कालेज।

मुकलेरी बाजार के पास उसकी इमारत थी परन्तु समय परिवर्तन ने उसका नामोनिशान मिटा डाला। अब तो उसके विषय में लोग भूल गये हैं।

उस समय वह उत्तर प्रदेश के प्रधान विद्यालयों में गिना जाता था। इसी के कारण उन दिनों मिर्जापुर का बड़ा नाम था।

नेटिव कालेज के प्रिन्सिपल थे मिस्टर एन० भल्ला।

वे बड़े ही मिलनसार, हँसमुख तथा मनस्वी थे।

कालेज कम्पाउण्ड के भीतर ही एक सुन्दर बँगला बना हुआ था, उसी में वे अपनी पत्नी तथा पुत्र के साथ रहा करते थे। उनका कुत्ता टेनी बड़ा ही समझदार था।

कालेज के 'साइन्स प्रोफेसर' (विज्ञानाचार्य) थे मि० गुप्ता।

वे जगत के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक (Scientist) कहे जाते थे क्योंकि उन्होंने कई ऐसी चीजों का आविष्कार किया था कि कलाकोविद, पाश्चात्य वैज्ञानिक गण भी दङ्ग रह जाते थे।

मिस्टर भल्ला और मिस्टर गुप्ता में खूब पटती थी। दोनों आचार्य एक-दूसरे को जी-जान से चाहते थे।

मिस्टर भल्ला का समझदार कुत्ता टेनी भी मिस्टर गुप्ता से बहुत हिल-मिल गया था।

× × ×

आधी रात का समय।

अँधेरे का अन्धेर मचा हुआ है। समग्र संसार स्वप्न में विचरण कर रहा है, परन्तु मिस्टर भल्ला की आँखों में नींद नहीं है।

वे अपने बाहरी कमरे में मेज के पास बैठे किसी गहरी चिन्ता में निमग्न हैं। किसी विपत्ति की आशंका से उनका मन रह-रहकर उद्विग्न हो उठता है।

कभी-कभी वह दीर्घ श्वाँस ले उठकर खड़े हो जाते हैं। पुनः बैठ जाते और कुछ लिखने लगते हैं।

यह क्रम घण्टों से जारी है।

एकाएक उन्होंने अपना फाउण्टेनपेन निकाला और एक कागज पर कुछ लिखने लगे।

कमरे का दरवाजा भिड़काया हुआ था, परन्तु भीतर साँकल नहीं लगी थी। उनकी पत्नी कोठे पर पड़ी हुई मुर्दों से बाजी लगा रही थीं।

उनकी नासिका द्वारा 'घर्र-घर्र' की आवाज साफ सुनाई पड़ रही थी।

मिस्टर भल्ला सर झुकाये लिखने में तल्लीन थे।

तभी—

उनके पास से कोई काली-सी शक्ल तेजी के साथ भागती हुई, कमरे से बाहर निकल गई।

उन्होंने उठकर अपने चारों ओर देखा, परन्तु कोई न दिखाई पड़ा।

उनका हृदय धड़कने लगा।

फिर भी उन्होंने धैर्य रखा और यह सोचकर अपने हृदय को शान्त करने का प्रयत्न करने लगे कि वह केवल भ्रम था। परन्तु उनका हृदय किसी प्रकार न मानता था, क्योंकि दरवाजे के बन्द पल्ले इस समय खुले थे और उन्हें देखकर यह पक्का विश्वास हो जाता था कि कोई मनुष्य अवश्य ही भीतर से बाहर को गया है।

उन्होंने ध्यान लगाकर सुना।

कहीं से किसी प्रकार की आवाज नहीं आ रही थी।

हवा निश्चल थी और प्रकृति निस्तब्ध—

तभी किसी बात की याद आते ही मिस्टर भल्ला का कलेजा काँप उठा।

उनके पत्नी की नाक अब नहीं बोल रही थी, यह जानकर उन्हें महान आश्चर्य हुआ, क्योंकि वे जब कभी थोड़ी देर के लिए भी चारपाई पर पड़ जाती थीं तो उनकी नाक जोरों से बोलने लगती थी।

क्या कारण है कि उनकी नाक बोलनी बन्द हो गई? ...उनके मन ने स्वयं से प्रश्न किया।

उनके मन में किसी अनिष्ठ की आशंका हुई।

वे ऊपर जाने के लिए सीढ़ियों की ओर लपके और कुछ ही पलों में उस कमरे में जा पहुँचे, जिसमें उनकी पत्नी सोया करती थीं।

देखा! पलंग सूनी थी, कमरे में कोई न था।

सारा सामान तितर-बितर पड़ा था।

मि० भल्ला का कलेजा धक्-धक् करने लगा। अपनी सुन्दर पत्नी के लिए वे व्यग्र हो उठे।

एकाएक उन्हें ख्याल आया कि परिस्थिति बड़ी विकट है और इस समय उनके पास कोई हथियार भी नहीं है।

यह ख्याल आते ही वे अपनी पिस्तौल लेने नीचे की ओर लपके।

जिस कमरे में बैठे वे लिख रहे थे, उसी में उनकी पिस्तौल रखी थी।

उन्होंने जल्दी-जल्दी आलमारी खोल डाली, पर यह देखकर उनके आश्चर्य की सीमा न रही कि पिस्तौल वहाँ नहीं थी।

उसी समय, उसी क्षण, उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि मानो कोई भयंकर काला आदमी, चुपके से आकर उनके पीछे खड़ा हो गया है।

वे तेजी से पीछे की ओर घूमे और साथ ही उनके मुँह से भय की चीख निकल पड़ी। एक भीमकाय भूत, एक दीर्घाकार नरपिशाच उनके सामने खड़ा था और उन्हें अपने लाल-लाल नेत्रों से घूर रहा था।

मिस्टर भल्ला ने जोरों से पुकारा—"टेनी !"

उन्हें विश्वास था, ऐसे विकट समय में उनका कुत्ता ही उनकी रक्षा कर सकेगा।

'टेनी' बाहर ही बैठा था। अपने मालिक की पुकार सुनकर तुरन्त ही अन्दर आ गया और एक अपरिचित शैतान को देखकर जोरों से भूँक उठा; परन्तु पास आते ही उसे उस शैतान की गन्ध कुछ परिचित-सी मालूम हुई तो वह उसके पास आकर इस तरह पूँछ हिलाने लगा,

मानो उस शैतान का उससे बहुत दिनों का परिचय हो।

उस शैतान ने उस पर जाने क्या जादू कर दिया था?

अपने कुत्ते का व्यवहार देखकर मिस्टर भल्ला के पैर लड़खड़ाने लगे। शरीर काँपने लगा और दूसरे ही क्षण वे बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े।

अपने मालिक को गिरता हुआ देखकर 'टेनी' ने उस पिशाच की ओर देखा, मानो पूछ रहा हो कि मालिक को क्या हो गया ?

उसके भाव को समझकर उस नरपिशाच ने कहा—"टेनी !...मैं तुम्हारे मालिक को ले जा रहा हूँ। तुम बाहर बैठो और बँगले की रखवाली करो।"

आश्चर्य !

टेनी ने उसकी बात बखूबी समझ ली और पूँछ हिलाता हुआ कमरे के बाहर निकल गया।

उसके बाहर जाते ही पिशाच ने मिस्टर भल्ला को उठाकर अपनी पीठ पर लाद लिया। एकाएक धड़ाके की आवाज हुई और उस जगह, जहाँ वह नरपिशाच खड़ा था—बहुत-सा धुआँ पैदा हो गया। वह नरपिशाच उसी धूम्रराशि में ढँप गया।

थोड़ी ही देर बाद धुआँ उड़ गया, परन्तु अब नरपिशाच न जाने कहाँ लुप्त हो गया था।

चन्द्रमा को बादलों ने ढँक लिया था।

धीमी-धीमी बूंदें भी पड़ने लगी थीं। 'टेनी' मकान के चारों ओर घूम-घूमकर पहरा देने लगा।

ज़रा-सा पत्ता खड़कने पर भी वह भूँक उठता।

● ●

अपने उसी भयंकर कमरे में वह काला भूत एक कुर्सी पर बैठा है।

उसके सामने ही दूसरी कुर्सी पर ब्रजेश भी आसीन है। इसके अतिरिक्त दो कुर्सियाँ खाली पड़ी हैं। कमरे में गहरे नीले रंग की रोशनी हो रही है।

फर्श पर खून फैला हुआ है और एक खूंटी पर एक नङ्गी लाश टँगी है, जिसके शरीर पर कई घाव हैं।

उन घावों से बेहद खून निकल रहा है।

थोड़ी देर बाद उस नरपिशाच ने ब्रजेश से कहा—"ब्रजेश! आज मैं तुम्हारे कालेज के प्रिन्सिपल मि० भल्ला को अपने यहाँ उठा लाया हूँ!..."

"किसलिए?..." ब्रजेश ने साश्चर्य पूछा।

"उन्हें भी उस भयङ्कर कमेटी 'गोल्डेन गैंग' की करतूतें दिखाकर, उनके मेम्बरों का परिचय कराकर उनका विनाश करने के लिए बाध्य करूँगा। वे उस सामने वाली कोठरी में बन्द हैं, तुम जाओ और उन्हें सम्मानपूर्वक यहाँ ले आओ...मगर जाने से पहले एक नकाब से मुँह ढँक लो ताकि वे तुम्हें पहचान न सकें..." उस नरपिशाच ने मेघ गर्जन-सदृश आवाज में कहा, जिससे वह कमरा गूँज उठा।

ब्रजेश ने अपने मुँह पर नकाब डाल ली और तब वह उस भयानक कमरे से बाहर निकल गया।

थोड़ी ही देर में जब वह पुनः उस कमरे में घुसा तो उसके साथ दुबले-पतले मि० भल्ला भी थे।

उस नरपिशाच पर दृष्टि पड़ते ही वे काँपने लगे। परन्तु उस भयंकर भूत ने उन्हें सांत्वना दी और बैठ जाने के लिए कहा।

मि० भल्ला काँपते हुए कुर्सी पर बैठ गये और इस

बात की प्रतीक्षा करने लगे कि देखें अब भाग्य में क्या लिखा है—जीवन या मृत्यु।

"मिस्टर भल्ला!" नरपिशाच कहने लगा—"तुम भारतवर्ष के एक प्रमुख कालेज के प्रिन्सिपल हो। कालेज की उन्नति तथा अवनति, नामवरी तथा बदनामी सब तुम पर ही अवलम्बित है ...कालेज की अवनति तुम्हारी अवनति कही जायगी और उन्नति तुम्हारी उन्नति, क्यों?..."

"अवश्य..." मि० भल्ला ने साहसपूर्वक उत्तर दिया।

उस नरपिशाच का सदय व्यवहार देख मि० भल्ला भूल गए कि एक भयानक स्थान में किसी खूँख्वार व्यक्ति से बातचीत कर रहे हैं।

"तो बताओ, यदि किसी भारी षड्यन्त्र का भण्डाफोड़ हो और उसके विधायक तुम्हारे कालेज के कुछ विद्यार्थी निकलें तो तुम्हारी और कालेज की क्या दशा होगी?" नरपिशाच ने कोमलता से प्रश्न किया।

"परन्तु आपका इससे मतलब क्या है, आप कौन हैं..." मि० भल्ला ने व्यग्रतापूर्वक पूछा।

उनकी यह बात सुनकर वह पिशाच भयंकर रूप से हँस पड़ा और फिर बोला—"मैं काला भूत हूँ, भयंकर पिशाच हूँ...मैं सब जगह पहुँच सकता हूँ...दुष्टों का नाश करने के लिए ही मेरा जन्म हुआ है..."

अपनी चेतनावस्था में मैं सब कुछ कर सकता हूँ, प्रलय मचा सकता हूँ, परन्तु सो जाने पर मेरी सारी शक्तियों का ह्रास हो जाता है...हाँ? तो मैं अपना अभिप्राय तुम पर प्रकट करता हूँ—

तुम्हारे कालेज में पाँच ऐसे विद्यार्थी हैं, जो बी० ए० क्लास में लगातार पाँच-छः वर्षों से फेल हो रहे हैं...वे

हैं, युसुफ, करीम, अब्दुल्ला, रज्जन और श्यामसरोज। तुम्हें इन बदकार लड़कों को 'रिस्टिकेट' कर देना चाहिए, क्योंकि ये ही उस भयंकर कमेटी 'गोल्डेन गैंग' के कर्णधार हैं, जिससे समग्र मिर्जापुर थर्रा उठा है..."

वज्रपात कर देने वाली इस बात को सुनकर मि० भल्ला के मुँह से आवाज न निकली। वे अवाक् हो गए।

पिशाच ने पुनः कहना प्रारम्भ किया—"अगर किसी दिन 'गोल्डेन गैंग' का भण्डाफोड़ हुआ और जनता को यह मालूम हो गया कि इस गिरोह के कर्ता-धर्ता तुम्हारे ही कालेज के कुछ विद्यार्थी हैं तो तुम कहीं के न रहोगे।

कोई भी तुम्हारे कालेज में अपने लड़कों को न भेजेगा और कुछ ही दिनों में तुम्हारा और तुम्हारे कालेज का अस्तित्व समाप्त हो जायगा। इसलिए तुम्हें उचित है कि तुम कल ही इन लड़कों को कालेज से निकाल दो।"

"ऐसा ही होगा!..." मिस्टर भल्ला ने एक दीर्घ श्वाँस लेकर कहा।

"मैं तुमसे अपनी बातें कह चुका हूँ, अब कुछ नहीं कहना है!" पिशाच ने कहा—"हाँ! अभी एक काम है। चलो तुम्हें उस 'गोल्डेन गैंग' का कुकृत्य दिखा लाऊँ, ताकि तुम उन दुष्टों के अमानुषिक अत्याचार देखकर और भी क्रोधित हो उठो और शीघ्र ही उनका विनाश कर यश के भागी बनो।"

"मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूँ, परन्तु पहले यह बताओ कि मेरी स्त्री कहाँ है..." मिस्टर भल्ला ने कहा।

"तुम्हारी स्त्री?..." नरपिशाच आश्चर्य से बोला—"तुम्हारा मतलब क्या है मिस्टर भल्ला?..."

"मेरा मतलब यह है कि मेरी स्त्री मुझसे पहले ही

गायब हो चुकी थी और जहाँ तक मैं समझता हूँ—यह तुम्हारी ही कार्रवाई है ...''

"नहीं मिस्टर भल्ला !...मैं तुम्हारी स्त्री के विषय में नहीं जानता। यदि वह वस्तुतः गायब हो गई है तो यह किसी भीषण षडयन्त्र का परिणाम है। मैं तुम्हारे बँगले पर उस समय पहुँचा था, जब तुम आलमारी में न जाने क्या खोज रहे थे...'' पिशाच ने कहा।

"तब ?..." मिस्टर भल्ला शोक-भरी आवाज में बोले।

अभी तक तो वे यही समझते थे कि उनकी स्त्री भी उसी नरपिशाच के कब्जे में है, परन्तु यह जानकर कि वह यहाँ नहीं है, वे व्याकुल हो उठे।

उनके नेत्रों के समक्ष अँधेरा छा गया।

उनकी यह अवस्था उस भयानक नरपिशाच से छिपी न रही। वह तुरन्त ही समझ गया कि मिस्टर भल्ला अपनी पत्नी के लिए दुखित हो उठे हैं।

उन्हें आश्वासन देता हुआ वह बोला—"मिस्टर भल्ला ! तुम अधिक शोक न करो। मैं तुम्हारी स्त्री का पता अवश्य लगाऊँगा !"

नरपिशाच उठ खड़ा हुआ तथा मिस्टर भल्ला और नकाबपोश ब्रजेश को लिवाकर बाहर आया।

सड़क पर पहुँचकर उसने उन दोनों को अपने कन्धों पर बैठा लिया और तीव्र गति से आँधी की तरह दौड़ता हुआ बासलीगञ्ज मुहल्ले की ओर बढ़ा।

वह रेलगाड़ी की तरह दौड़ता चला जा रहा था।

हवा के ठण्डे झोंके मिस्टर भल्ला के शरीर में तीर की तरह चुभ रहे थे।

अन्त में उसने तीन मील का रास्ता मिनटों में तय कर डाला और पलक मारते भर में वह उस भुतहे मकान के सामने पहुँच गया, जिसमें गोल्डेन गैंग के भीषण दुष्कृत्य हुआ करते थे।

● ●

अँधेरा छाया था चारों ओर।

सड़क सुनसान थी। केवल उस भुतहे मकान से एक प्रकार की बहुत ही महीन आवाज आ रही थी।

मकान के सब दरवाजे मजबूती के साथ बन्द थे, परन्तु उस परम तेजस्वी नरपिशाच को इसकी क्या चिंता थी? वह ब्रजेश और मि० भल्ला को अपने चौड़े कन्धे पर बिठाये, मकान के दरवाजे के सामने जा खड़ा हुआ और कुछ बड़बड़ाने लगा।

देखते-देखते वह मजबूत दरवाजा, बिना आवाज के अपने आप ही खुल गया।

नरपिशाच निःशंक उन दोनों को लिए भीतर घुसा और कितने ही दरवाजे पार कर चुकने के पश्चात् उस कमरे के सन्निकट आ गया, जिसमें इस समय गिरोह की कार्यवाहियाँ हो रही थीं।

भीतर तीव्र प्रकाश था।

दरवाजे पर एक जल्लाद हाथ में नंगी तलवार लिए पहरा दे रहा था।

नरपिशाच उसके सामने जाकर खड़ा हो गया।

एकाएक अपने सामने एक भयंकर काला भूत को देखकर वह जल्लाद काँप उठा।

उसने चिल्लाना चाहा, परन्तु उसी समय उसके गले को किसी जबरदस्त पंजे ने जकड़ लिया और दूसरे ही क्षण उस जल्लाद की आँखें बाहर निकलने लगीं।

उसका निर्जीव शरीर जमीन पर गिर पड़ा।

नरपिशाच वहीं दरवाजे के पास छिपकर मि० भल्ला को अन्दर का कृत्य दिखाने लगा।

मिस्टर भल्ला ने देखा—

एक चारपाई थी, जिस पर कोई नग्न स्त्री बँधी थी। उसके शरीर पर कोई वस्त्र न था और वह निःसहाय पड़ी हुई गहरी साँस ले रही थी।

उस चारपाई को घेरे छः पुरुष खड़े थे, जिन पर दृष्टि पड़ते ही मि० भल्ला चौंक पड़े।

उन्होंने देखा कि उनमें से पाँच तो उनके कालेज के विद्यार्थी ही थे, और छठवाँ था शहर कोतवाल। यह देख कर उनकी आँखों में खून उतर आया, फिर भी वे चुप रहे।

युसुफ, करीम आदि को इस बात का जरा भी ध्यान न था कि तीन मनुष्य छिपेहुए उनका यह दुराचार देख रहे हैं। वे तो अपनी धुन में मस्त थे।

एक क्षण चुप रह कोतवाल ने, उस स्त्री को सम्बोधित करके कहा—"गेनाऊ! अब तुझे क्या सजा दी जाय?..."

गेनाऊ 'गोल्डेन गैंग' की प्रमुख कुटनी थी। वही इन दुष्टों के लिए नित्य नई-नई लड़कियाँ फँसाकर लाती थी।

उसकी उम्र कोई विशेष न थी।

उसकी गढ़न बड़ी आकर्षक थी और वह दस-बीस सुन्दरियों में खड़ी होने लायक थी।

जब कभी इन दुष्टों को कोई 'शिकार' न मिलता तो उस समय गेनाऊ से ही काम चल जाता था। आजएकाएक

इन दुष्टों ने उसे एक फकीर से बातें करते देख लिया था।

उन्हें शक हो गया था कि वह फकीर जासूस है और गेनाऊ जाकर उससे मिल गई है।

बस इसी शक पर उन सबों ने उसकी दुर्गति करनी प्रारम्भ कर दी और उससे पूछने लगे कि उसने उस फकीर से क्या बातें की ?

किन्तु गेनाऊ कोई भी बात न बता सकी।

वह बराबर यह कहती रही कि वह जासूस नहीं बल्कि भिखमंगा फकीर था। परन्तु उन दुष्टों को इस बात पर विश्वास न हुआ।

"गेनाऊ !...अब भी बता दे, तूने उस फकीर से क्या बातें की ?..." कोतवाल ने एक बार पुनः कहा।

"सरकार !...उससे आप लोगों के विषय की मैंने कोई बात नहीं की। वह पहले मेरा रिश्तेदार था, अब फकीर हो गया है ..." गेनाऊ ने विनीत भाव से कहा।

"झूठी कहीं की..." कोतवाल तड़प उठा—"अब्दुल्ला! यह ऐसे नहीं बतायेगी ! इसके लिये सजा नम्बर तीन का प्रबन्ध करो।"

अब्दुल्ला सब समझ गया।

उसने पास की आलमारी से एक डुश (*Dush*) निकाला जैसा प्रायः दवाखानों में पेट साफ करने के लिये रहता है।

उस डुस में एक बड़ी-सी रबर की नली लगी हुई थी।

अब्दुल्ला ने डुश में पानी भरा और उसमें कोई सफेद-सी चीज मिलाई, तत्पश्चात् उसने उसकी नली गेनाऊ की जनेन्द्रिय में चढ़ा दी।

डुश का पानी तेजी से उसके गर्भाशय में जाने लगा।

उसे असह्य पीड़ा होने लगी।

ऐसा मालूम हुआ मानों उसके पेट में हजारों बिच्छू डंक मार रहे हों।

उसने अपने हाथ-पैर फटकारने की कोशिश की, परन्तु असफल रही। उसकी जनेन्द्रिय से रक्त की धारा बह निकली। इतने पर भी उन दुष्टों को दया न आई।

गेनाऊ चुप हो रही, वह बेहोश हो चुकी थी।

उसको बेहोश देखकर कोतवाल ने डुश हटा लेने की आज्ञा दी।

डुश हटा लेने के बाद उसने अपना रिवाल्वर निकाल लिया और बेहोश गेनाऊ को लक्ष्य करके घोड़ा दबा दिया।

धायँ ! धायँ !!

रिवाल्वर ने अग्नि समूह उगल दिया। गेनाऊ की जीवन लीला समाप्त हो गई। उसे अपने पापों का प्रतिफल मिल गया, क्योंकि आज तक उसने सैकड़ों निरपराध बालिकाओं को गोल्डेन गैंग के हाथों सौंप उनका कौमार्य लूटे जाने में सहायता की थी।

उन दुष्टों का अनाचार देखकर दिशाएँ शून्य हो गईं।

वायु काँप उठी, वह महाशक्तिशाली नरपिशाच भी यह दुष्कृत्य न देख सका।

उसने अपने दोनों नेत्र मूँद लिए।

उसके कन्धों पर बैठे ब्रजेश तथा मि० भल्ला का भी बुरा हाल था।

ब्रजेश का मुँह आँसुओं से भींगा था और मि० भल्ला क्रोध की साँसें ले रहे थे।

एकाएक मि० भल्ला उत्तेजित हो उठे।

उन दुष्टों का वह वीभत्स दुराचार अब उनसे अधिक नहीं देखा गया। उनका शरीर काँपने लगा। वे नर-

पिशाच के कन्धों पर से कूद पड़े और तेजी से उस ओर बढ़े, जहाँ वे दुष्ट खड़े हुये क्रूरता की हँसी हँस रहे थे।

परन्तु वह नरपिशाच यह नहीं चाहता था कि मि० भल्ला का वहाँ होना वे दुष्ट जान जान जायँ। अतः उसने लपककर मि० भल्ला को पकड़ लिया और बलपूर्वक उठाकर अपने कन्धों पर लाद लिया।

इस घटना को घटते केवल कुछ ही क्षण लगे और इतने आहिस्ते से यह सब बातें हो गईं कि उन दुष्टों को इसका कुछ भी पता न लगा, परन्तु एकाएक अब्दुल्ला की आँखें इस ओर पड़ ही गईं।

वह धूर्त मि० भल्ला को तुरन्त पहचान लिया। उसने अपने साथियों को इशारा किया।

सब दरवाजे की ओर तेजी से लपके, परन्तु वहाँ पर कोई भी दीख न पड़ा।

यहाँ तक कि सारा मकान खोजने पर भी उन्हें किसी मनुष्य की आहट न मिली।

हाँ, दरवाजे के पास ही उन्हें जल्लाद की लाश अवश्य दिखाई पड़ी। लाश के गले पर अँगुलियों के काले दाग पड़े हुए थे।

"यह केवल तुम्हारा भ्रम था..." कोतवाल ने अब्दुल्ला से कहा।

"नहीं कोतवाल साहब ! मेरी आँखें धोखा नहीं दे सकतीं। कल जिस भूत को हमलोगों ने दरवाजे के बीचमें खड़े देखा था, वही आज भी यहाँ मौजूद था। उसके बायें कंधे पर एक मनुष्य नकाब लगाये बैठा था और दायें पर मि० भल्ला थे..." अब्दुल्ला ने हाँफते हुए कहा।

"तब तो प्रिंसिपल साहब हमारा भेद जान गये।

अब हमारी खैर नहीं, हम सब कुत्तों की मौत मारे जायेंगे।" कहकर श्यामसरोज धम्म ने पृथ्वी पर बैठ गया।

"घबड़ाते क्यों हो..." कोतवाल ने सान्त्वना देते हुए कहा—"अभी बचने के उपाय बहुत से हैं। जहाँ तक मेरा खयाल है, अभी तक मि० भल्ला ही हमारी गुप्त बातें जान पाये हैं, तो क्यों न उन्हें छल से पकड़वाकर स्वर्ग की झाँकी दिखा दी जाये। ऐसा करने से हमारा भेद छिपा ही रह जायेगा।"

"बस, बस...यही ठीक रहेगा।" सबने एक स्वर से कहा।

"तुम लोग भय से कालेज जाना मत बन्द करना, नहीं तो शायद कुछ आफत आये। क्योंकि मि० भल्ला तुम लोगों को कालेज में न देखकर, तुम्हें पकड़वाने के लिये पुलिस की सहायता लेंगे और मेरी भी पोल खुल जायगी। अतः तुम लोग कल निर्भय होकर कालेज जाना। तुम पर कोई भी विपत्ति नहीं आयेगी, क्योंकि कल दिन के बारह बजते ही मैं मि० भल्ला को फँसाने का प्रबन्ध कर लूँगा।...

और यदि सफल हो सका, तब तुम लोगों का भय हमेशा के लिये जाता रहेगा। जब तक मैं हूँ, तुम लोगों पर कोई हाथ नहीं उठा सकता।" कोतवाल ने कहा।

गर्व से उस धूर्त की आँखें चमक उठीं।

●

नेटिव कालेज विद्यार्थियों से ठसाठस भरा है। दस बजे दिन का समय है।

पढ़ाई जोरों से हो रही है।

प्रत्येक कक्षा में शिक्षकगण अपनी शिक्षणकला द्वारा, विद्यार्थियों के हृदयों को विद्या से भर देने का प्रयत्न कर रहे हैं।

कालेज के प्रिन्सिपल मि० भल्ला इस समय अपने प्राइवेट आफिस में बैठे साइन्स के प्रोफेसर मि० गुप्ता से कुछ गुप्त परामर्श कर रहे हैं।

मिस्टर गुप्ता के चेहरे से महान् आश्चर्य प्रकट हो रहा है मानों वे कोई भयावनी चर्चा सुन रहे हों।

कमरे के दरवाजे पर चिक पड़ी है।

बिजली का पंखा अपनी पूरी तेजी से घूम रहा है। उसकी हवा से मिस्टर भल्ला के मुलायम बाल इधर-उधर उड़ रहे हैं।

"हाँ, तो फिर क्या हुआ?..." मिस्टर गुप्ता ने शीघ्रता से पूछा।

"इसके बाद उस नरपिशाच ने हम दोनों, यानी मुझे और उस नकाबपोश को अपने बलिष्ठ कन्धों पर बिठा लिया और तेजी से भाग चला..." थोड़ी ही देर में वह वासलीगंज के भुतहे मकान के सामने पहुँच गया।

तुरन्त ही मकान का दरवाजा अपने आप खुल गया और वह जन्तु हमें कन्धों पर लादे हुए ही भीतर घुस गया। भीतर जाकर हमने उस क्रान्तिकारी—'गोल्डेन गैङ्ग' की जो-जो कारवाइयाँ देखी कि सन्न हो गये..."

इसके बाद मिस्टर भल्ला ने उन अद्भुत बातों का वर्णन करना प्रारम्भ कर दिया, जिसे उन्होंने रात को उस नरपिशाच के साथ जाकर देखा था। अपना वर्णन समाप्त कर चुकने पर उन्होंने दीर्घ श्वाँस ली और पुनः कहना प्रारम्भ किया—

"आप सुनकर घोर आश्चर्य करेंगे मि० गुप्ता!

'गोल्डेन गैंग' के सदस्य कोई सैकड़ों की संख्या में नहीं हैं।

वे केवल छः हैं और उनमें से पाँच तो हमारे ही कालेज के विद्यार्थी हैं, जिनका नाम युसुफ, करीम, अब्दुल्ला, रज्जन और श्याम सरोज हैं, और छठवें हैं इस शहर के कोतवाल रतन सिंह !..."

"अच्छा !..." मिस्टर गुप्ता ने आश्चर्य से कहा।

"सोचिये! कि जब रक्षक ही हमारे भक्षक हैं तो फिर किस प्रकार 'गोल्डेन गैंग' का भण्डाफोड़ हो ? लेकिन अब इस गुप्त कमेटी के अन्तिम दिन आ पहुँचे हैं, क्योंकि वह महाशक्तिशाली नरपिशाच बिना उसे छिन्न-भिन्न किये न छोड़ेगा। इसलिए यह उचित है कि हम उक्त बदमाशों को कालेज से 'रिस्टिकेट' कर दें, अन्यथा भेद खुलने पर हम लोग कहीं के भी नहीं रहेंगे।"

"उस नरपिशाच ने इस विषय में आपको क्या आदेश दिया है ?" मिस्टर गुप्ता ने पूछा।

"उसकी भी यही राय है, जो मेरी..." मि० भल्ला बोले—"और मैं ऐसा ही करूँगा। क्योंकि ऐसा न करने से वह रुष्ट हो जाएगा और उसकी रुष्टता मेरे लिए भयङ्कर होगी। वह महाशक्तिशाली है, जो कुछ चाहे कर सकता है..."

"अच्छा ?..." मिस्टर गुप्ता के मुँह से निकला।

×

विद्यार्थियों में बिजली की तरह यह खबर फैल गई कि आज युसुफ, करीम, रज्जन, अब्दुल्ला और श्याम सरोज पाँचों युवक कालेज से 'रिस्टिकेट' कर दिये जायेंगे।

सभी विद्यार्थियों को महान आश्चर्य हुआ। कालेज भर में घोर आतङ्क छा गया।

कालेज के हाल में बेन्चें लगाई गईं। एक ओर प्रोफेसरों के बैठने के लिए कुर्सियाँ भी रखीं गईं।

दो बजा।

धीरे-धीरे सब दर्जों के विद्यार्थी आने लगे।

युसुफ, करीम तथा ब्रजेशकुमार आदि सभी आये।

थोड़ी ही देर में वह वृहत् हाल लड़कों से ठसाठस भर गया।

घोर सन्नाटा था! किसी प्रकार का शब्द सुनाई नहीं पड़ रहा था। प्रोफेसर अपनी कुर्सियों पर बैठे थे, परन्तु मिस्टर भल्ला हाल में अभी तक नहीं आये थे।

वे अपने प्राइवेट आफिस में ही थे।

थोड़ी देर बाद उन्होंने मंथर गति से हाल में प्रवेश किया।

प्रोफेसर तथा विद्यार्थीगण उठ खड़े हुए और उनका अभिवादन कर पुनः बैठ गए।

मि० भल्ला अपनी जगह पर बैठे।

तड़तड़-तड़तड़ हथेलियाँ बज उठीं।

थोड़ी ही देर बाद मि० भल्ला उठे और धीमी किन्तु दृढ़ आवाज में बोले—"बालकों!...तुम लोग आश्चर्य कर रहे होगे कि आज युसुफ, करीम आदि क्यों 'रिस्टिकेट' किये जा रहे हैं।"

मि० भल्ला कुछ और कहना चाहते थे कि उसी समय एक सूटेट-बूटेट, घनी मूछों वाले जेण्टिल मैन ने हाल में प्रवेश किया और बिना किसी से कुछ कहे ही उस ओर बढ़ा, जहाँ मि० भल्ला खड़े थे।

उस जेण्टिलमैन के चौड़े शरीर तथा क्रूर आँखों को देख कर यह मालूम होता था कि वह महा पराक्रमी है।

वह सीधे मि० भल्ला के पास जा खड़ा हुआ।

उनसे बिना कुछ कहे ही उसने उनका हाथ पकड़ लिया।

मि० भल्ला ने उसकी ओर देखा परन्तु पहचान न सके। इतने में ही उस जेण्टिल मैन ने दुबले-पतले मि० भल्ला को उठाकर अपनी पीठ पर लाद लिया और तेजी के साथ हाल के बाहर निकल गया।

यह आश्चर्यमयी घटना इतनी जल्दी घट गई कि किसी से कुछ कहते न बन पड़ा, परन्तु मि० गुप्ता तेजी के साथ उस विचित्र जेण्टिलमैन की ओर लपके।

जब वे सड़क के किनारे आये तो उन्हें कोई भी न दीख पड़ा।

हाँ, कुछ दूर पर एक मोटरकार दिखाई दी, जो तेजी के साथ भागी जा रही थी।

मि० गुप्ता के मुँह से निकला—"ओह! मि० भल्ला गये।"

कालेज भर में हाहाकार मच गया!

क्या विद्यार्थी, क्या प्रोफेसर सभी के नेत्र आँसुओं से भींग गये।

सभी मि० भल्ला को हृदय से चाहते थे।

उनका सदोचित् व्यवहार तथा उनकी मीठी आवाज ने सबको मोहित कर रखा था।

सभी उनके लिए व्यग्र हो उठे।

× × ×

उस विचित्र जेन्टिलमैन ने दुबले-पतले मि० भल्ला को अपनी पीठ पर लाद लिया और तेजी से हाल के बाहर निकल गया।

एक क्षण में ही वह सड़क पर आ गया।

वहाँ उसकी चमचमाती हुई मोटर खड़ी थी। उसने

मि० भल्ला को मोटर के अन्दर फेंक दिया और मोटर स्टार्ट कर दी।

मोटर शहर के बाहर—कसेरा के इनारा की ओर तेजी से भाग चली।

कसेरा के इनारा के पास पहुँचकर उसने उसे दक्षिण की ओर घुमा दिया।

अब मोटर राबर्ट्सगञ्ज रोड पर दौड़ने लगी। एक क्षण में ही उसने बरकछा बाजार बहुत पीछे छोड़ दिया और पहाड़ की चढ़ाई पर पहुँच गई!

चढ़ाई पर पहुँचकर भी उस जेन्टिलमैन ने अपनी मोटर न रोकी।

वह पहाड़ पर जाना चाहता था।

थोड़ी ही देर में मोटर पहाड़ पर पहुँच गई। पहाड़ के ऊपर सड़क बहुत साफ थी।

कहीं कूड़े-करकट का नाम-निशान नहीं था।

मोटर तेजी से भागी चली जा रही थी।

मिस्टर भल्ला चुपचाप, डर से काँपते हुए, बदहवास से भीतर बैठे थे।

लगभग दो मील चले आने के बाद उस जेण्टिलमैन को अपने पीछे आती हुई किसी मोटर साइकिल की 'फट् फट्' सुनाई पड़ी। उसने खिड़की से सर निकालकर पीछे की ओर देखा, वहाँ पर उसे जो दृश्य दिखाई दिया वह भयभीत कर देने के लिए काफी था।

देखा उसने कि एक मोटर साइकिल तेजी के साथ, उसकी मोटर का पीछा करती हुई चली आ रही है, परन्तु उस पर कोई सवार नहीं बैठा था।

वह अपने आप ही बिना किसी सवार के दौड़ी चली आ रही थी।

जेण्टिलमैन भयभीत हो उठा।

उसने मोटर की चाल तेज कर दी।

अब वह ८० मील प्रति घंटा की चाल से दौड़ने लगी।

जेण्टिलमैन ने एक बार पुनः सर निकाल कर अपने पीछे की ओर देखा, अब तो उसे और भी आश्चर्य हुआ।

इस बार मोटर साइकिल पर एक भयानक काला भूत बैठा था।

उसका काला देव जैसा रूप था। उसकी आँखें दिन में भी अङ्गारे की तरह जल रही थीं।

वास्तव में उस मोटर का इस प्रकार पीछा करने वाला वही भयंकर नरपिशाच था।

उसे न मालूम किस तरह मि० भल्ला के उड़ाये जाने की खबर मिल गई थी और वह जेण्टिलमैन का पीछा करके उसी समय मि० भल्ला को छुड़ा लेना चाहता था।

जेण्टिलमैन की मोटर तेजी के साथ जाने लगी और वह काला नरपिशाच भी उसी तेजी के साथ उसका पीछा करने लगा।

जब जेण्टिलमैन ने देखा कि नरपिशाच अब बहुत नजदीक आ पहुँचा है, तो उसने अपनी पिस्तौल निकाल ली और पिशाच को लक्ष्य करके घोड़ा दबा दिया।

धायँ-धायँ की आवाज से वन-प्रान्त गूँज उठा, परन्तु यह देखकर उस जेंटिलमैन के आश्चर्य की सीमा न रही कि उसके फायर का उस नरपिशाच पर जरा भी असर न हुआ।

अब नरपिशाच की मोटर साइकिल केवल सौ गज की दूरी पर रह गई थी।

जेण्टिलमैन अपनी पूरी ताकत से मोटर चला रहा था,

परन्तु नरपिशाच की चाल उससे तेज थी।

इस समय जेंटिलमैन बड़ी ही दुविधा में पड़ा हुआ था। थोड़ी ही देर में उसने पुनः पिस्तौल निकाली और पिशाच की मोटर साइकिल की अगली पहिया को ताक कर फायर कर दिया।

गोली सनसनाती हुई अगली पहिया के टायर में घुस गई।

'पड़ाक' की आवाज के साथ वह पहिया पंचर हो गई।

एक और फायर हुआ और मोटर साइकिल की पिछली पहिया भी पंचर हो गई ! इतने में ही एक गोली और आई और वह पेट्रोल की टंकी में घुस गई।

पेट्रोल 'भक-भक' कर जलने लगा।

पिशाच की मोटर साइकिल में आग लग गई।

नरपिशाच कूदकर अलग हट गया। इस समय बड़ी ही विकट परिस्थिति हो गई थी जिससे वह प्रलयंकर नरपिशाच किकर्त्तव्य-विमूढ़ हो गया था।

उसने सामने दृष्टि उठाई।

जेंटिलमैन की मोटर कोसों आगे थी।

अब वह उसका पीछा करने में सर्वथा असमर्थ था, क्योंकि उसकी मोटर साइकिल एकदम नष्ट हो गई थी।

अपनी इस असमर्थता पर उसे बड़ा ही क्रोध आया। उसने जोरों से दाँत किटकिटाये और एक भयंकर गर्जना दूर तक फैल गई।

जेंटिलमैन की मोटर आँखों से ओझल हो गई थी।

रस्सियों में जकड़े मि० भल्ला भूमि पर लुढ़काये हुए हैं। सामने ही 'गोल्डेन गैंग' के छहो धूर्त खड़े हैं। सबों की आँखें चढ़ी हुई हैं और वे मि० भल्ला को इस प्रकार घूरकर देख रहे हैं, मानो उन्हें कच्चा ही चबा जायेंगे।

"क्यों बे कुत्ते !...किस बल पर तूने हमलोगों से बैर बाँधा था..." कोतवाल ने मि० भल्ला को जोरों से अपने जूते की ठोकर मारकर कहा।

प्रिंसिपल साहब के कोमल अंगों से रक्त की धारा बह निकली।

फिर भी उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा– "भाइयों ! यह न समझना कि मुझे मारकर तुमलोग निश्चिन्त हो जाओगे। याद रखो, अब शीघ्र ही तुम्हारा अन्त होगा ! ... तुम लोगों के अत्याचार से पृथ्वी अकुला उठी है, आकाश थर्रा रहा है। मनुष्य व्याकुल हो गये हैं। अब तुम लोगों का विनाश समीप है—

किधर है ध्यान तेरा, तू कहाँ है,
सुन हातिब से इबरत का बयां है।
जरा खौफे खुदा से काँप इन्सां,
जमीं नीचे है, ऊपर आसमां है॥

"चुप रह, पाजी कहीं का ! सर्प के बिल में हाथ डालते हुए भय न लगा तुझे, अब आया है हमें उपदेश देने।" कोतवाल ने आँखें लाल कर कहा–"अब्दुल्ला !...

अपने प्रिंसिपल साहब के लिये सजा नम्बर सात की व्यवस्था करो..."

सजा नम्बर सात का प्रबन्ध होने लगा।

मि० भल्ला छत से उल्टे लटका दिये गये।

उनका सर नीचे और पैर ऊपर की ओर था।

कोतवाल हाथ में छुरा लेकर मि० भल्ला की पीठ के पास खड़ा हो गया! उसने छुरे की नोंक उनकी पीठ पर लगाई और खर्र से दो इंच गहरी एक लाइन खींच दी।

रक्त की धारा बह निकली।

मि० भल्ला असह्य पीड़ा से चीख उठे।

"कैसा लग रहा है प्रिंसिपल साहब?..." युसुफ ने हँसकर पूछा।

"अभी थोड़ी कसर है।" कोतवाल ने कहा तथा उनकी पीठ पर एक लाइन और खींच दी।

"ठहर तो जाओ कमबख्तों!..." एकाएक कठोर गर्जन सुनाई पड़ा।

सबों ने चौंककर दरवाजे की ओर देखा।

बीच दरवाजे में वहीं भयंकर नरपिशाच खड़ा था और उसके कन्धे पर एक नकाबपोश बैठा था।

उस नकाबपोश के हाथ में एक भयानक पिस्तौल दिखाई पड़ रही थी।

"खबरदार! जहाँ हो, वहीं खड़े रहो। जरा भी आगे बढ़ने की कोशिश न करना, नहीं तो कुत्ते की मौत मारे जाओगे।" उस नकाबपोश ने पुनः गरज कर कहा।

छहों धूर्त भय से थर-थर काँपने लगे।

किसी से कुछ करते न बन पड़ा।

सब चित्रलिखित से खड़े रहे। वह नरपिशाच उस नकाबपोश को लिये ही उस ओर बढ़ा, जहाँ मि० भल्ला

उल्टे टँगे कराह रहे थे ।

नकाबपोश ने मि० भल्ला के बन्धन खोल दिये और उन्हें यत्नपूर्वक उस नरपिशाच के कन्धों पर बैठा लिया।

नरपिशाच दोनों को उठाये कमरे से बाहर हो गया।

इस विचित्र घटना को देखकर कोतवाल आदि के ज्ञान-तन्तु क्षीण हो गये । उनमें अब इतना साहस न रह गया कि वे उस दुर्दान्त भूत का पीछा कर सकें ।

थोड़ी देर में कोतवाल आदि के होश ठिकाने हुए ।

कोतवाल दाँत पीसकर बोला—"ओह ! यह नर-पिशाच तो और भी आफत का पुतला है। इसे बिना अपने मार्ग से दूर हटाये हम लोग सुख की नींद नहीं सो सकते । और वह बदमाश नकाबपोश कौन हो सकता है? अवश्य ह वही ब्रजेश था, क्योंकि उसकी आवाज ब्रजेश से एकदम मिलती थी । ओह ! बदमाश ब्रजेश ने ही हमें धोखा दिया ।"

"अब क्या होगा ?..." अब्दुल्ला ने हाँफते हुए पूछा ।

"घबड़ाओ नहीं, मैं सब प्रबन्ध कर लूँगा । सबसे पहले ब्रजेश को पकड़कर यहाँ लाया जाय और उसे डरा-धमकाकर उस पिशाच का भेद पूछा जाय ... जहाँ तक मुझे विश्वास है ब्रजेश अवश्य ही उस नरपिशाच का पता जानता है..." कोतवाल ने कहा ।

"और हमें उसकी बहन प्रेमलता को भी कब्जे में कर लेना चाहिये । ऐसा करने से वह और जल्दी सब बातें बता देगा ।" अब्दुल्ला ने कहा ।

"अब हमलोगों को कालेज भी न जाना चाहिये और न तो शहर में ही दिखाई पड़ना चाहिये ।" युसुफ ने कहा ।

"हाँ, अब तुम लोग कुछ दिनों छिपे तौर से रहो ।" बोला कोतवाल ।

"और आप ?..." युसुफ ने पूछा।

"मैं कोतवाली में ही रहूँगा। मुझे कौन बोलनेवाला है..." कोतवाल ने कहा।

× × ×

उसी भयंकर कमरे में नरपिशाच बैठा है।

सामने ही मिस्टर भल्ला एक चारपाई पर लेटे हैं। उनकी पीठ पर पट्टी बँधी है।

चारपाई के पैताने एक नकाबपोश बैठा है।

"मिस्टर भल्ला ! अब तुम 'गोल्डेन गैंग' के फेर में न पड़ो। अन्यथा तुम पर कोई सांघातिक संकट आये बिना न रहेगा...आज ही देखो ! यदि मैं न पहुँचा होता तो तुम उन दुष्टों द्वारा निर्दयतापूर्वक मार डाले जाते।"

"पिशाचराज ! मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ हूँ। आज तुम्हीं ने मेरी रक्षा की, अन्यथा मैं उन अन्यायियों के पंजे से कभी न छूट पाता।" मिस्टर भल्ला शिथिल आवाज में बोले।

अधिक रक्त निकल जाने के कारण वे शक्तिहीन हो गय थे।

"अब तुम जाकर अपने कालेज का कार्य करो। मैं स्वयं ही उन दुष्टों को नाश करूँगा। अब वे छात्र भी कालेज में पढ़ने नहीं आयेंगे !..." नर पिशाच ने कहा।

उसके अङ्ग फड़क उठे।

होली का दिन है।

चारों ओर रङ्ग, गुलाल, अबीर उड़ रहा है।

कहीं कबीर की ध्वनि सुनाई पड़ती है तो कहीं नवयुवतियों की सुरीली, मनमोहक ध्वनि कर्ण-कुहरों में रस घोलती है, कहती हैं वे कि–"फागुन में बाबा देवर लागैं"

जड़-चेतन, जीव-जन्तु सभी पर मस्ती छायी हुई है।

ब्रजेश कुमार की बैठक में मित्रगण जुटे हैं।

अनेक प्रकार के पकवान उड़ रहे हैं।

हँसी-मजाक से कमरे का वातावरण अत्यन्त मुग्धकारी है। सभी गुलाल और रङ्ग से सराबोर हैं। सन्ध्या हो गई है। चन्द्रदेव व्योम-मार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं।

दिशायें स्वच्छ हैं।

दिन-सा प्रकाश दिग-दिगान्तरों में फैल रहा है।

ठण्ढी हवा के झोंके समस्त वातावरण में आनन्द वर्षा कर रहे हैं।

ब्रजेश के एक भावुक मित्र पर इस सुखद समय का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।

कहा उसने—"यार !...मौसम तो बड़ा सुहावना है, चलो गङ्गाजी में बोटिङ्ग की जाय..."

"हाँ-हाँ, बात तो चौचक है।" दूसरे रंगीले ने कहा।

तीसरे ने भी समर्थन किया।

बोल पड़ा वह–"बहुत ठीक कहा रमेश तुमने ! चलो, वहाँ ऐसे समय बहुत आनन्द आयेगा...चाँदनी रात और गंगा मैया की गोद में नौका विहार स्वर्गीय आनंद देगा..."

सब उठ खड़े हुए।

इतने में ही ब्रजेश की चतुर्दश वर्षीया बहन प्रेमलता भी उधर आ निकली।

सब लोगों को जाते देखकर बोली—"कहाँ जा रहे हो भैया ! इतनी रात को ?..."

"बोटिङ्ग के लिए।" ब्रजेश ने कहा।

"सच भैया !...सच...मैं भी चलूँगी !" खुश होकर प्रेमलता आग्रह करती हुई बोली।

ब्रजेश की तरह वह भी पश्चिमी सभ्यता (Western civilization) में रँगी हुई थी। अपने भैया के साथ खेल-कूद में निसंकोच भाग लेना, उसके लिए कोई नई बात नहीं थी।

अन्त में प्रेमलता भी चल पड़ी।

सब लोग पतितपावनी गंगा के तट पर आये और एक नाव किराये पर ली।

उस पर सभी जा बैठे। नाव मन्थर गति से चुनार की ओर बढ़ी।

कचहरी घाट के निकट पहुँचते ही, इन लोगों को अपने पीछे कुछ दूर पर पानी में छप्-छप् का शब्द सुनाई पड़ा।

सब लोगों ने उधर दृष्टि फेंकी।

देखा ! एक भारी नाव तेजी के साथ इन्हीं लोगों की ओर बढ़ी आ रही थी।

प्रेमलता का कलेजा न जाने क्यों घबड़ा उठा। ब्रजेश को भी अनिष्ट की आशंका हो आई ? उसने माझी से नाव को और तेज ले चलने को कहा।

आज्ञा पाते ही माँझी जोरों से डाँड़ चलाने लगा।

उसका बिशाल काला शरीर और भी झूमने लगा। नाव लहरों को चीरती हुई तीव्र गति से अग्रसर हुई। परन्तु इनके पीछे आने वाली नाव की चाल बहुत तेज थी। वह पलक मारते भर में वह उस नाव की बगल में आ गई। इन लोगों ने देखा कि पन्द्रह नकाबपोश उस नाव पर बैठे हैं। सबों के हाथ में एक-एक पिस्तौल थी।

नकाबपोशों की भयानक आँखें नकाब के अन्दर से चमक रही थीं।

उनकी नाव भी विचित्र प्रकार की थी। उसका आकार-प्रकार मछली का-सा था और उसमें कुछ अनूठे पेच पुरजे भी लगे थे।

ज्योंही वह विचित्र नाव ब्रजेश की नाव के बगल में पहुँची उस पर के सब नकाबपोश इस नाव पर कूद आये और ब्रजेश के साथियों से उलझ पड़े।

खूब गुत्थम-गुत्था होने लगी।

विकट परिस्थिति देखकर ब्रजेश ने अपनी पिस्तौल निकाल ली, परन्तु वह अभी लक्ष्य भी नहीं कर पाया था कि किसी ने पीछे से, उसके मुँह पर कपड़ा डालकर कस लिया।

उस कपड़े से 'क्लोरोफार्म' की तेज गन्ध आ रही थी, जिसने शीघ्र ही ब्रजेश को चेतन हीन कर दिया।

वह लुढ़क कर नाव में गिर पड़ा।

उसको इस प्रकार बेहोश कर देने वाला एक नकाबपोश ही था।

उसने बेहोश ब्रजेश को उठाकर अपनी नाव में फेंक दिया, तत्पश्चात् उस ओर बढ़ा, जिधर सहमी हुई प्रेमलता नाव के एक छोर पर बैठी थी।

उस बलिष्ठ नकाबपोश ने उस कोमल बालिका को

अपनी गोद में उठा लिया और उसको लिए अपनी नाव पर कूद गया।

उसके कूदते ही उसके साथी भी लड़ाई करना छोड़कर शीघ्रता से अपनी नाव में कूद पड़े। नाव तेजी से आगे बढ़ी।

ब्रजेश के मित्रगण इस आकस्मिक विपत्ति से घबड़ा उठे थे और उनमें से कई आहत भी हो गये थे, फिर भी उन्होंने अपने मित्र की सहायता करना धर्म समझा।

उन्होंने माझी को तेजी से उस नाव का पीछा करने को कहा, परन्तु इतने में ही 'धायँ-धायँ' का शब्द हुआ और आगे वाली नाव पर से एक गोली सर्राती हुई आकर माझी के सीने में घुस गई।

वह पानी में लुढ़क पड़ा।

ब्रजेश के मित्र हताश हो गये।

उन्हें मालूम हो गया कि ब्रजेश की सहायता नहीं कर सकते। विधाता उनके प्रतिकूल हैं।

ब्रजेश की बेहोशी दूर हुई, उसने अपने को एक विचित्र ही स्थान में पाया।

वह इस स्थान से सर्वथा अपरिचित था। वह काफी बड़ा कमरा था, अनगढ़े पत्थरों से बना हुआ।

शायद किसी तहखानें का कमरा रहा हो। उस कमरे में अधिक सामान न था। केवल एक मेज और छः-सात कुर्सियाँ तथा एक सुन्दर चारपाई थी, जो एक कोने में बिछी थी।

ब्रजेश इस समय एक खंभे से रस्सियों द्वारा बँधा था। वह अपने शरीर का कोई अंग न हिला सकता था।

उसके सामने ही छः नकाबपोश खड़े थे और अपने भयंकर नेत्रों से उसकी ओर घूर रहे थे।

उसने शीघ्र ही पहचान लिया कि ये वही नकाबपोश हैं, जिन्होंने उसकी नाव पर आक्रमण किया था।

थोड़ी ही देर बाद उनमें से एक नकाबपोश, जो उन सबों का सरदार मालूम होता था, जरा-सा आगे बढ़ा।

निकट आकर कड़ी आवाज में बोला—"ब्रजेश कुमार! हम लोग तुम्हें जरा भी कष्ट नहीं देना चाहते, केवल यही जानना चाहते हैं कि वह भयानक नरपिशाच कहाँ रहता है?...बस, हमारे इसी प्रश्न का उत्तर दे देने से तुम मुक्त कर दिये जाओगे..."

ब्रजेश को सरदार की आवाज कुछ परिचित-सी मालूम हुई।

फिर भी वह उसे पहचान न सका।

उसने कहा—"जब तक यह न मालूम हो जाए कि तुम लोग कौन हो, मैं तुम्हारी एक भी बात का उत्तर नहीं दे सकता।"

"तुम हमें जानना चाहते हो?..." सरदार ने ब्रजेश के ऊपर एक प्रश्नसूचक दृष्टि डालकर कहा—"ब्रजेश! हम लोग तुम्हारे वही मित्रगण हैं।...केवल उस भयानक नरपिशाच के पंजों से बचने के लिए ही हमने यह स्थान बदला हैं, क्योंकि उसे हमारी गुप्त कमेटी के स्थान का पता मालूम हो गया था, शायद तुम्हारे ही जरिये।"

इतना कहकर सरदार ने अपनी नकाब दूर कर दी।

उसके पाँचों साथियों ने भी वैसा ही किया।

ब्रजेश का अनुमान सत्य निकला। वे दुष्ट उसी 'गोल्डेन गैंग' के कर्णधार कोतवाल, युसुफ तथा करीम आदि थे।

इन अत्याचारियों पर दृष्टि पड़ते ही ब्रजेश व्याकुल हो उठा, क्योंकि वह जानता था बेचारी प्रेमलता भी अवश्य इनके हाथ पड़ी होगी और ये दुष्ट बिना उसे नष्ट किये न छोड़ेंगे।

"ब्रजेश!...उस नरपिशाच का पता बता दो, ताकि हम अपने मार्ग का कण्टक सदा के लिए दूर कर सकें।" कहा कोतवाल ने।

"कोतवाल साहब!..."ब्रजेश अडिग स्वर में बोला—"यह आप ही ऐसे दगाबाजों का काम है, जो व्यर्थ में सरकार को परेशान किया करते हैं।...भला बेचारी सरकार को क्या मालूम कि जिसे उसने शासन का ठेकेदार बनाकर अपनी प्यारी प्रजा की भलाई करने के लिए भेजा है, वही नमकहराम कोतवाल उसके साथ दगा कर रहा है तथा उसकी प्रजा की सुखशांति लूटकर उन्हें कलपा रहा है।

कोतवाल साहब! जिस दिन सरकार को आपके कुत्सित कार्यों का पता चल जायगा, आप दर-दर के भिखारी बना दिये जाएँगे..."

"शट अप...ब्रजेश!" कोतवाल चिल्ला उठा?

"कोतवाल साहब!...मुझे भलीभाँति मालूम हो गया है आप लोगों का अन्त समीप है।" ब्रजेश कहता रहा।

कोतवाल ने बीच में ही कहा—"मुँह सँभालकर बात करो ब्रजेश! सीधी तरह उस नरपिशाच का पता बता दो नहीं तो अच्छा नहीं होगा, हमें तुम्हारे साथ निर्दयता का व्यवहार करना पड़ेगा। हो सकता है तुम्हारी आँखें निकाल ली जायँ और तुम्हें तड़पा-तड़पा कर मार डाला जाय। कुत्ते की मौत मरने से बेहतर होगा कि सब उगल दो...

तुम उस नरपिशाच की सहायता पाने की आशा न करो क्योंकि अब वह लाख सर पटकने पर भी हमें ढूँढ़

नहीं सकेगा। हम इस समय मिर्जापुर से सत्रह मील दूर हैं, यह लालगञ्ज है।"

"लालगंज !..." सुनकर चौंक पड़ा ब्रजेश।

वातावरण में थोड़ी देर मौनता रही।

"बोलो, तुम हमारी बातों का उत्तर देते हो या नहीं ?" कोतवाल ने पुनः पूछा।

"नहीं !..." ब्रजेश दृढ़ स्वर में बोला—"मैं उस नर-पिशाच के प्रति गद्दारी नहीं कर सकता।"

सुनकर कोतवाल मारे क्रोध के थर-थर काँपने लगा।

उसकी भौंहें संकुचित हो गईं। उसके होंठ आवेश से फड़क उठे।

उसने कड़क कर अब्दुल्ला से कहा—"अब्दुल्ला !... सजा नम्बर नौ का प्रबन्ध करो !..."

"बहुत अच्छा !..."

कहकर पास ही की एक कोठरी में अब्दुल्ला घुस गया और दूसरे ही क्षण वह उसमें से तेजी से निकला तो उसकी गोद में छटपटाती हुई बेचारी प्रेमलता थी।

उसने प्रेमलता को चारपाई पर पटक दिया।

ब्रजेश की दृष्टि प्रेमलता पर पड़ी।

उसके नेत्रों से अग्नि समूह फूट पड़ना चाहता था।

परन्तु वह विवश था, क्या करता ?

"अब भी समय है ब्रजेश !..." कोतवाल ने ब्रजेश को समझाते हुए कहा—"बता दो उस नरपिशाच का पता ! नहीं तो तुम्हारी बहन वस्त्रहीन कर इस चारपाई में बाँध दी जायगी और हम छहो आदमी, अपनी काम-लिप्सा पूर्ण करने के लिए उसके ऊपर टूट पड़ेंगे।"

"नहीं !...नहीं!! नहीं!!!..." ब्रजेश ने आवेश में काँपकर कहा—"मैं तुम दुष्टों को उस नरपिशाच का पता नहीं बता

सकता ! ... याद रखो, यदि तुमने प्रेमलता को जरा भी हाथ लगाया तो तुम्हारी खैर नहीं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह नरपिशाच हमारी रक्षा के लिए अवश्य ही आता होगा।"

"हा हा हा..." कोतवाल ने भयङ्कर अट्टहास किया और गरज कर बोला—"अब्दुल्ला !...गो आन..."

अब्दुल्ला आगे बढ़ा और प्रेमलता के वस्त्र अलग करके उसे चारपाई से बाँध दिया।

भय से प्रेमलता काँपने लगी।

ब्रजेश ने अपने नेत्र बन्द कर लिए।

उसकी आँखें अपनी बहन पर किये जाते अत्याचार को न देख सकीं।

वह मन ही मन ईश्वर से उस नरपिशाच के शीघ्र आने की प्रार्थना करने लगा।

कोतवाल तेजी के साथ चारपाई की ओर झपटा।

प्रेमलता के मुख से एक भयानक चीख निकली।

वह जोरों से चिल्ला उठी—"भैया !...बचाओ !... मुझे बचा लो भैया !"

उफ् !

ब्रजेश का हृदय डोल उठा।

क्या करे वह ?

उन नरपिशाच का पता बता दे वह ?

बहन की इज्जत के लिए वह क्या करे ?

मगर इसके बाद भी यह दुष्ट उसकी बहन को छोड़ देंगे इसका भरोसा नहीं।

उसका हृदय हाहाकार कर उठा।

नाड़ियों का रक्त जम गया। नहीं! नहीं! वह इन

दुष्टों को कुछ भी नहीं बता सकता।

वह पिंजरे में फँसे बाघ की भाँति छटपटाने लगा। उसके मुख से केवल इतना ही निकला–"हा ! भगवान!..."

और उसका सर लटक गया।

× × ×

प्रेमलता के ऊपर कोतवाल झपटा तो सही।

परन्तु अभी वह उसके पास पहुँच भी न पाया था कि उसी समय एक विकट अट्टहास सुनाई पड़ा।

एकाएक उस कमरे की बत्तियाँ बुझ गईं।

घोर अन्धकार छा गया, कोतवाल आदि की घिग्घी बँध गई।

वे समझ गये कि वह भयंकर नरपिशाच आ पहुँचा। भय से काँपते हुए सभी अपनी जगह पर खड़े रहे।

थोड़ी देर बाद बत्तियाँ पुनः जल उठीं।

तीव्र प्रकाश से वह कमरा जगमगा उठा, परन्तु कोतवाल आदि को यह देखकर महान आश्चर्य हुआ कि प्रेमलता अब वहाँ नहीं है, केवल ब्रजेश बेहोशी की अवस्था में खम्भे से बँधा है।

"वह क्या हो गई ?..." कोतवाल ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा।

"ओह, यह अवश्य ही उस नरपिशाच का काम है। बिना उसके और कौन यह दुर्दान्त साहस कर सकता है। ओफ ! इस पाजी के मारे तो और भी नाकोंदम है।" अब्दुल्ला ने हाँफते हुए कहा।

"परन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि वह पिशाच केवल

प्रेमलता को ही क्यों ले गया ?...ब्रजेश को क्यों छोड़ दिया ?..."

"शायद भूल गया हो ?..."

"खैर, ब्रजेश को अपने हाथ से निकल जाने देना ठीक नहीं होगा। अभी इसे दुःख देकर उस प्रलयकारी का पता पूछना है !...ले चलो, इसी अवस्था में मोटर में रख दो। मैं इसे कोतवाली ले चलूंगा और वहीं गुप्त रीति से रखूंगा। यहाँ रखने से इसके निकल जाने का डर है !..." कोतवाल ने कहा।

छहो आदमी उठ खड़े हुए।

अब्दुल्ला ने बेहोश ब्रजेश को खम्भे से खोलकर अपनी पीठ पर लाद लिया और सब लोग मकान के बाहर आये।

बाहर घोर निस्तब्धता थी।

लालगञ्ज कस्बे के निवासी प्रगाढ़ निद्रा का आनन्द ले रहे थे। अँधियारी ने अपनी चादर पूर्ण रूप से फैला रखी थी।

दरवाजे के पास ही आड़ में चमचमाती हुई मोटर खड़ी थी। उसी में बेहोश ब्रजेश को रख दिया गया। वे छहो दुष्ट भी उसी पर जा बैठे।

कोतवाल ने मोटर स्टार्ट कर दी।

वह नीरव रजनी में सायँ-सायँ करती हुई, अविरल गति से शहर की ओर दौड़ चली।

शहर वहाँ से सत्रह मील पर था।

× × ×

जब प्रेमलता पर कोतवाल झपटा तो उसे एक अट्टहास सुनाई पड़ा। साथ ही वहाँ की बत्तियाँ बुझ गईं।

अन्धकार होते ही किसी ने प्रेमलता को अपनी गोद में उठा लिया हो जैसे।

भय से वह बेहोश हो गई।

कुछ देर पश्चात् जब जरा होश आया तो उसने महसूस किया—जैसे कोई उसे कन्धे पर पेट के बल रखे उड़ा जा रहा है।

थोड़ी देर बाद उसे एक पलंग पर लिटा दिया गया।

प्रेमलता ने कुछ होश में, कुछ बेहोशी में देखा—एक भयानक दानव जैसी आकृति उसे पलंग पर लिटाकर बाहर जा रही थी।

डर के मारे वह पुनः बेहोश हो गई।

जाने कितनी देर बाद होश आया।

उस समय कमरा प्रकाश से जगमग हो रहा था।

आँखें खोलकर उसने चारों ओर देखा, सबसे पहले उसका ध्यान अपने शरीर पर गया। उस पर एक चादर पड़ी थी, उसके भीतर वह विवस्त्र लेटी थी। शर्म से लाल हो उठी वह।

तभी उसे एक ओर अपने कपड़े रखे दिखाई दिये।

उसके निकट एक कागज रखा था। लिखा था उस पर—"प्रेमलता, अपने वस्त्र पहन कर बाहर कमरे में आ जाओ। डरना नहीं, अब तुम सुरक्षित हो।"

'काला भूत'

कालाभूत का नाम पढ़कर वह चौंक पड़ी।

इस विचित्र जीव के विषय में वह ब्रजेश से कई बार सुन चुकी थी। उसे यह विश्वास हो गया था कि वह नरपिशाच अवश्य ही कोई देवता है, जो किसी श्राप के कारण इस भयानक योनि में उत्पन्न हुआ है।

बाहर कमरे में वह भयानक नरपिशाच प्रेमलता का इन्तजार करता कुर्सी पर बैठा था।

प्रेमलता कपड़े बदलकर बाहर आ गई।

कुर्सी पर बैठे पिशाच की शक्ल देखकर वह डरी, कि तभी कालाभूत ने सर उठाया।

लाल आँखों से उसने प्रेमलता की ओर देखा।

प्रेमलता के शरीर में कँपकँपी दौड़ गई।

उसे काँपते देख कालाभूत हँस उठा, भयानक अट्टहास।

"हा हा हा..."

"तुम कौन हो?..." हँसी रुकते ही प्रेमलता हकलाकर बोली।

"डरो नहीं बच्ची!...अब तुम बेफिक्र यहाँ आकर बैठो, मैं कालाभूत हूँ..."

"मुझे तुम्हारी सूरत से डर लगता है।" भयत्रस्त प्रेमलता बोली।

"तुम्हें अपना दिल निडर करना ही पड़ेगा। मैं अपनी शक्ल से मजबूर हूँ, मगर क्या करूँ। ईश्वर ने मुझे ऐसा ही बनाकर लोगों का उद्धार करने और पापियों को दण्ड देने के लिए यहाँ भेजा है...तुम निश्चिन्त होकर इस कुर्सी पर बैठ जाओ..."

प्रेमलता सहमती हुई वहाँ आकर बैठ गयी।

धीरे-धीरे उसका भय दूर होने लगा।

"वे सब शैतान कौन थे, जहाँ से आपने मुझे छुड़ाया?..." पूछा उसने।

"वे सब 'गोल्डेन गैंग' के सदस्य थे!" पिशाच ने कहा।

"ऐं..." प्रेमलता जैसे आकाश से गिरी, बोली—"तो क्या वे सभी उस भयानक गिरोह के आदमी थे···हे भगवान!..."

"हाँ!..." नरपिशाच ने हँसकर कहा—"वे सब उसी गिरोह के दुष्ट थे। यदि मैं थोड़ी ही देर बाद पहुँचता तो अनर्थ हो जाता..."

"मगर ब्रजेश भैया कहाँ हैं ?..." पूछा उसने ।

"उसे मैं जल्दी में छुड़ा नहीं सका। उस समय तो मुझे तुम्हारी ही अधिक चिन्ता थी, क्योंकि जरा-भी देर होते ही तुम नष्ट-भ्रष्ट कर दी जाती।" कहा उस नरपिशाच ने।

"तो अब ब्रजेश भैया का क्या होगा ?..." प्रेमलता चिन्तातुर होकर बोली ।

"मैं ब्रजेश को छुड़ाने के लिए कोतवाली की ओर जा रहा हूँ। क्योंकि मुझे विश्वास है, वे दुष्ट उसे उस मकान में कदापि न रखेंगे...

वे उसे अवश्य ही कोतवाली में ले आयेंगे। मैं बहुत ही तेज चाल से आया हूँ, सिर्फ बीस मिनट में सत्रह मील का रास्ता तय किया है...

अब मैं जा रहा हूँ। कोतवाली के पास खड़े होकर उनके आने की प्रतीक्षा करूँगा। उनकी मोटर आते ही मैं उन पर टूट पड़ूँगा...

तुम कमरे में जाकर आराम करो। डर लगे तो दरवाजा बन्द कर लो। खाने-पीने के लिए वहीं आलमारी में फल आदि रखे हैं।"

कहकर नरपिशाच जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।

● ●

समग्र संसार सुखद निद्राभूत हो स्वप्न-जगत में विचरण कर रहा है।

आधी रात का समय होने पर भी, शहर कोतवाली की नकली टावर 'क्लाक' ने अभी केवल साढ़े पाँच ही बजाये हैं। कोतवाली का सिपाही हाथ में सङ्गीन लिये

फाटक पर टहल-टहल कर पहरा दे रहा है।

एकाएक दूर से आती हुई किसी मोटर के 'हार्न' की आवाज सुनाई पड़ी।

वह सिपाही और भी सावधानी से पहरा देने लगा।

थोड़ी के देर बाद मोटर का हार्न कुछ नजदीक सुनाई पड़ा और वह कोतवाली की ही ओर आती दीख पड़ी। उसकी तीव्र ज्योति से सड़क चमचमाने लगी। सिपाही अपनी संगीन सँभाल कर खड़ा हो गया।

मोटर कोतवाली के सामने आकर रुकी और उस पर से कोतवाल रतनसिंह और उनके अन्य पाँचों हिमायती उतरे।

सिपाही ने कोतवाल को सैल्यूट किया और एक बगल हटकर खड़ा हो गया।

इस समय मोटर में ब्रजेश चेतनाहीन पड़ा हुआ था। वे दुष्ट अभी सीधे लालगञ्ज से चले आ रहे थे। उन्होंने अपनी कमेटी का स्थान बदल दिया था। अब कमेटी लालगञ्ज में ही हुआ करती थी।

कोतवाल ने सिपाही से कहा—"कुञ्ज! मोटर में एक बेहोश आदमी है। उसे लेकर हमारे साथ आओ! जल्दी करो, आवाज न हो।"

सिपाही आगे बढ़ा परन्तु एकाएक ठिठककर खड़ा हो गया।

शायद उसे कोई डरावनी चीज दीख पड़ी थी। कोतवाल ने डांटकर सिपाही को पुनः आगे बढ़ने के लिए कहा, परन्तु उसी समय किसी ने, अपने वज्र सदृश हाथों से कोतवाल की गर्दन पकड़ ली और उसे ऊपर उठाकर, पुनः जमीन पर गिरा दिया।

गिरते ही कोतवाल उठ खड़ा हुआ।

उसने देखा कि वही महाबलशाली कालाभूत, वही पराक्रमी नरपिशाच्च उसके सामने खड़ा हुआ, अपने विकराल नेत्रों से उसकी ओर घूर रहा था।

कोतवाल काँप उठा।

अपने प्रधान पर आफत आई जानकर युसूफ आदि ने काँपते हाथों अपना-अपना रिवाल्वर निकाल लिया और उस नरपिशाच को लक्ष्य करके गोली चला दी।

धायँ! धायँ! धायँ!

कई गोलियाँ उसके शरीर से जा टकराईं।

परन्तु उस भयानक भूत पर उन गोलियों का कुछ भी असर न हुआ।

उसे जरा भी व्यथा न मालूम हुई।

हाँ, उसे उन नीचों की ढिठाई पर क्रोध अवश्य आ गया। उसने एक विकट अट्टहास किया, जिससे दिशायें गूँज उठीं।

तत्पश्चात् वह अपनी कड़कती आवाज में बोला—

"दुष्टों!...तुम्हारी ये गोलियाँ मेरा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकतीं। जब तक मैं जाग रहा हूँ, तब तक तुम्हारी एक भी चाल सफल नहीं हो सकती। मैं अजर-अमर हूँ। तुमने मेरी शक्ति अभी देखी ही कहाँ!...अच्छा देखो!"

कहकर नरपिशाच ने मोटर की ओर संकेत कर कुछ बुदबुदाना प्रारम्भ किया।

मोटर में इस समय बेहोश ब्रजेश के सिवा और कोई नहीं था।

थोड़ी देर तक तो वह पिशाच यूँ ही बुदबुदाता रहा और वे दुष्ट भी चित्रलिखित से खड़े रहे।

उनका शरीर कांप रहा था।

उनका हृदय कह रहा था—'देखें ! अब क्या होता है ?'

एकाएक...।

बिना किसी के स्टार्ट किए ही मोटर में गति आ गई। वह बिना किसी ड्राइवर के ही तेजी के साथ भाग चली।

यह आश्चर्य देखकर सबों ने उस भयंकर नरपिशाच की ओर देखा।

आश्चर्य !

वहाँ कोई नहीं था।

कालाभूत गायब हो चुका था।

उसे वहाँ न पाकर आश्चर्य से उनके नेत्र फटे रह गये। सब अवाक् खड़े थे।

मोटर दूर पर अपनी पूर्ण गति से भागी जा रही थी। वे छहो धूर्त अनिमेष दृष्टि से उसकी ओर देख रहे थे।

● ●

वर्षा का आगमन हो चुका है।

हरी-हरी वनस्पतियों से बनप्रान्त आच्छादित हो रहे हैं।

ग्रीष्म की प्रचण्ड ज्वाला से दग्धित पशु-पक्षी प्रसन्नता से विचरण कर रहे हैं।

सावन का महीना है।

नर-नारी, जड़-चेतन सभी मदोन्मत्त हो उठे हैं।

जिधर देखो उधर ही रमणियों के कण्ठ-स्वरों से कजली की मदोन्मत्त कर देनेवाली पंक्तियाँ निकल रही हैं।

'टाण्डा फाल्स' (टाण्डा की दरी) पर तो इन दिनों अजब की बहार रहा करती है। अनेक यात्री सुदूर देशों से इस झरने का अवलोकन करने के लिए आते हैं।

यह झरना शहर से आठ मील की दूरी पर है।

यहाँ के बीहड़ प्रान्त की मनमोहक छटा बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।

वर्षा के दिनों में यह स्थान मिर्जापुर के रईसों का क्रीडास्थल बन जाता है। भँगेड़ी को तो यहाँ आये बिना चैन ही नहीं मिलता।

मिर्जापुर जिले में नल द्वारा पानी देने का यहीं से प्रबन्ध किया गया है।

नदी का पानी रोक कर एक बहुत ही ऊँचा बाँध बनाया गया है। इस कार्य में करोड़ों रुपये स्वाहा हो गये हैं।

यदि बाँध के सिरे पर आप खड़े होकर अपने सामने की ओर देखें, तो आपको विदित होगा कि आप समुद्र के किनारे आ गये हैं।

यह विस्तृत बाँध एक विशालकाय झील के रूप में है।

उन दिनों मिर्जापुर में 'कालका फिल्म कम्पनी' आई हुई थी।

यह अपनी फिल्म के लिए पहाड़ी सीन लेना चाहती थी। आज उसकी 'टाण्डा फाल्स' पर शूटिंग (चित्रीकरण) थी।

ब्रजेश कुमार के हृदय में उनकी कार्यप्रणाली देखने की उत्कट अभिलाषा उत्पन्न हुई। वह प्रातःकाल से ही 'टाण्डा फाल्स' पर जाने की तैयारी करने लगा।

उसने अपने साथ चलने के लिए किसी साथी की खोज की परन्तु कोई मिला नहीं, अतः अकेले ही जाने का निश्चय किया।

घड़ी ने टन-टन करके दस बजाए।

ब्रजेश ने अपनी मोटर साइकिल निकालकर 'टाण्डा-फाल्स' की ओर प्रस्थान किया।

मोटर साइकिल दक्षिण की ओर तेजी से भाग चली। ब्रजेश के रेशमी वस्त्र प्रबल वायु के झोंकों से उड़ने लगे।

'मुड़ा' चढ़ चुकने पर उसने देखा की एक मोटर बीच सड़क पर ही खड़ी है, और कोई युवती दत्तचित्त-सी उसकी मशीन का निरीक्षण कर रही है, मानों उसमें खराबी आ गई हो।

ब्रजेश ने उसके पास पहुँचकर अपनी मोटर साइकिल रोक दी।

एक आदमी को अपने पास रुकते देखकर युवती मोटर का निरीक्षण करना छोड़, ब्रजेश की ओर देखने लगी।

ब्रजेश उसका रूप-रङ्ग तथा यौवन देखकर चकित रह गया।

पन्द्रह-सोलह साल की अवस्था, पाश्चात्य पहनावा अनोखी चितवन, मदभरे नैन तथा उठी छाती—ये सब ब्रजेश को पागल कर देने के लिए काफी थे।

देखता ही रह गया वह उस हाहाकारी रूपरश्मि को!

सीना उभार पर है, जोबन उठान पर हैं।
लाखों तरह के सदमें, नन्ही-सी जान पर हैं॥

ब्रजेश पागल-सा उस युवती को एकटक देखता रहा। युवती ने भी उसे ध्यान से देखा। क्षण भर को दोनों की दृष्टि मिली।

"आप क्या चाहते हैं?..." बोली युवती।

ब्रजेश की तन्द्रा भंग हुई।

पूछा उसने—"मशीन में कुछ खराबी आ गई है क्या?"

"जी हाँ! यहाँ पहुँचते ही यह एकाएक रुक गई।" मुस्कराती हुई बोली वह।

"क्या मैं आप की कुछ सहायता कर सकता हूँ ?..." ब्रजेश ने उसकी ओर बढ़कर पूछा ।

"धन्यवाद !..." वह युवती बोली ।

ब्रजेश मोटर के कलपुर्जों से भलीभाँति परिचित था।

उसने जाँच-पड़ताल कर थोड़ी ही देर में मोटर की खराबी दूर कर दी । युवतीके आनन्द का ठिकाना न रहा।

उसके हृदय में भी ब्रजेश की मनोहारी रूप-माधुरी ने प्रभाव डाला था ।

होठों में मुस्कराकर बोली—"आपका नाम ?..."

"ब्रजेश कुमार...और आप का !..."

"कान्ता..." युवती ने अपने मदभरे नयनों से ब्रजेश पर तिरछी दृष्टि डालकर उत्तर दिया ।

ब्रजेश मन ही मन कह उठा—

मेरी बेताबि-ए-दिल पर अदा-से मुस्कराते हैं ।
कयामत करते हैं बिजली पे, वह बिजली गिराते हैं ।।

प्रकट में कुछ न कह सका ।

युवावस्था की आँधी में पड़ा हुआ ब्रजेश का दिल उस युवती के 'कटार' रूपी कटाक्ष का वार न सह सका । उसका मन हाथ से ज़ाता रहा ।

प्रेम के उन्माद ने उस पर पूर्ण अधिकार कर लिया ।

वह आगे बढ़ा ।

एक क्षण बाद ही वह युवती उसकी गोद में थी ।

युवती का सारा शरीर कँप-कँपी से भर गया । दिल में तो उसे वह आलिङ्गन मधुर लगा पर स्त्री सुलभ लज्जा के अनुसार 'न-न' करती एक ओर फिसलने लगी।

मगर ब्रजेश ने ऊसे छूटने नहीं दिया ।

"छोड़ दीजिए, कोई देख लेगा।..." घबरायी-सी वह बोली।

"कोई नहीं देखेगा, दूर तक कोई आ भी तो नहीं रहा है।"

युवती से बोला नहीं गया। मदहोश पड़ी रही वह। थोड़ी देर को उसकी पलकें मुँद गईं।

उसी समय ब्रजेश ने उसके कई चुम्बन कर डाले। युवती 'टमाटर' हो गई।

"ओह, तुम कितनी लबली हो डार्लिङ्ग ...!" ब्रजेश ने कहा।

"और तुम भी तो 'स्वीट' हो।" युवती ने किञ्चित भ्रूभङ्ग कर कहा और ब्रजेश के वक्ष में अपना मुँह छिपा लिया।

निर्जन बन-प्रान्त में इन दो प्रेमासक्त प्राणियों का सम्मिलन सचमुच ही बड़ा आनन्ददायक था। तभी सूर्य को बादलों ढँक लिया।

पास ही के बृक्ष पर से एक पपीहा बोल उठा—"पी कहाँ ?...'

थोड़ी देर बाद दोनों अलग हो गए, मानों उन्हें अपनी अवस्था का ध्यान आ गया हो। वे कुछ-कुछ लज्जित से दीख पड़ते थे।

उन्हें अपने इस इस आकस्मिक परिवर्तत पर घोर आश्चर्य हो रहा था।

अपने इस क्षणिक आवेश पर दोनों ही लज्जित हो रहे थे।

अन्त में ब्रजेश ने युवती से पूछा—"तुम कहाँ जा रही थी ?..."

"टाण्डा फाल्स पर ! कालिका फिलम कम्पनी की शूटिङ्ग देखने...और तुम !..."

"मैं भी वहीं चल रहा हूँ।..."

"सच! तो फिर चलो, साथ ही चलेंगे।"

ब्रजेश ने अपनी मोटर साइकिल मोटर पर रख दी और ड्राइवर की सीट सँभाल ली।

युवती भी उसके पास जाकर बैठ गई। मोटर तीव्र गति से अग्रसर हुई।

दोनों शीघ्र ही टाण्डा फाल्स पर पहुँच गये।

चारों ओर मनुष्यों के झुण्ड के झुण्ड दिखाई पड़ रहे थे। फाल्स पर काफी चहल-पहल थी। एक ओर से अगम जलराशि आकर पृथ्वी की गोद भर रही थी।

दर्शकों के उत्सुक नेत्र उस ओर ही लगे थे, जिधर नायक तथा नायिका, नीचे जहाँ फाल्स का पानी गिर रहा था, जलमग्न चट्टानों पर बैठ अभिनय कर रहे थे।

दर्शकों के मुख से 'वाह-वाह' निकल रहा था।

कुछ तो कह रहे थे—"भाई! अजीब जीवट के एक्टर हैं! देखो! किस बहादुरी से ऐक्टिङ्ग कर रहे हैं, अगर जरा भी झरने का उछाल बढ़ा, दोनों की जीवन लीला समाप्त।"

ब्रजेश तथा उसकी प्रेमिका कान्ता भी एक ओर खड़े होकर वह अपूर्व दृश्य देखने लगे।

डायरेक्टर, कैमरामैन आदि का कार्य-सम्पादन देखकर दोनों बहुत प्रसन्न हुये।

पाँच बजे तक शूटिंग होती रही और ब्रजेश तथा कान्ता एकाग्रचित से उसे देखते रहे। उसके बाद भीड़ क्रमशः कम होने लगी और सात बजे तक वह स्थान निर्जन हो गया।

केवल ब्रजेश तथा कान्ता रह गए।

वह स्थान जो दो घण्टा पहले सुरपुरी लगता था, अब सन्ध्या के आगमन से भाँय-भाँय करने लगा।

सियारों तथा उल्लूओं की भयंकर आवाजों से पहाड़ गूंज उठा।

संध्या ने पूर्णरूप से वहाँ अपना अधिकार कर लिया।

पूर्व दिशा से भगवान मरीचिमाली अपनी सुधामयी किरणें बिखेरते आ पहुँचे। अन्धकार से पूर्ण सारा वन-प्रान्त आलोकित हो उठा।

ऐसे सुखद समय में दो प्रेमी हृदय भला कब प्रभावित हुए बिना रह सकते थे ?

ब्रजेश के खयालों में गजल उभर उठी—

इलाज की नहीं हाजत दिलो-जिगर के लिए।
 बस, एक नजर काफी है उम्र भर के लिए।
मैं अपनी जान को मुट्ठी में लेके आया हूँ,
 ये तेरी नजर है, जादू भरी नजर के लिए।
खुदा ने तुझको बनाया है नाजनी कातिल,
 अदा की तेग है मौजूँ तेरी कमर के लिए॥

उसी समय—

"क्या सोच रहे हो ब्रजेश ?" कान्ता बोल पड़ी।

"देखो, क्या ही मनमोहक तथा प्रेमोत्पादनी यह चन्द्र छटा है। उजली रात कितनी सुखदायिनी लगती है, कान्ता !...चलो, थोड़ी देर बाँध पर चलकर जलक्रीड़ा का आनन्द लें..."

कहकर ब्रजेश ने कान्ता का हाथ अपने हाथ में ले प्रेम-पूर्वक दबाया।

कान्ता सिहर उठी, उस मादक दबाव से।

"शाम हो चुकी है ब्रजेश !...रात हो जाने पर डर लगेगा !" कान्ता शंकित होकर बोली।

"डर...मेरे रहते डर किस बात का डार्लिंग !...तुम्हें कुछ होगा तो मैं अपनी जान न्योछावर कर दूँगा।"

कान्ता कुछ नहीं बोली ।

उसने केवल तिरछी चितवन से ब्रजेश की ओर देखा ।

वह उसके प्रेम में विभोर होकर सारी सुध-बुध खो बैठी थी ।

दोनों एक दूसरे का हाथ थामे बाँध पर आये ।

वहाँ से बाँध दो फर्लाङ्ग की दूरी पर था ।

बाँध की ऊँचाई भी अधिक थी । कान्ता तथा ब्रजेश बाँध के ऊपर चढ़ गए । उसके सामने स्वच्छ जल-पूरित सरोवर लहरा रहा था, जिसके ओर-छोर का कुछ पता न था ।

चन्द्रमा की शीतल किरणें पानी में चाँद की तरह चमचमा रही थीं, मानो वे भी जलक्रीड़ा कर रही हों ।

ब्रजेश तथा कान्ता ने अपने-अपने वस्त्र उतार डाले, केवल एक-एक अण्डरवियर तथा बनिआइन पहने रहे ।

तत्पश्चात् ब्रजेश ने कान्ता को अपनी गोद में उठा लिया और उसको लिए हुए पानी में कूद पड़ा ।

पानी अधिक गहरा नहीं था ।

दोनों उसी में जलक्रीडा करने लगे ।

उन दोनों ने किस प्रकार जल क्रीड़ा की, यह बताने की बात नहीं, रसिक पाठक स्वयं ही अनुमान लगा लेंगे ।

हाँ, इतना अवश्य कहा जा सकता है, कि उनकी यह जलक्रीड़ा लगभग दो घंटे तक होती रही ।

तत्पश्चात् वे दोनों सरोवर से लथपथ, कुछ-कुछ थके हुए से बाहर निकले और अपने भींगे वस्त्र उतार-कर सूखे कपड़े पहन लिए ।

उस समय रात्रि के नौ बज चुके थे अतः दोनों शीघ्र ही फाल्स पर आये और अपनी मोटर पर सवार होकर शहर का मार्ग लिया ।

अब कान्ता मोटर चला रही थी।

रास्ते में कान्ता ने ब्रजेश से कहा—"न मालूम तुममें कौन सा जादू है ब्रजेश! इतने थोड़े समय में ही तुमने मुझे अपने वश में कर लिया। अब मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकती ...।

मुझे सब न्यामतें दुनिया की,
मिल जाएँ, जो मिल जाएँ।
तेरी जादू भरी आँखें
मेरे हसरत भरे दिल से ॥"

"यही हाल तो इधर भी है कान्ता, तुम्हारे इन मादक नेत्रों ने मुझे पागल कर दिया।" ब्रजेश ने कान्ता को अपने हृदय से लगाते हुए कहा—

"हाय! यह उठती जवानी, उफ्! यह आवाजे शबाब।
देख आँखों से मेरी, अपने को मेरे दिल से पूछ॥"

"आज तुम्हें मेरे घर पर ही रहना होगा।" कान्ता ने कहा।

"क्यों ?..."ब्रजेश ने उसकी आँखों ने आँखें डालकर पूछा।

कान्ता के गाल अरुणिम हो उठे।

"आज तुम्हें चलकर छोड़ देता हूँ, फिर किसी दिन घर भी चलूँगा।"

"नहीं, आज ही चलो, मेरा आज ही बड़ा मन है।"

"किस बात पर ?..."

एक बार फिर कान्ता पानी-पानी हो उठी।

"वहाँ ले चलकर क्या मुझे अपनी नौकरी में रखोगी ?—" ब्रजेश ने पुनः पुछा।

"हाँ!" कान्ता ने कहा और सी कार भर ठण्डी साँस ले ब्रजेश के सीने पर सर टिका दिया।

"ठीक है चलो।" बोला वह।

उसे एक प्रेमिका पाकर विशेष हर्ष हो रहा था। उसके मुख पर प्रसन्नता खेल रही थी और मोटर तेजी से भागी जा रही थी, शहर की ओर।

× × ×

शहर कोतवाली के सामने आकर कान्ता ने अपनी मोटर रोक दी।

देखते ही ब्रजेश हक्का-बक्का हो गया।

उसने आश्चर्य के साथ कान्ता से पूछा—"क्यों, यहाँ क्यों रुक गयी ?..."

"यहीं मेरा मकान है।"

"तुम पागल तो नहीं हुई हो कान्ता ! यह कोतवाली है।"

कान्ता हँस पड़ी, सरल हंसी !

बोली—"मैं शहर कोतवाल रतन सिंह की पुत्री हूँ और कोतवाली में ही पिताजी के साथ रहती हूँ। सरकार ने हमें रहने के लिए कोतवाली के अहाते में ही एक बँगला दिया है...तुम खड़े क्यों हो, आओ? डरते हो क्या ?..."

"ओह ! नहीं..." ब्रजेश के मुँह से निकला।

क्षण भर के लिए वह पशोपेश में पड़ गया। अनजाने ही कान्ता को प्यार कर बैठा। अगर जानता तो कभी ऐसी भूल न करता।

कोतवाल से उसकी घोर दुश्मनी है। वह कैसे यह बर्दाश्त कर सकेगा कि ब्रजेश उसकी बेटी से प्रेम करे ?

"अरे, तुम क्या सोचने लगे, आओ ब्रजेश!..." कान्ता ने अधिकारपूर्वक कहा।

"कान्ता!..." ब्रजेश ने लाचारी से गम्भीर होकर कहा—"काश, तुमने पहले बताया होता। अब तो यही रास्ता है कि तुम मुझे भूल जाने की चेष्टा करो। तुम्हारे पिताजी से मेरी कुछ मामलों को लेकर तकरार है, वे इसे कभी सहन नहीं करेंगे!..."

"ब्रजेश! तुम पिताजी की भी शंका न करो।" कान्ता बोली—"वे प्रतिदिन शाम को सात बजे कहीं चले जाते हैं और पुनः चार बजे प्रातःकाल लौटते हैं। इसके अन्दर हम-तुम सरलतापूर्वक मिल सकते हैं..."

"क्या तुम बता सकती हो कि वे सात बजे से चार बजे तक कहाँ रहते हैं?" ब्रजेश ने प्रश्न किया।

"मेरे पूछने पर पिताजी ने बताया था कि वे शहर के ही किसी प्रबन्ध के लिए जाया करते हैं।" कान्ता ने सरलतापूर्वक उत्तर दिया।

भला उस बेचारी को क्या मालूम था कि उसके पिता उससे इस प्रकार बहाना करके, एक ऐसी गुप्त कमेटी की बैठक में जाते हैं, जो उसके ही जैसी भोली-भाली तथा सुन्दर बालिकाओं का यौवन अपहरण करती है।

शहर कोतवाली के अहाते में ही एक सुन्दर बँगला बना था, उसी में कोतवाल रतनसिंह अपनी पुत्री कान्ता के साथ रहा करता था।

उसके और कोई नहीं था, न स्त्री, न पुत्र।

कान्ता ब्रजेश को अपने ड्राइंग रूम में लिवा ले गई।

उस समय कोतवाल 'गोल्डेन गैंग' की बैठक में चला गया था। कमरे की साज-सजावट अत्यन्त ही उत्कृष्ट थी। सुन्दर चित्र बिजली की तीव्र ज्योति में अपनी अद्-भुत छटा से नेत्रों में चकाचौंध उत्पन्न कर रहे थे।

एक कोने में एक सुन्दर पलंग बिछा था, जिसपर मखमली तकिया रखा था।

ब्रजेश उसी पलंग पर बैठ गया।

थोड़ी देर तक वह कमरे के निरीक्षण में खोया रहा।

भीतर जाकर कान्ता नाश्ता ले आई।

"अरे, यह तुमने बेकार तकलीफ की कान्ता!..." वह बोला।

"इसमें तकलीफ की क्या बात है?..."

"और नहीं तो क्या?...तुम मुझे मेहमान समझती हो?" ब्रजेश ने उसकी आँखों में देखा।

कान्ता नशीले नयनों से उसकी आँखों में देखती हुई मुस्कराई।

नकारात्मक सर हिलाकर प्रकट किया—"नऽ..."

"तो फिर क्या समझती हो?..." शरारत से पूछा ब्रजेश ने।

"अपने दिल से पूछ लो..."

कहकर कान्ता उसके निकट ही बैठने लगी, कुछ दूर पर।

"इधर करीब बैठो।..." ब्रजेश ने उसका कन्धा थामकर कहा।

"लो बाबा! तुम्हारे करीब ही सही..."

कहने के साथ ही कान्ता उसकी गोद में आ बैठी। दोनों ने एक-दूसरे के गलबहियाँ डाल दी।

उछल पड़ी हर्षित हो करके,
लिपट गई झट बलि जाकर।
अधर हिले, कहने कुछ ज्योंही,
चुम्बन की लग गई मुहर।

ब्रजेश ने कान्ता को खिलाया, कान्ता ने उसे।

प्रीति बसे प्रणय के बीच नाश्ता समाप्त हुआ।

फिर...

ब्रजेश ने कान्ता को भर जोर अपने सीने से लगा लिया। प्रेमोन्माद में वह सारी दुनिया को भूल गया।

दो प्राणी तथा दो शरीर मिलकर एक और एक '११' हो गए।

● ●

ब्रजेश अब एक दूसरी ही दुनिया की सैर कर रहा था।

कान्ता के प्रेम में वह ऐसा लिप्त हो गया था कि उसे किसी का भी ध्यान नहीं था।

रात्रि के आठ बजे जब कोतवाल 'गोल्डेन गैंग' की बैठक में चला जाता, ब्रजेश कान्ता के पास आता और दो बजे रात तक उसके पास प्रेमालाप करता।

चितवन शर से घायल होता,
गिरकर उसका पायल होता॥
फिर बाहुपाश में बँधा हुआ,
परवशता का कायल होता॥
तन मन उमंग से भर जाता,
यौवन-गंगा में तर जाता॥
अधरों का सम्मेलन होता,
फिर चुपके से वह घर जाता॥

घर का दुलारा बेटा होने के कारण उसकी माँ उससे कुछ न कहती, यह भी न पूछती कि वह इतनी रात तक कहाँ रहता है।

ब्रजेश ने इन दिनों 'गोल्डेन गैंग' का ध्यान ही छोड़ दिया था, और उस नरपिशाच से मिले तो महीनों बीत गये थे।

अब इस असार-संसार में उसके लिए केवल एक ही वस्तु थी, वह थी कान्ता।

बिना उसके पास गये उसे चैन ही नहीं पड़ता, परन्तु दिन में वह उसके पास कभी न जाता, क्योंकि उसे कोतवाल का भय था।

बह उस दुष्ट से सदैव दूर ही रहना चाहता था।

'गोल्डेन गैंग' के कर्णधारों ने अब अपनी बैठक के लिये एक दूसरा ही स्थान नियत कर लिया था, क्योंकि उनका बासलीगंज वाला मकान ठीक नहीं रहा।

उसके विषय में बहुतेरे जान गये थे।

वहाँ रहने से सबसे भारी डर तो उस दुर्दान्त काला भूत का था।

इसलिए सबों ने कमेटी का स्थान बदल देना ही श्रेयस्कर समझा। अब उनकी बैठक लालगंज कस्बे में होने लगी थी।

लालगंज शहर से सत्रह मील की दूरी पर था।

यह कस्बा पहाड़ों तथा जंगलों के बीच में बसा हुआ है। यहाँ पर कुछ टूटी-फूटी दूकानें तथा एक पोस्ट आफिस भी है।

यहीं एकान्त देखकर उन दुष्टों ने एक बड़ा-सा मकान, जो किसी मिर्जापुरी महाजन का बनवाया हुआ था, किराये पर ले लिया।

उसी में उनकी हृदय-विदारक कार्यवाहियाँ होने लगीं।

वे दुष्ट प्रतिदिन ८ बजे रात्रि को मोटर द्वारा सत्रह मील का मार्ग तय करके शहर से लालगंज आते थे और लगभग चार बजे रात्रि को पुनः लौट जाते थे। उन्हें वन्य पशुओं का जरा भी भय नहीं था।

उनका आना-जाना कस्बे के निवासी भी नहीं जान पाते थे, क्योंकि वे तो उस समय तक निद्रा देवी की गोद में विचरण करते रहते थे।

× × ×

उस दिन गोल्डेन गैंग की बैठक रात के दस बजे ही समाप्त हो गई, क्योंकि आज उन दुष्टों की पिपासाग्नि बुझाने के लिये कोई शिकार न था, अतः सब मोटर पर सवार होकर शहर की ओर लौट आये और अपने-अपने घरों को चले गये।

कोतवाल भी कोतवाली में आया।

अपनी मोटर ठिकाने रखवाने के बाद, अहाते के भीतर बने अपने छोटे-से बँगले की ओर बढ़ा।

अभी वह बँगले के पास पहुँचा भी न था कि उसे जोरों से ठठाकर हँसने की आवाज सुनाई पड़ी, जो उसकी लड़की कान्ता के कमरे से आ रही थी।

थोड़ी ही देर में कोतवाल ने पहचान लिया कि यह ठठाकर हँसने की आवाज ब्रजेश कुमार की है।

उसे अपार आश्चर्य हुआ।

वह मन ही मन सोचने लगा कि इतनी रात को ब्रजेश कुमार यहाँ क्यों आया और वह कान्ता के कमरे में क्या कर रहा है।

धीरे-धीरे पैर बढ़ाता, कोतवाल कमरे के दरवाजे के सामने जा पहुँचा।

उसने दरवाजे की दरार से झाँककर देखा!

ब्रजेश तथा कान्ता एक ही पलंग पर, एक-दूसरे को अपने में समा लेने की चेष्टा करते हुए लेटे थे।

बीच-बीच में 'प्रेम' का आदान-प्रदान भी जारी था।

दोनों खूब घुल-घुलकर बातें कर रहे थे। दोनों के अधर आपस में सटे थे। कोतवाल के आगमन से वे सर्वथा अनभिज्ञ थे।

उन्होंने तो समझा था कि कोतवाल, सदा की भाँति आज भी चार बजे के बाद आयेगा।

भीतर का दृश्य देखते ही कोतवाल का खून खौलने लगा। उसके हृदय में प्रतिशोध की भीषण ज्वाला धधक उठी। वह क्रोध से पागल हो उठा।

उसने अपना विनाशकारी रिवाल्वर निकाल लिया।

वह प्रबल वेग से बन्द दरवाजे पर टूट पड़ा। दरवाजा चर-चर करता हुआ अलग हो गया। एक क्षण में ही वह कमरे के भीतर आ रहा।

कोतवाल को देखते ही ब्रजेश तथा कान्ता का सुखद स्वप्न भंग हो गया।

उनकी प्रेम-क्रीड़ा रुक गई।

दोनों हड़बड़ा कर उठ बैठे।

डरते-काँपते भीषण रूपधारी कोतवाल के सामने खड़े हो गये। ब्रजेश का बुरा हाल था। उसे ऐसा लग रहा था, मानो जानबूझ कर कराल काल के मुख में हाथ डाला हो उसने।

कान्ता भी थर-थर काँप रही थी।

उन दोनों के सामने कोतवाल अपना रिवाल्वर ताने खड़ा था।

"ब्रजेश! अब तुम मेरे कब्जे से भाग नहीं सकते। तुम आस्तीन में छुपे काले नाग हो। अब मैं तुम्हें मारकर सदा के लिये निष्कंटक हो जाना चाहता हूँ!... मैं तुम्हें अभी, इसी समय यहीं पर मारकर दफन कर दूँगा!...कोई भी बचा नहीं सकता तुम्हें!..." कोतवाल ने गरजते हुए कहा।

उसके नेत्रों से क्रोध की चिनगारियाँ फूट रही थीं।

कान्ता का चेहरा भय से पीला पड़ गया।

वह किसी प्रकार साहस करके ब्रजेश के आगे आ खड़ी हुई।

करुणा मिश्रित वाणी में बोली—"पिताजी !...मुझे माफ कर दीजिये, सारी गलती मेरी है। ब्रजेश का इसमें कुछ भी कसूर नहीं !...मैंने ही इन्हें यहाँ आने के लिए मजबूर..."

"चुप रह कान्ता !...मैं इसे अब नहीं छोड़ूँगा, तू हट जा सामने से।"

कहकर कोतवाल आगे बढ़ा।

तड़ाक !

उसका एक भरपूर हाथ कांता के गाल पर जा पड़ा।

कान्ता लड़खड़ा कर धरती पर गिर पड़ी। आगे बढ़कर उसने कोतवाल के पाँव पकड़ लिए और रो पड़ी फफक कर।

"पिताजी !...इन्हें छोड़ दीजिए, आप चाहें तो मेरी जान ले लें, मैं दोषी हूँ आपकी।"

कान्ता के करुणापूर्ण मुख पर दृष्टिपात होते ही क्रूर कोतवाल का क्रोध धीमा पड़ गया।

वह अपनी एकमात्र सन्तान कान्ता को, अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करता था।

"बेटी !..." कान्ता को उठाकर बोला वह—"तुम नहीं जानती यह एक मामले में मेरा अपराधी है !... तुमने शत्रु को घर में पनाह देकर अच्छा नहीं किया..."

एक क्षण रुककर वह पुनः बोला—"ब्रजेश ! यह न समझना की कान्ता के रोने से मेरा क्रोध शान्त हो जाएगा और मैं तुम्हें यूँ ही चले जाने दूँगा...अब तुम्हारी प्राणरक्षा का केवल एकही मार्ग है कि तुम उस नरपिशाच का ठीक-ठीक पता बता दो...

ऐसा करने से तुम कान्ता जैसी पत्नि भी पा सकोगे और तुम्हें प्राणों से मुक्ति भी मिल जायेगी। अगर तुम मेरी बातें नहीं मानते तो अभी-अभी तुम्हारी लाश, भूमि पर निःसहाय छटपटाती हुई नजर आयेगी...और तुम्हारे गर्म रक्त से इस तृषित रिवाल्वर की प्यास बुझ जायेगी।"

ब्रजेश चुप रहा।

वह इस समय अजीब पशोपेश में पड़ा था।

उस नरपिशाच का न वह पता बताना चाहता था और न अपने प्राण गँवाना...

किसी एक बात पर उसका मन नहीं टिक पा रहा था। इस समय वह क्या करे जो भेद भी न खुले और इस जेल से बाहर हो जाय।

दोनों ही बातें उसे तब तक असंभव लग रही थीं, जब तक कोतवाल के हाथ में महाशक्तिशाली रिवाल्वर था।

उसने एक दृष्टि कान्ता पर डाली।

वह अचरज में डूबी खड़ी थी। ब्रजेश और अपने पिता के आन्तरिक मामलों से वह अनजान थी।

वह ब्रजेश की ओर अनिभेष नयनों से देख रही थी। उसके मुख पर करुणा थी और पुतलियों में कायरता।

उसके मूक नयन ब्रजेश से मानों कह रहे थे—

"प्रियतम !...बता दो उस नरपिशाच का पता, और मुझे प्राप्त कर जीवन का आनन्द लूटो, अन्यथा तुम्हारे प्राण त्यागने पर मेरा जीवित रहना असम्भव है..."

कान्ता की करुण मूर्ति देखकर ब्रजेश द्रवित हो उठा। उसने उस नरपिशाच का पता बता देने का निश्चय कर लिया।

फिर भी वह कोतवाल को एकबार समझाने का प्रयत्न

करता बोला—"कोतवाल साहब! आप स्वयं समझदार हैं। आप भली प्रकार समझ सकते हैं कि वह कालाभूत कितना बलवान है...वह अपने दुश्मनों को कभी नहीं छोड़ता और मुझे तो वह जिंदा नहीं छोड़ेगा...फिर उसके साथ विश्वासघात करना कितना घृणास्पद होगा ?..."

"तुम भूल रहे हो ब्रजेश !..." कोतवाल ने कहा—"देख लेना...वह नरपिशाच अवश्य किसी न किसी दिन तुम पर हाथ साफ करेगा। वह मनुष्यभक्षी है...इसलिए व्यर्थ की दुविधा में न पड़ो, उसका पता बताकर कान्ता को प्राप्त करो।"

ब्रजेश चुप रहा।

अपनी कमजोरी पर विजय पाना चाह रहा था वह।

"बोलो, चुप क्यों हो ?"

"मैं मजबूर हूँ कोतवाल साहब !..."

"हूँ..." तड़प उठा कोतवाल—"तुम कुत्ते की मौत मरना चाहते हो। अच्छा देखो, अब तुम्हारी वह नरपिशाच कैसे रक्षा करता है ?"

कोतवाल ने 'ह्वीसिल' निकालकर बजाई।

तुरन्त ही पाँच-छः सिपाही दौड़े आये।

कोतवाल ने उन्हें आग जलाने का हुक्म दिया। तुरंत ही आग जलाई गई। दो सिपाहियों ने ब्रजेश को रस्सियों में जकड़ कर उठा लिया और आग के ऊपर ले जाकर सेंकने लगे।

बिकट दाह से ब्रजेश छटपटाने लगा।

कराहकर बोला वह—"मैं उसका पता बताने को तैयार हूँ कोतवाल साहब !...मुझे छोड़ दीजिये।"

"ठीक है, बताओ..." क्रूरता की हँसी हँसकर कोतवाल ने सिपाहियों को इशारा किया।

ब्रजेश छोड़ दिया गया।

संकेत पाकर सिपाही बाहर चले गए।

कान्ता पहले ही अपने कमरे में भीतर पड़ी सिसक रही थी।

कमरे में केवल वह दोनों रह गये।

ब्रजेश ने कहना प्रारम्भ किया—

"मुझे यह नहीं मालूम कि दिन में वह नरपिशाच कहाँ रहता है, परन्तु रात्रि में वह फतहा बाजार के मकान नम्बर 52²/KTO में रहता है।"

"वह कौन है ?" कोतवाल ने प्रश्न किया।

"यह मैं नहीं जानता..." ब्रजेश ने कहा—"उसके विषय में केवल इतना ही कह सकता हूँ कि वह कालाभूत है, पिशाचराज है, उसमें अटूट बल है—वह जो चाहे कर सकता है !...एक आश्चर्यजनक बात यह है कि जब तक वह जागता रहता है, तब तक कोई भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता, परन्तु सोते ही उसकी सारी शक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं !...उस समय एक ही फायर में मारा जा सकता है।

इसलिये आप से प्रार्थना है, जब आप वहाँ जायें तो इस बात का भली प्रकार निश्चय कर लें कि वह जाग रहा है या सोया...

अन्यथा आप पर कोई सांघातिक विपत्ति आ सकती है। यदि आप को उसपर विजय पाने की इच्छा हो तो आप उस समय आक्रमण करें, जब वह घोर-निद्रा के वशीभूत हो।"

"थैंक्यू ब्रजेश ! मैं खुश हूँ तुमसे..." कोतवाल प्रसन्न होकर बोला—"इस समय मैं अपने कमरे में जा रहा हूँ। कल तुमसे बात होंगी तो उस नरपिशाच को अपने रास्ते से हटाने की युक्ति सोची जायेगी...तुम भी अब आराम

करो।"

कोतवाल प्रसन्नतापूर्वक कमरे के बाहर निकल गया।

ब्रजेश कान्ता के कमरे की ओर चल पड़ा। आते ही उसने कान्ता को अपनी गोद में उठा भरजोर बाहुपाश में आबद्ध कर लिया।

कान्ता के मुख से सहसा निकल पड़ा—"उफ्, क्या मार ही डालोगे डियर!..."

● ●

बड़े लोगों का यह कथन कि माता-पिता के गुणों अथवा अवगुणों का उनकी सन्तान पर बहुत प्रभाव पड़ता है, असत्य नहीं।

कान्ता के विषय में भी ऐसा ही हुआ।

वह एक दुराचारी पिता की कन्या थी, तो भला कहीं रक्त अपना प्रभाव छोड़ सकता था?

ब्रजेश के प्रेमसूत्र में बँधने से पहले कान्ता एक कोमल हृदय सरल बालिका थी।

परन्तु ब्रजेश के साथ इस अपार-संसार का कुछ आनन्द प्राप्त कर चुकने के पश्चात् उसे दूसरे फूलों का रसास्वादन करने की इच्छा हुई।

अब वह सोचने लगी कि जब तरह-तरह के सुन्दर जवान अपनी पिपासाग्नि बुझाने के लिये लोलुप दृष्टि से उसकी ओर देखते हैं, तो वह एक ब्रजेश पर ही क्यों मरे?

क्यों न अन्यान्य पुरुषों की प्रेमपात्री बनकर उन्हें तृप्त करे तथा अपनी इच्छा की भी पूर्ति हो?

इन विचारों ने उसे इतना प्रभावित किया कि वह उतावली हो उठी। कुछ ही दिनों के भीतर उसने अपने

एक सहपाठी युवक को प्रेमपात्र बना लिया। वह बलिष्ठ युवक, देखने में खूबसूरत था, घर से भी वह काफी रईस था।

दोनों में खूब पटने लगी।

तितली बनकर कान्ता उस पुष्प का पराग लूटने के लिए मतवाली हो गई।

इस समय वह युवक कान्ता के कमरे में ही था। दोनों गुलगुले गद्दे पर एकान्त में लेटे मधुर-२ बातें कर रहे थे। साथ ही प्रेम का आदान-प्रदान भी चल रहा था।

"डार्लिग कान्ता!"

"डियर राजेश्वर!"

"सच-सच बताओ, उसके साथ तुम्हारी बात कहाँ तक पहुँची है?" राजेश्वर ने प्रश्न किया।

"तुम जहाँ तक पहुँचे हो, उससे वह कोसों दूर रहा है!...अभी ब्रजेश बहुत नादान है इस मामले में। कुछ बेवकूफ भी है। वह तो अकस्मात् तुम पर अब नजर पड़ सकी, अन्यथा मैं पहले ही तुम्हें प्यार करती डियर राजेश्वर!"

"सच?"

"और नहीं तो क्या झूठ?"

कान्ता के उत्तर से प्रसन्न हो राजेश्वर ने उसे आलिंगन में जकड़ लिया और उसके अधरों पर जलतें होंठ टिका दिये।

कान्ता छुई-मुई बनकर उसके वक्ष से लिपट गई।

दोनों केलि-विहार में डूबे स्वप्न देखते रहे।

"उस बात का तुम्हें ध्यान है राजेश्वर?" कान्ता ने पूछा।

"ध्यान क्यों नहीं रहेगा। मैं तो हर समय सोचता रहता हूँ कि जाने वह दिन कब आयेगा, जब अपनी दिल-

रूपा को परदे पर देखूंगा।"

राजेश्वर के उत्तर से कान्ता खुश हो उठी।

बोली—"तुम बहुत अच्छे हो डियर !"

"तुमसे कम ही हूँ। देखना जब लोग सिनेमा के परदे पर तुम्हें देखेंगे तो हाय-हाय करके कलेजा थाम लेंगे।"

"और तुम ?"

"मैं तुम्हें सीने से लगा लूंगा।" राजेश्वर ने उसे अपनी भुजाओं में जकड़कर कहा।

"मगर तुम्हारे उस निर्माता की बात से डरती हूँ डियर !"

"पगली ! इसमें डरने की बात ही क्या है। वह कोई राक्षस तो है नहीं, जो तुम्हें निगल जायगा। निर्माता और एकाध कैमरामैन, डायरेक्टर का सहारा तो हर अभिनेत्री को पकड़ना पड़ता है। ऐसी कुछ ही अभिनेत्रियाँ हैं, जो अपने रिश्ते या योग्यता के बल पर सफल हुई हैं।...शेष सभी को नयन-बाण की आवश्यकता पड़ती है।"

"जैसा तुम समझो।"

"बाकी सब वहीं चलकर समझ लेंगे। यह बताओ, तुम रुपये कब ला रही हो? मैं बीस हजार ले आया हूँ।"

"मैं भी दो-तीन दिनों में सारा प्रबन्ध कर लूंगी। अभी पिताजी की तिजोरी में तीस हजार हैं, कल-परसों तक बीस हजार और आ जाएँगे !...पचास हजार में खूब मजे में हम सब कुछ कर लेंगे।"

"बिल्कुल मेरी जिगर !"

कहकर राजेश्वर ने फिर उसे अंकपाश में जकड़ लिया। कान्ता झूठ-मूठ 'सी–सी' कर उठी।

● ●

उस दिन ब्रजेश अपने कमरे में चिन्तामग्न बैठा था।

वह अपना सर नीचा किए चिन्तासागर में गोता लगा रहा था। इतने में ही दरवाजे पर खट-खट की आवाज सुनकर उसने अपना सर उठाया।

देखा, सामने ही कोतवाल, युसुफ, करीम आदि चले आ रहे हैं।

ब्रजेश उठकर खड़ा हो गया। ऊपरी मन से प्रसन्नता दिखाते उसने उन लोगों का स्वागत किया।

"कहिए कोतवाल साहब! कैसे तकलीफ की?..." ब्रजेश ने शिष्टाचार पूर्वक पूछा।

"तुम्हारे ही पास आया हूँ।" कोतवाल ने कहा-"आज उस नरपिशाच के मकान पर धावा करूँगा, आधी रात को। तुम्हें भी साथ चलना होगा।"

"कोतवाल साहब! इसके लिये मैं क्षमा चाहूँगा। मेरी कल से तबीयत खराब है, इसलिये आप के संग चलने में असमर्थ हूँ।"

"खैर, कोई बात नहीं। हम लोग तो आज उस दुष्ट का विनाश करने के लिये अवश्य जाएँगे। यदि हम पर कोई संकट आया तो तुम्हें ही मदद करनी होगी।" कोतवाल बोला।

इसके बाद उनमें थोड़ी देर तक बातें होती रहीं।

तत्पश्चात् वे दुष्ट चले गए। ब्रजेश पुनः बैठा-बैठा सोचने लगा। उसे इस बात पर बड़ी ही ग्लानि हो रही थी कि उसने क्यों उन दुष्टों को उस नरपिशाच का पता दिया।

कहीं ऐसा न हो कि वे धोखे में उसे मार ही डालें।

हालाँकि उसे विश्वास नहीं था कि वे उस महा शक्तिशाली से जीत सकेंगे, लेकिन फिर भी वह चिन्तित हो रहा था।

उसका मन स्थिर नहीं होता था।

वह अपने को धिक्कार रहा था।

संध्या हो गई।

बाहर का घना अन्धकार कोठरी में घुसने का प्रयत्न करने लगा।

यह देख ब्रजेश देख खड़ा हुआ और अपनी साइकिल लेकर कान्ता के पास जाने के लिए तैयार हो गया।

मार्ग में न मालूम कितने विचार उनके मनो-मस्तिष्क पर अंकित हुए और मिटे...और कई बार उसका हृदय जोरों से धड़क उठा।

कोतवाली के पास पहुँचते ही वह सायकिल से उतर पड़ा और उसे एक किनारे खड़ी करके, सीधे कान्ता के कमरे की ओर बढ़ा, परन्तु उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि रात्रि हो जाने पर भी कान्ता के कमरे में अँधेरा ही है।

वह कमरे में घुस गया और स्विच दबाकर रोशनी कर दी।

कमरा तीक्ष्ण आलोक से परिपूर्ण हो गया, परन्तु वहाँ पर कान्ता नहीं थी।

ब्रजेश ने समझा कदाचित् वह कहीं झूमने गई हो, अतः कुर्सी पर बैठकर उसकी प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी ही देर में कान्ता का नौकर आया।

उससे पूछने पर मालूम हुआ कि कान्ता किसी के साथ मोटर पर घूमने गई है।

सुनते ही न जाने क्यों ब्रजेश का कलेजा धड़कने लगा।

वह एकाएक अनमनस्क हो उठा।

तभी—

बाहर जाता हुआ राहगीर गा उठा—

क्यों ए दिले नादां तू हसीनों पै फिदा है,
क्या तुझको हुआ है ?
माशूकों का अन्दाज जमाने से जुदा है,
कब उनमें वफा है ?

उसी समय ब्रजेश की दृष्टि मेज पर रखे हुए एक लाल लिफाफे पर पड़ी।

वह उसे पढ़ने का लोभ संवरण न कर सका। उसने वह लिफाफा खोला। उसमें एक पत्र था। उसे वह पढ़ने लगा। पत्र की लिखावट कान्ता के हाथ की थी, जिसे उसने अपने एक नये प्रेमी के पास भेजने के लिए लिखा था।

वह यों था—

"डियर राजेश्वर,

सप्रेमालिङ्गन !

जब से तुम गये छलिया ! मेरी सुधि न ली। तुम व्यर्थ ही ब्रजेश की ओर से सशंकित हो। वह तुम्हारा कुछ भी नहीं कर सकता।

जब मैं हृदय से तुम्हारी हूँ तो उसकी ओर चिन्तित होना बेकार है। जब से तुम्हें 'भर आँख' देखा है, उसके प्रति मेरे दिल में जरा भी प्रेम नहीं रह गया है..."

इसके बाद और बहुत-सी बातें लिखी थीं।

नीचे कान्ता का हस्ताक्षर था।

पत्र पढ़कर ब्रजेश धक्-सा रह गया।

उसके नेत्र अंगारे हो गये, अधर फरफराने लगे !

वह क्रोध में दाँत पीसता हुआ स्वतः बोला —

'कुलटा कहीं की...'

उठकर वह पागलों की तरह कमरे में घूमने तथा बड़बड़ाने लगा

आह !....दुष्टों ने मुझसे बड़ा भारी विश्वासघात किया। इसी के कुत्सित प्रेम में पड़कर मैंने अनर्थ कर डाला। यदि मैं जानता कि इस सुन्दर आवरण में राक्षसी का हृदय है तो प्राण दे देता, परन्तु कोतवाल से उस नरपिशाच के निवास-स्थान का पता न बताता।

ओह ! न मालूम उस बेचारे पर क्या बीती ?...

परन्तु अभी तो दस बजे हैं !

कदाचित कोतवाल आदि उसके निवास स्थान पर न पहुँचे हों, क्योंकि उन सबों ने तो वहाँ आधीरात को जाने का निश्चय किया था।

तो क्या वहाँ पर चलकर नरपिशाच को सावधान कर दूँ ?

अवश्य, यही ठीक होगा।

बड़ी देर तक वह पागलों की तरह बड़बड़ाता रहा।

उसका बड़बड़ाना बन्द हुआ तभी उसने कमरे के बाहर आती हुई कान्ता को देखा।

उसने ध्यान लगाकर सुना। किसी के साथ बातचीत करती हुई कान्ता उसी ओर आ रही थी।

वह कह रही थी—'डियर राजेश्वर !...आज का सुहाना समय तुम्हारे साथ बहुत अच्छी तरह बीता। कल भी आओगे नऽ...'

'जरूर...जरूर आऊँगा डार्लिङ्ग !'

ब्रजेश ने ज़रा-सा दरवाजे से झांककर देखा !

कान्ता का हाथ उस पुरुष के गले में था और....देखते

ही ब्रजेश का रक्त उबल पड़ा।

उस पर भूत सवार हो गया।

वह भूखे बाघ की तरह कान्ता पर झपटा।

एक क्षण में ही उसने कान्ता को दबोच लिया। उसके दोनों हाथ कान्ता के गले पर थे। वह युवक हक्का-बक्का खड़ा था।

ब्रजेश क्रोध और घृणा से उसे देखता हुआ बोला—'पापिष्टा! विश्वासघातिनी!...आज तेरा असली रूप देखा... जी चाहता है, तेरा गला घोंट दूँ...'

परन्तु दूसरे ही क्षण उसका उन्माद विलीन हो गया।

कान्ता का गला छोड़कर वह अलग हो गया, नफरत से बोला—'जा मैं तुझे छोड़ देता हूँ। एक पापिष्ठा के रक्त से हाथ रँगना नहीं चाहता...मैं जा रहा हूँ, इसका प्रतिशोध तेरे पिता से लिया जायगा। यदि मैंने समय पर जाकर उस नरपिशाच को सावधान न किया तो दुष्ट लोग उसे अवश्य ही मिटा डालेंगे...और इस जगत की एक भयङ्कर वस्तु, एक खौफनाक जीव विलीन जायगा...'

तेजी के साथ ब्रजेश कोतवाली से बाहर निकल गया।

बाहर ही उसकी साइकिल रखी थी। वह उछलकर उस पर जा चढ़ा और फतहा बाजार की ओर ताबड़-तोड़ पैंडिल मारना शुरू कर दिया।

रात्रि के साढ़े दस बज रहे थे।

घनी अँधेरी रात...हवा की सनसनाहट जोरों पर थी।

ब्रजेश अपनी साइकिल तेजी के साथ उस नरपिशाच के निवास स्थान की ओर भगाये जा रहा था। उसके हृदय में रह-रहकर यही प्रश्न उठता था कि देखें बेचारे नरपिशाच का क्या होता है?

अनवरत साइकिल चलाने के कारण वह हाँफ रहा था। परन्तु उसे इसकी परवाह न थी।

वह सोचा था कि नरपिशाच के सामने पहुँचकर उसके चरणों पर अपना माथा टेक देगा और अपने अपराध की साफ-साफ कहानी सुनाकर क्षमा की भीख माँगेगा तथा साथ ही साथ उसे यह भी बता देगा कि कोतवाल आदि उसकी हत्या करने अभी-अभी आ रहे होंगे।

इससे वह अवश्य ही सावधान हो जाएगा।

परन्तु......

उस बेचारे को क्या मालूम......

● ●

ब्रजेश से उस नरपिशाच का पता पाकर कोतवाल बहुत प्रसन्न हुआ।

उसने यह हर्षोत्पादक समाचार अपने साथियों को सुनाया, सभी उछल पड़े। अन्त में यही निश्चय हुआ कि श्याम सरोज उस नरपिशाच के निवास स्थान पर पहले जाए और उसके जागते या सोये रहने का पता लगाये रहे।

तब तक अन्य लोग भी पहुँच जायेंगे।

यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से तय रहा।

दस बजते ही श्याम सरोज नकाब पहनकर रिवाल्वर से लैस हो चल पड़ा।

कोतवाल और उसके साथी घण्टाघर के निकट की एक दूकान के भीतर बैठकर चाय पीने लगे। वहीं पर

धीरे-धीरे बातें भी होने लगीं कि वहाँ पहुँचकर किस प्रकार हमला किया जाएगा।

ग्यारह बजे वे सभी उठकर बाहर आये।

× × ×

आकाश मेघाच्छन्न है परन्तु अभी तक बूँदें नहीं पड़ रही हैं।

लगता है—यदि बारिस शुरु हुई तो मूसलाधार वर्षा होगी कि पानी घण्टों तक रुकने का नाम न लेगा।

रात के लगभग सवा ग्यारह होने वाले हैं।

सन्-सन् हवा चल रही है।

उसकी ठण्डक बरबस ही आलस्य उत्पन्न कर रही है।

नर पिशाच रात्रि के समय जहाँ रहता है, वहाँ इस समय बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ है, किसी की आहट नहीं सुनाई पड़ रही है।

यह शहर का बाहरी किनारा है।

चारों ओर सुनसान पड़ा है।

वहाँ अँधेरे में—

चहारदीवारी के बड़े फाटक से हट कर एक मनुष्य, अपने को काले कपड़ों से छुपाये दबकर खड़ा है।

वह कभी-कभी फाटक के पास आकर उसके जँगले से भीतर की ओर देख लेता है और फिर अपनी जगह पर लौट जाता है।

बहुत देर से उसका यही क्रम जारी है।

कभी वह फ़ाटक से कुछ दूर हटकर खड़ा हो जाता है।

कभी फाटक के पास आकर अन्दर की ओर झाँकने लगता है।

थोड़ी देर में उसने एक साँस ली।

वह स्वतः ही बुदबुदा पड़ा—

'ओह! कोतवाल साहब अभी तक नहीं आये, अब तो टाइम निकला जा रहा है।'

परन्तु इतने ही में दूर से आती हुई कई घोड़ों की आवाज ने उसका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया।

उसने सामने देखा!

पाँच घुड़सवार तेजी के साथ उसी ओर चले आ रहे थे। उनको देखते ही उस मनुष्य के मुख से प्रसन्नता की हल्की ध्वनि निकल पड़ी।

इतने में ही वे घुड़सवार पास आ गये और अपने घोड़े रोककर वहीं उतर पड़े।

उस आदमी ने आये हुये सवारों में से एक को नम्रता-पूर्वक अभिवादन किया।

बोला—'कोतवाल साहब!...आप ठीक समय पर आ गए। नर पिशाच इस समय सोया हुआ है...'

आने वाले घुड़सवार कोतवाल, युसुफ, करीम, अब्दुल्ला तथा रज्जन थे, और जो व्यक्ति वहाँ पहले ही उपस्थित था—वह था श्याम सरोज।

श्याम सरोज से यह सुनकर कि वह पिशाच इस समय सोया हुआ है, कोतवाल आदि बेहद प्रसन्न हुये।

'वह किधर सोया है?....'कोतवाल ने श्याम सरोज से प्रश्न किया।

'उधर देखिए, वह क्या पड़ा हुआ है।' श्यामसरोज ने कोतवाल आदि को जँगले के भीतर संकेत करते हुए कहा।

सबने भीतर की ओर देखा!

नाना प्रकार के फूलों के पौधे लगे थे चारों ग्रोर, जिन पर फूल विकसित हो रहे थे।

पौधों के पास ही लोहे की चारपाई बिछी थी, जिस पर वह भयंकर कालाभूत नग्न अवस्था में पड़ा हुआ जोरों से खर्राटे ले रहा था।

उस समय वह प्रगाढ़ निद्रा में था।

उसे दीन-दुनिया किसी की भी खबर नहीं थी।

हवा के तीव्र झोकों से, उसके शरीर पर के लम्बे-लम्बे काले बाल इधर-उधर फहरा रहे थे।

'मौका बड़ा अच्छा है। सब लोग तैयार हो जाओ। निकाल लो अपने-अपने रिवाल्वर।' कोतवाल ने सबको आदेश दिया।

सबों ने अपना-अपना रिवाल्वर निकाल लिया और फाटक के बाहर से ही निशाना साधने लगे।

भीतर घुसने का उन्हें साहस नहीं हुआ।

उसके सोते रहने पर भी वे लोग उससे बहुत डर रहे थे कि जग गया तो खैर नहीं। एकाध के बदन से तो कँपकँपी छूट रही थी।

जँगले के छड़ बहुत दूर-दूर लगे थे, इसलिए निशाना साधने में उन्हें कुछ भी कठिनाई नहीं हुई।

'रेडी !...यस ' कोतवाल ने कहा।

धायँ ! धायँ !!

कहने के साथ ही कोतवाल ने रिवाल्वर का घोड़ा दबा दिया।

उसके बाद पचासों फायर हुए।

रिवाल्वरों का घोर गर्जन रजनी को चीरता हुआ बहुत दूर जाकर विलीन हो गया।

साथ ही अहाते से उस नरपिशाच का एक भीषण शोर सुनाई पड़ा, जिससे दिशायें गूँज उठीं।

कोतवाल आदि के कान बहरे हो गये।

वे तुरन्त ही कूद-कूद कर अपने घोड़ों पर जा चढ़े और तेजी से शहर की ओर भाग चले।

हवा बन्द हो गई थी।

आकाश से बादलों का जमघट छिन्न-भिन्न होता जा रहा था।

अहाते से उस भयङ्कर नरपिशाच के जोर-जोर से कराहने की आवाजें आ रही थीं।

वह बुरी तरह से आहत हो गया था।

उसने लड़खड़ाते हुए उठने का प्रयास किया, बहुत कठिनाई से उठकर वह थोड़ी दूर चल सका।

कमरे में आकर वह पलंग पर गिर पड़ा।

● ●

जब कोतवाल आदि उस नरपिशाच को घायल करके, अपने-अपने घोड़ों पर चढ़कर भाग गये, उसके दो ही मिनट पश्चात ब्रजेश वहाँ पहुँचा।

फाटक पर पहुँचते ही उसने नरपिशाच के कराहने की आवाज सुनी। उसका हृदय रो उठा।

करुणा भरे स्वर में उसके होंठों से निकला।

'आह!...मैं समय पर नहीं पहुँच सका। वे दुष्ट अपना काम कर गये....'

ब्रजेश ने साइकिल फाटक के पास खड़ी कर दी और चहारदीवारी लाँघकर भीतर जा पहुँचा।

उसने देखा।

बाहर एक लोहे की चारपाई पड़ी है—वहाँ से लेकर भीतर तक खून की बूँदें टपकी हुई हैं।

भीतर गया तो एक पलंग पर नरपिशाच खून से लथपथ पड़ा हुआ कराह रहा था। उसका हृदय हाहाकार कर उठा।

वह दौड़कर नरपिशाच से लिपट गया।

रोने लगा ब्रजेश।

उसे अपने ऊपर ग्लानि हो रही थी।

नरपिशाच ने ब्रजेश को देखा। उसने उसके सर पर स्नेह पूर्वक हाथ रख दिया।

कराहता हुआ बोला – 'बेटा ब्रजेश! तुम महीनों से कहाँ थे? मेरी सुध क्यों भूल गये थे? देखो! उन दुष्टों को किसी प्रकार मेरे भेदों का पता लग गया और सोते में ही मुझे घायल करके चले गये....

ब्रजेश। अब मैं जी नहीं सकता, गोलियों ने मेरा कलेजा विध्वंश कर दिया है, मेरा शरीर विछिन्न हो गया है...'

ब्रजेश का गला रुँध गया।

उसकी आँखों से अविरल अश्रुधारा प्रवाहित होकर गालों को सोंचने लगी।

वह अपने को किसी तरह सँभालकर बोला–'पिशाचराज! मैं आपके सामने मुँह दिखाने लायक नहीं।...मैं पापी हूँ, खूनी हूँ। मैंने ही आपका नाश किया है! मैंने ही आपकी हरी-भरी बाटिका उजाड़ी है, मैंने ही दुष्ट कोतवाल से आपके रहने का स्थान बताकर आपका सर्वनाश कराया है....'

'ब्रजेश !...मैं सब बातें जानता हूँ। मुझसे कोई भी बात छिपी हुई नहीं है। मेरे विनाश के कारण तुम नहीं, क्योंकि मैं सब कुछ जानते हुए भी अपनी रक्षा का कोई विशेष प्रबन्ध न किया। सोचा था कि उन दुष्टों को मेरे सामने आने का कभी साहस न होगा।

परन्तु क्या करूँ ? ईश्वर को यही मन्जूर था। इसमें किसी का दोष नहीं।-

उसकी आँखें आँसुओं से तर थीं।

ऐसा लगता था जैसे बोलने में भी उसे बहुत कठिनाई हो रही हो।

'पिशाचराज !....' ब्रजेश ने रोते-रोते कहा—'मैंने ही आपकी सुख-शान्ति भङ्ग की है, मुझे प्राण-दण्ड दीजिए। मैंने ही आपको नष्ट किया है, मुझे श्राप दीजिए...'

'ब्रजेश मेरी मृत्यु पर शोक न करो। जो-जो बातें मैं कहता हूँ, उन्हें ध्यानपूर्वक सुनो। मेरी अवस्था शोचनीय होती जा रही है...खून बहुत निकल जाने से मृत्यु के लक्षण निकट होते जा रहे हैं...

यदि मैं मर गया तो वे भेद मेरे ही साथ जगत से लुप्त हो जायँगे।'

कुछ रुक कर नरपिशाच पुनः कहने लगा—

'आज तक कितने ही मनुष्यों ने मेरा भेद जानने का प्रयत्न किया, परन्तु सब असफल रहे। मेरे विषय में पूर्ण अन्वेषण करना तो दूर रहा, उन्हें यह भी पता न लगा कि मैं रहता कहाँ हूँ ? आज मैं तुमसे अपना वही गुप्त भेद बताने जा रहा हूँ...

इतना कहकर वह कालाभूत उठने का प्रयत्न करने लगा।

ब्रजेश ने उसे उठने में सहारा दिया।

'मुझे खड़ा करो ब्रजेश !...'

ब्रजेश ने अपने कन्धे का सहारा देकर उसे खड़ा किया।

'ब्रजेश !....मेरा यह रूप एकदम बनावटी है ।...' काला भूत बोला।

इस बार ताज्जुब हुआ ब्रजेश को, क्योंकि अब उसकी आवाज बहुत धीमी थी।

उसमें पहले जैसी मेघ गर्जन-सी कठोरता नहीं थी। अब वह किसी मनुष्य की आवाज मालूम पड़ती थी। ब्रजेश ने शीघ्र ही आवाज को पहचान लिया। उसे लगा कि यह आवाज उसने बहुत बार अपने करीब सुनी है।

नरपिशाच कहता गया—

'यह जो तुम मेरा भयंकर रूप देख रहे हो, यह तो एक खास वस्तु की बनी हुई केवल पोशाक है जिसे मैंने अपने ऊपर पहन रखा है...इधर बगल में बटन लगी है, खोलो तो जरा...'

ब्रजेश ने कालाभूत के बगल में हाथ लगाकर वहाँ लगी हुई बटन खोल दी।

साथ ही वह पोशाक जिसे वह अपने ऊपर पहने था उतार ली उसने।

उसकी नवीन सूरत देखते ही ब्रजेश गिरते-गिरते बचा। विस्मय से उसके नेत्र फटे रह गए।

रो पड़ा वह।

'साहब !....' ब्रजेश रोते-रोते बोला !

'शीऽऽ...खामोश ! अपनी जुबान पर मेरा नाम मत लाओ ब्रजेश ! दीवारों के भी कान होते हैं ...मैं नहीं चाहता, लोग यह समझें कि कालाभूत मर गया...

'यदि मुझे मालूम होता कि इस कालाभूत के रूप में आप

छिपे है तो कभी यह दुष्कर कार्य न करता...चाहे कोनवाल मेरे शरीर के टुकड़े कर डालता, फिर भी मैं आपका भेद न बताता ...ओह ! अब हम लोगों की क्या दशा होगी ?...'

'ब्रजेश शान्त ! ...' पिशाचराज ने आहत वाणी में कहा —'मुझे अपने मरने का शोक नहीं है, यदि कुछ है तो अपने आविष्कारों का । आज तक मैंने न मालूम कितनी चीजें अविष्कृत कीं...

उनमें से कुछ साधारण आविष्कार तो इस समय दुनिया के सामने हैं, परन्तु मेरे अन्यतम आविष्कार जिनके द्वारा एक बार मनुष्य मृत्यु पर भी विजय पा सकता है, अभी तक मेरे पेट में हैं । उनमें से एक तो यही पोशाक है ...

इसका आविष्कार स्वयं मैंने ही किया था । इसमें एक डायनुमा लगा है, जिसके द्वारा इस पोशाक में सदैव बिजली का दौरा होता रहता है ...

इसलिए इस पोशाक पर फायर इत्यादि का कुछ भी असर नहीं होता । सोते समय मैं डायनुमा की गति रोक दिया करता था और यही मेरी मृत्यु का कारण हुआ ...

यह पोशाक ऐसी वस्तु के समिश्रण से बनी है, जो बिजली का दौरा रुकते ही बेकाम हो जाती है...

उसका प्रभाव जाता रहता है....

इसके अतिरिक्त तुमने और भी बहुत-सी विचित्रताएँ देखी होगी, जैसे दो-दो मनुष्यों को कन्धे पर बैठाकर बिजली की तरह दौड़ना, एकाएक लुप्त हो जाना, मोटर का बिना छुए स्टार्ट कर देना आदि....

इनमें कोई विशेष कठिनाई नहीं है, क्योंकि —'हिप्ना-

टिज्म (Hypnotism) और मेस्मरेजिज्म (Mypnotism) का पूरा अभ्यास होने कारण, मैं ये कार्य बड़ी सरलतापूर्वक कर सकता हूँ...

मैंने सोच रखा था कि 'गोल्डेन गैंग' का विनाश कर लेने के बाद मैं अपने आविष्कार क्रमशः जगत के समक्ष रखूँगा, परन्तु मेरा सोचना सब निष्फल हुआ। मेरी मृत्यु निकट है।

मेरी पीड़ा बढ़ती जा रही है। इसलिए मैं उन आविष्कारों के विषय में तुमसे कुछ भी नहीं कह सकता। उनके कहने के लिए पर्याप्त समय चाहिए...

मैं तुमसे कुछ बहुत आवश्यक कार्यों का उल्लेख करना चाहता हूँ, उसे तुम सुनो और उसके अनुसार कार्य करो...

तुम जानते हो कि मुझे इस संसार में अपना कहने वाला कोई भी नहीं है, न स्त्री, न पुत्र, न और कोई। इस मायामय संसार में मैं अकेला हूँ...

इसलिए मैं अपनी सब वस्तुएँ तुम्हें प्रदान करता हूँ, यह मकान मेरा ही है...

बाजीराय कटरा वाला मकान, जिसमें सदैव मैं रहा करता हूँ—मेरा ही है। आज से यह दोनों मकान तुम्हारे हुए। तुम इनके अधीश्वर हो...'

पीड़ा बढ़ जाने के कारण कालाभूत थोड़ी देर के लिए ठहर गया।

कुछ देर तक वह लम्बी-लम्बी साँसें लेता रहा।

सुस्ताकर पुनः कहा उसने—

'तुम मेरे भेद की बात किसी से न कहना। कोई भी यह न जानने पाये कि 'कालाभूत' के आवरण में मैं ही काम कर रहा था...

मेरे मरते ही तुम मुझे मेरे कटरा वाले मकान में रख आना ताकि लोगों को कोई शक न हो, क्योंकि लोग यही जानते हैं कि मैं बाजीराय कटरा में रहता हूँ, अतः यदि वे मुझे यहाँ मरा देखेंगे तो उनके हृदय में न जाने क्या-क्या बुरा सन्देह उत्पन्न हो जायगा....

अपने प्रिन्सिपल साहब मिस्टर भल्ला का बहुत ख्याल रखना। हो सकता है, वे दुष्ट उन्हें फिर समाप्त कर देने का प्रयत्न करें। मिस्टर भल्ला से भी मेरा भेद मत बताना....

भल्ला की पत्नी को गायब हुए महीनों हो गये, परन्तु अभी तक उसका पता न लग सका।

मैंने मिस्टर भल्ला से उनकी स्त्री को खोज लाने की प्रतिज्ञा की थी, लेकिन मैं कृतकार्य न हो सका!

तुम उनकी भरसक सहायता करना और उनकी पत्नि को खोज निकालने में कोई बात उठा न रखना...'

इतना कहकर कालाभूत चुप हो गया।

ब्रजेश उनकी सारी बातें ध्यानपूर्वक सुनता आ रहा था। उसे बड़ी ही आत्मग्लानि हो रही थी। वह अपने अपराधों का प्रायश्चित करना चाह रहा था।

रोते हुए उसने कालाभूत से कहा--

'पिशाचराज! मैंने घोर पाप किया है, आप मुझे कोई दण्ड दें। मैं अपने अपराधों का प्रायश्चित करना चाहता हूँ....'

'ब्रजेश बेटे!....' कालाभूत ने कहा--'तुम्हारे लिए सबसे अच्छा प्रायश्चित यही है कि तुम 'गोल्डेन गैंग' का विनाश कर उन दुष्टों से मेरी मृत्यु का बदला लो और

धरती पर बढ़ता हुआ पापियों का बोझ हल्का करो....

मैं स्वर्गलोक में रहकर बड़ी ही उत्सुकतापूर्वक, तुम्हें अपनी मृत्यु का बदला लेते देखूँगा...

यदि तुम्हें मेरी मृत्यु का जरा भी शोक हो तो उन दुष्टों का विनाश अवश्य करना, नहीं तो मेरे हृदय में प्रतिशोधाग्नि की वह प्रज्वलित चिनगारी धधकती रह जायगी

अब तुम एक काम करो, यह पोशाक लेकर भीतर वाले कमरे में चले जाओ....

सामने वाली आलमारी में कई बोतलें रखी हैं। जिस बोतल के लेबिल पर हड्डियों द्वारा गुणा का निशान बना हो और उस पर नर कंकाल खड़ा हो, उसमें एक मशाला भरा है ...

इस पोशाक में जहाँ-जहाँ छिद्र हैं, वहाँ पर उसे लगा दो, जिससे यह फिर अपनी सही हालत में आ जाय...

उसके बाद तुम इसे पहन कर कार्य करना तो वे दुष्ट तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे। उन्हें यह जानकर ताज्जुब होगा कि कालाभूत अभी मरा नहीं, जिन्दा रहकर उनका विनाश करने पर तुला है, इससे वे डरे रहेंगे।... पोशाक रात में पहन कर सोना तो डायनुमा चालू कर देना। मेरी जैसी भूल मत करना, लाओ तुम्हें तरकीब बता दूँ....'

ब्रजेश ने वह पोशाक उठा ली। कालाभूत उसे सभी कलपुर्जों का सञ्चालन विस्तार पूर्वक कर दिखाया।

तत्पश्चात् यह भीतर जाकर उन स्थानों पर मशाला लगाने लगा, जहाँ गोलियों द्वारा छिद्र हो गए थे।

इधर कालाभूत की पीड़ा बढ़ गई।

उस पर अब मृत्यु के लक्षण स्पष्ट दीखने लगे, उसकी आँखें ऊपर को हो गईं, मुँह जरा-सा खुल गया, शरीर अकड़ गया और उसके प्राण-पखेरु अनन्त विश्राम के लिए उड़ गये।

जब ब्रजेश लौटकर आया तो देखा !

कालाभूत के शरीर पर कहीं जीवन के लक्षण नहीं थे। सुबक कर रो पड़ा वह।

उसके होठों से निकला—'चले गये पिशाचराज !...'

रोते-रोते ही उसने पोशाक पहन ली, क्योंकि अब उसे पिशाचराज की अन्तिम आज्ञा पालन करनी थी।

अपनी गलती पर उसे गहरा दुख था।

उसकी आँखों से आँसू बहते रहे।

कालाभूत का शव उठाकर वह फाटक के बाहर आ गया। अपनी सायकिल उठाकर उसने दूसरे कन्धे पर रखी और डायनुमा चालू कर दिया।

दूसरे ही क्षण उसके पावों में बिजली की गति आ गई।

कालाभूत बनकर वह शहर की ओर भाग चला।

नेत्रों से आँसू बहते रहे। आबादी की ओर कोई गा रहा था धीरे-धीरे।

रंग-रंग में सोजे-गम हैं, अरमा मचल रहे हैं।
वारिश भी हो रही है, और घर भी जल रहे हैं।
आँखों में मेरी आँसू काँटों पै जैसे शबनम,
दम-भर की जिन्दगी पर कैसे उछल रहे हैं ?

दुनिया भर में हाहाकार मच गया।

बिजली की तरह यह समाचार कोने-कोने में फैल गया कि जगत के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक मिस्टर गुप्ता आज प्रातः-काल अपने बिस्तरे पर मृत पाये गए।

उनके शरीर पर गोलियों के पचीसों घाव थे।

अपने सर्वश्रेष्ट वैज्ञानिक की इस दुर्दशाजनक मृत्यु पर संसार घबड़ा उठा। सभी का मुख आँसुओं से भींग उठा।

देश-विदेशों से लाखों शोक-सन्देश कालेज के पते पर आने लगे।

मिस्टर भल्ला की आँखें रोते-रोते सूज गईं।

नेटिव कालेज के विद्यार्थियों, प्रोफेसरों तथा चपरासियों पर दुःख का पहाड़ टूट पड़ा। सभी मिस्टर गुप्ता के लिए व्याकुल हो उठे।

दुनिया भर में सभी जगह शोक सभाएँ हुईं।

सभी ने मिस्टर गुप्ता की मृतात्मा की शान्ति के लिए भगवान् से प्रार्थना की।

उस दिन नेटिव कालेज के बृहद् हाल में भी एक शोक सभा हुई जिसमें मिस्टर भल्ला ने रोते हुए, हिचकियाँ लेते हुए विद्यार्थियों से पूरित हाल में इस प्रकार कहना आरम्भ किया—

'बालकों!

मिस्टर गुप्ता हमारे कालेज के गौरव थे।

वे दुनिया के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक कहे जाते थे। आज उनकी आश्चर्यजनक मृत्यु से संसार थर्रा उठा है, लोगों

का अनुमान है कि शायद मिस्टर गुप्ता बारूद से कोई 'एक्सपेरिमेण्ट' कर रहे थे।

उसी से उनकी यह दशा हुई।

निष्ठुर काल के आगे किसी का वश नहीं, अतः अब उनके लिए शोक करने से कुछ लाभ नहीं।

हमारी ओर से कोई ऐसा कार्य अवश्य होना चाहिए, जिससे मिस्टर गुप्ता के प्रति हमारे प्रगाढ़ प्रेम का दिग्दर्शन हो सके।

वह कार्य यह है कि कालेज के कम्पाउण्ड में ही मिस्टर गुप्ता का एक स्मारक भवन बनवाया जाए, जिसमें उनकी समाधि भी रहे। मेरे पास मिस्टर गुप्ता की चिता भस्म है। वही इस समाधि में यत्नपूर्वक रखी जायगी।

मैं इस कार्य के लिए एक लाख रुपया दूँगा, आशा है—सब लोग इन बात का सहर्ष अनुमोदन करेंगे...'

इतना कहकर मिस्टर भल्ला बैठ गये।

इसके बाद अपना अश्रुपूर्ण चेहरा लिए ब्रजेश उठा।

उसने यों कहना प्रारम्भ किया—

'हमारे पूज्यवर प्रिन्सिपल साहब ने जो प्रस्ताव आपके समक्ष रखा है, वह प्रशंसनीय है। मैं प्रिन्सिपल साहब के कथन का अक्षरशः अनुमोदन करता हूँ और अपने पास से पचीस हजार रुपये देने के लिए प्रतिज्ञा करता हूँ...'

ब्रजेश बैठ गया।

इसके बाद कई प्रोफेसरों तथा विद्यार्थियों ने अपने-अपने मतानुसार इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया और कुछ देने की प्रतिज्ञा की।

इस प्रकार कुल धन दो लाख तक पहुँच गया।

शोक सभा समाप्त हो गई।

सब विद्यार्थी तथा प्रोफेसर अपने-अपने घरों को प्रस्थान कर गये।

वहाँ केवल ब्रजेश और उसके मित्र रह गये।

ब्रजेश ने उन्हें कुछ कार्यवश रोक लिया था।

जब सारे कालेज में सन्नाटा छा गया, आस-पास कोई न रह गया तो सभी मित्र कमरे में आ बैठे।

ब्रजेश ने मित्रों से कहना प्रारम्भ किया—

'मित्रों !

समाज का उद्धार तथा दुष्टों का विनाश युवकों पर ही निर्भर है ..देश का भविष्य सुधारने के लि हमें अभी से प्रयत्नशील रहना चाहिए।

हम भी युवक हैं, हममें भी नया र ञ्चारित ह रहा है तो क्या हमारा कर्तव्य नहीं है कि हम समाज क कष्ट निवारण करने में सहायक हों ?'

'अवश्य...समाज के लिए हमें सर्वस्व बलिदान करने को सदा तैयार रहना चाहिए...' ब्रजेश के एक मित्र ने कहा।

'आप सबने 'गोल्डेन गैङ्ग' नामक बिनाशकारी संस्था का नाम तो जरूर सुना होगा...' ब्रजेश फिर कहने लगा—'उस कमेटी ने कितने अत्याचार किये, कितने घरों को उजाड़ डाला और कितनी ही बहू-बेटियों के सुहाग लूटे, परन्तु कोई भी उनके सामने न आ सका।

सरकार भी उनसे हार गई, जासूस भी उनसे परेशान हो गए।

एक दिव्य पुरुष ने उनके विनाश का बीड़ा उठाया, परन्तु वह भी काल-कवलित हुआ...

एक दिन मैं और मेरी बहन प्रेमलता उन दुष्टों के हाथ पड़ गये। उन लोगों ने मेरे ही सामने प्रेमलता को विवस्त्र कर डाला और...'

'ऐसा !...' कई साथ बोले।

'ब्रजेश !....' एक प्रमुख युवक ने कहा—'अगर यह बात है तो हम उनसे इसका बदला जरूर लेंगे। सुनकर हम सबका खून खौल उठा है। अगर उन्हें मिटाया न गया तो वे पापी इस धरती को जाने कब तक नर्क बनाते रहेंगे...'

'हम सब तैयार हैं...' सबने एक स्वर से कहा।

उनके चेहरे पर क्रोध की लालिमा थी और नेत्रों में थी प्रतिशोध की प्रज्वलित अग्नि !

'मित्रों !...' ब्रजेश बोला—' अब उस कमेटी के कर्ण-धारों का नाम सुनो ! उसमें केवल छः मेम्बर हैं, जिनमें पाँच तो हमारे सहपाठी युसुफ, करीम, अब्दुल्ला, रज्जन तथा श्यामसरोज ही हैं और छठवें हैं इस शहर के कोतवाल रतन सिंह !...

भला सोचो तो कि सरकार जिन पर विश्वास करके रक्षा के लिए भेजती है, वही हमारा सर्वनाश करते हैं, वही हमें लूटते हैं और वही हम पर शासन करते हैं....

हम उनके विरुद्ध अपना सर भी नहीं उठा सकते, तो क्यों न ऐसे शासकों को धोखे से कुचल दिया जाय...

कहते-कहते ब्रजेश आवेश से भर उठा।

'हम सब तैयार हैं।' ब्रजेश के मित्रों ने कहा।

'तो ठीक है, आज से ही हम लोग प्रयास करेंगे, जब भी

आज कल में मौका हाथ आयेगा, उन्हें हम समाप्त कर देंगे। इस कार्य में हमारी मदद कालाभूत भी करेगा...'

'कालाभूत कौन ?' चौंककर एक मित्र ने पूछा।

'वह एक अतुलित शक्तिशाली पिशाच है, उसने इस गैंग के विनाश का बीड़ा उठाया है...

उसे देखकर तुम लोग डरना नहीं, वह ऐसे बहुत से अद्‌भुत कार्य कर सकता है। उसे देखकर तुम लोग भय-भीत हो सकते हो...मैं अभी उसी के पास जाऊँगा। वह उसी निश्चित स्थान पर मिलेगा।

बेधड़क होकर तुम लोग उसकी मदद करना! अभी थोड़ी देर पश्चात् तुम लोगों के द्वार पर एक जीप आयेगी उसमें एक आदमी बैठा होगा, वह तुम्हें एक-एक नकाब और रिवाल्वर पहुँचा देगा...'

थोड़ी देर गुप्त-वार्ता होती रही, इसके बाद सभा समाप्त हो गई।

● ●

मिस्टर भल्ला इधर बहुत दिनों से चिन्तित रहा करते थे।

उनकी धर्म पत्नि सुशीला देवी को लुप्त हुए लगभग चार महीने हो गये थे, परन्तु अभी तक उनका कुछ भी पता न लगा था, मिस्ठर भल्ला ने उन्हें खोजने का बहुत प्रयत्न किया मगर सब निष्फल हुआ।

इससे उनके हृदय पर गहरा आघात पहुँचा।

उन्हें खाने-पीने तक से घृणा हो गई।

उनके इस परिवर्तन को देख सभी चिन्तित हो उठे !

अभी उन पर से इस शोक-साम्राज्य की छाया हटी भी न थी कि एक और बज्रपात हुआ।

मिस्टर गुप्ता की मौत ने तो उन्हें और भी पागल कर दिया।

अब वे विरक्त-से हो गये।

वे सदैव अपने कमरे में बैठे-बैठे रोया करते थे। कालेज में उन्हें जब कभी मि० गुप्ता का ध्यान आ जाता तो रो पड़ते।

शिक्षक तथा विद्यार्थीगण मिस्टर भल्ला की यह शोचनीय दशा देखकर बहुत उद्विग्न थे। उनकी आँखों में आँसू देखकर विद्यार्थी उदास हो जाते, एकाध तो द्रवित होकर रोने लगते।

वह सुरम्य कालेज, जो कुछ महीना पहले बालकों के कलरव से गूँजता रहता था, अब आँसुओं से सींचा जाने लगा।

बहुत प्रयत्न करने पर भी मिस्टर भल्ला की दशा सुधरती नहीं थी।

अक्सर लोग उन्हें घेरे बैठे रहते और सांत्वना दिया करते।

× × ×

उस दिन।

मिस्टर भल्ला अपने कमरे में चिन्तामग्न बैठे थे। उनकी आँखें आसुओं से तर थीं। उनका प्यारा कुत्ता 'टेनी' भी उनके पैरों के पास सर नीचा किए ऐसे बैठा था, मानों अपने मालिक के दुख से वह भी दुखित हो।

इतने में ही मिस्टर भल्ला के चार वर्षीय पुत्र ने कमरे में प्रवेश किया।

अपने पिता की यह अवस्था देखकर वह नन्हा-सा बालक कुछ देर तो विस्मय करता हुआ खड़ा रहा, तत्पश्चात् मिस्टर भल्ला के गले से लिपट गया।

उसने तोतली-भाषा में पूछा—'तुम लोते ओ बाबूदी?...'

'क्या करूँ बेटा!...' मि० भल्ला ने रुँधे गले से कहा।

इतने में ही बालक फिर पूछ उठा—'बाबूदी! अम्माँ कआँ ए?...'

अब मिस्टर भल्ला अपने को न सँभाल सके। वे जोरों से रोने लगे।

बेचारा बालक, उनका करुण स्वर सुनकर विस्मित नेत्रों से उनकी ओर देखने लगा!

इसी समय पोस्टमैन ने वहाँ प्रवेश किया और मिस्टर भल्ला के हाथ में एक हरा-सा लिफाफा रख दिया।

मिस्टर भल्ला ने लिफाफा खोलकर पढ़ा।

लिखा था उसमें—

मिस्टर भल्ला!

अपनी पत्नी की खोज में व्यर्थ की परेशानी न उठाओ। उसने हम लोगों की काम-लिप्सा पूरी करने के बाद स्वर्ग की राह ले ली है! अब उसे पाने की आशा छोड़ दो। वह स्वर्ग में तुम्हारी राह देखती होगी।

हमने सुना है, तुम हमारे पीछे जासूस लगाने का प्रयत्न कर रहे हो। ऐसा करने से खतरा उठाना पड़ेगा।

'गोल्डेन गैङ्ग'

मि० भल्ला ने हृदय पर वज्र रखकर पत्र पढ़ा, उन्हें गोल्डेन गैंग की जानकारी पर आश्चर्य हुआ। इससे पहले वे सचमुच ही एक जासूस से मिले थे। उसने उन्हें उनकी पत्नी की खोज करने का आश्वासन भी दिया था।

पत्र पढ़ने के बाद उनकी आँखों से आँसुओं की कुछ और बूंदे टपक पड़ीं।

उन आँसुओं की वेदना कौन समझे ?

पत्नि का विछोह पति के लिए कितना कष्टदायी होता है !

कई दिन गुजर गए, उन्होंने कुछ भी न खाया-पीया। पत्नी की मृत्यु जान उन्हें हार्दिक पीड़ा थी।

रोते-रोते आँखों के अश्रु चुक गये।

अब उनका सारा ध्यान समाधि निर्माण की ओर लग गया। मि० गुप्ता की मृत्यु के दूसरे ही दिन से उनका 'स्मारक-भवन' बनना प्रारम्भ हो गया था।

मि० भल्ला अपने योग्य प्रोफेसर की स्मृति को अमर बनाने का घोर प्रयत्न करने लगे।

● ●

इन दिनों गोल्डेन गैंग का कार्य खूब जोरों से चल रहा था। वे दुष्ट अब बेखटके अपना कार्य करने लगे थे। क्योंकि उनकी दृष्टि में, गैंग के कार्यों में बाधा पहुँचाने वाला कालाभूत कभी का परलोकगामी हो चुका था।

दिनों-दिन कमेटी का आतंक बढ़ता जा रहा था।

एक दिन !

शाम के लगभग चार बजे थे। कोतवाल रतन सिंह अपने कुछ सिपाहियों के साथ शहर का प्रबंध करने निकला था।

उसकी निगाहें चारों ओर घूम रही थीं।

शहर के इस भाग में प्रदर्शनी लगी थी। सिपाही लोग थोड़ी-थोड़ी दूर पर घूमते हुए भीड़ पर नियंत्रण किये थे। कोतवाल रतनसिंह एक किनारे फुटपाथ पर खड़ा था।

तभी—

एक नवयुवती, जिसका शायद थोड़े ही दिनों पहले विवाह हुआ था, कोतवाल के पास आकर खड़ी हो गई। आकर्षक परिधानों और वेशकीमती आभूषणों से सजी युवती आकाश की अप्सरा-सी प्रतीत होती थी।

उसे देखकर कोतवाल के मुँह में पानी भर आया।

उस युवती ने कहा—'प्लीज, बताइए वासलीगञ्ज के लिए टैक्सी कहाँ से मिलेगी ? मैं रास्ता भूल गई हूँ !'

कोतवाल ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा और मुस्कुरा उठा।

उसके नेत्रों में वासना का ज्वार उमड़ आया।

'यदि आप मेरे साथ कोतवाली तक चलें तो मैंवहाँ से आपको पुलिस की जीप में आपके घर तक भिजवा दूँगा....'

युवती उसके चेहरे और कथन से ही उसकी दुष्टता भाँप गई, उसका गोरा मुख लज्जा से लाल हो गया।

क्रोध से होंठ चबाती हुई वह एक ओर चल पड़ी।

घृणा से उसने सड़क पर थूक दिया।

'सुनो जाने मन ?...' कोतवाल ने इधर-उधर सतर्क दृष्टि से ताककर पुकारा।

युवती ने पलट कर भी नहीं देखा।

कोतवाल के आस-पास कोई नहीं था, परन्तु तभी मुँह पर किसी का भरपूर तमाचा आ पड़ा।

तमाचा इतनी जोर से पड़ा कि उनकी नाक से रक्त बहने लगा। उसके मुख से चीख निकल पड़ी और इसके बाद उस पर तड़ातड़ लात-घूँसे पड़ने लगे। कोतवाल को अपने चारों ओर कोई न दिखाई दिया। वह पृथ्वी पर गिर पड़ा।

दो सिपाही, जो दूर खड़े उसे गिरता-पड़ता देख रहे थे, आश्चर्य से भर उठे।

दोनों दौड़कर पास आये और उन्होंने कोतवाल को उठाकर खड़ा कर दिया!

'छोड़ दो इसे, तुम लोग जाकर अपना काम करो। यह दुष्ट अभी-अभी एक शरीफ युवती को छेड़ रहा था....' कहने के साथ ही एक भीमकाय काली आकृति प्रकट हुई।

दोनों सिपाही और कुछ राहगीर वहाँ हक्के-बक्के खड़े हो गये।

उस नर पिशाच का सारा शरीर रीछ जैसे बालों से ढँका था। आगे बढ़कर उसने कोतवाल को एक झापड़ फिर रसीद किया। कोतवाल की खोपड़ी झन्ना गई।

पिशाच को देखकर वह काँप उठा।

'तुम ?' कोतवाल घिघियाकर बोला।

'हाँ, मैं ?...तुम समझते थे क्या मैं सचमुच मर गया ? याद रखो मुझे कोई मार नहीं सकता। मैं ईश्वर का भेजा हुआ कालाभूत हूँ, तुम जैसे पापियों को धरती पर से उठाने के लिए ही मेरा अवतार हुआ है....'

पीछे खड़े सिपाहियों ने मौका देखकर राइफलें भरीं और कालाभूत की ओर दाग दीं।

धायँ ! धायँ !!

सिपाही दंग रह गये, पिशाच का बाल बाँका भी न हुआ।

'ह: ह: ह:...' उसने अट्टहास कर दाँत किटकिटाये।

बोला—'बेवकूफों ! तुम्हारी राइफलें मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं, इस बात को तुम्हारा यह नालायक कोतवाल खूब जानता है। इसी से मेरा परिचय पूछना।'

इतना कहकर कालाभूत ने उन दोनों सिपाहियों के कान पकड़ ऐंठ दिये। वे दोनों मारे दर्द के चिल्ला उठे। ऐसा लगा उन्हें जैसे किसी ने शिकंजे में उनका कान दबा दिया हो।

फिर कालाभूत ने कोतवाल को पीछे से एक लात जमाई और अदृश्य हो गया।

कोतवाल जमीन पर गिरकर धूल सूँघने लगा।

दूसरे दिन समाचार पत्रों द्वारा यह घटना सम्पूर्ण शहर में फैल गई। कालाभूत के कारनामे सुनकर जनता में अत्यन्त कौतूहल फैल गया।

• •

उस दिन सरे आम लात खाने के बाद भी दुष्ट कोतवाल अपनी करनी से बाज नहीं आया।

उसने कालाभूत को खोजने के तमाम प्रयास किए, परन्तु उसका कहीं भी सुराग न मिल सका।

लालगञ्ज कस्बे में इन दुष्टों ने जो मकान लिया था, वह एकदम किनारे पर एकान्त में पड़ता था। वह मकान मोटे-मोटे पत्थरों का बना हुआ था।

उसमें एक तहखाना भी था।

जितनी लड़कियाँ भगाकर लाई जाती थीं, सब उसी तहखाने में रखी जाती थीं।

आधी रात का समय।

अँधेरे का अन्धेर मचा है चारों ओर।

कृष्ण पक्ष की भयावनी काली रात अपना साम्राज्य फैलाये है। लालगञ्ज के उस मकान में जिसमें गोल्डेन गैंग के भीषण दुष्कृत्य हुआ करते हैं इस समय पूर्ण अन्धकार छाया हुआ है।

केवल एक कोठरी से प्रकार की क्षीण रेखा आ रही है, और एक बालिका का रुदन तथा कुछ मनुष्यों के बोलने का स्वर सुनाई पड़ रहा है।

एकाएक एक मोटर तेजी के साथ आकर उस मकान के सामने रुकी और उस पर से धड़ाधड़ दस-बारह नकाबपोश उतरे।

उन सबके हाथों में एक-एक रिवाल्वर था तथा उनकी भयङ्कर काली आँखें नकाब के भीतर अङ्गारे की तरह चमक रही थीं।

उन नकाबपोशों में एक ने धीरे से कहा—'मालूम होता है कि गोल्डेन गैंग का दुष्कृत्य इस समय जारी है.... सुनो ध्यान से, मकान में लड़की के रोने की धीमी आवाज तथा कुछ मनुष्यों के बोलने का हल्का शब्द सुनाई पड़ रहा है...

दूसरे ने कहा—'हाँ! ऐसी ही बात है। भीतर कैसे चला जाय?'

'कमन्द द्वारा ' तीसरे ने कहा!

चौथा बोला—'ठीक है...'

'लेकिन पहले सुनो, अन्दर क्या हो रहा है? अभी तक

कालाभूत नहीं आया...' पहले ने कहा।

'मैं तुम्हारे पास ही खड़ा हूँ दोस्तों!' तभी कहीं से आवाज आई और कालाभूत प्रकट हो गया।

उसे देखकर नकाबपोश हर्षित हो उठे।

भीतर से कोतवाल की आवाज आ रही थी—

'यह छोकरी ऐसे नहीं मानेगी! मेरी कलाई में काट लिया है इस बदमाश ने। कल इसी के पीछे मुझे उस चौराहे पर कालाभूत से मार खानी पड़ी, उस दुष्ट को बाद में देखूँगा, पहले इसके लिए सजा नम्बर नौ की व्यवस्था करो....'

कोतवाल की आज्ञा सुनकर युसुफ आलमारी खोल सामान निकालने आगे बढ़ा।

इस समय वे सब नकाबों से अपने चेहरे ढँके थे।

बाहर कालाभूत ने अपने नकाबपोश साथियों को सतर्क करते हुए कहा—'सावधान अब शीघ्रता करो, मैं जाकर उसे बचाता हूँ, अन्यथा वे दुष्ट उसकी दुर्दशा कर डालेंगे....तुम लोग दनादन फायर शुरू कर देना...'

इतना कहकर कालाभूत गायब हो गया।

दूसरे ही पल वह छलाँग मारकर भीतर जा पहुंचा।

इधर नकाबपोशों ने कमन्द निकाली और उसे ऊपर फेंक दी। वह ऊपर जाकर अटक गई। इसके बाद वे नकाबपोश बारी-बारी से ऊपर चढ़ गये और वहाँ से भीतर की ओर कूद पड़े।

केवल एक नकाबपोश मोटर के पास रह गया।

वह उद्विग्नता से भीतर गए नकाबपोशों की प्रतीक्षा करने लगा तथा भीतर से आते हुए प्रत्येक शब्द को सुनने लगा।

काफी देर तक सन्नाटा रहा।

कोई भी आवाज न आई। परन्तु इनके साथ ही पिस्तौल का शब्द हुआ और अन्दर से धम्-धम् की आवाजें आने लगीं।

मकान में खूब उछल-कूद मची हो जैसे।

दनादन फायर होने की आवाजें सुनाई पड़ने लगीं। वह नकाबपोश उत्सुकता से इधर-उधर टहलता रहा। थोड़ी ही देर में उसके कानों में, मकान से आती हुई एक जोर की चीख सुनाई पड़ी।

सुनते ही नकाबपोश बुदबुदा पड़ा—'हैं! यह तो अपने ही साथी सुरेन्द्र की आवाज है, लगता है... उस बेचारे पर कोई आफत आई है।'

वह नकाबपोश तेजी से उधर झपटा, जाकर देखा तो उसे अपने ही साथी मुंडेर पर दिखाई पड़े। सब बारी-बारी से उतरने लगे।

सबसे पीछे एक नकाबपोश एक घायल नकाबपोश को अपनी पीठ पर लादे नीचे उतरा।

नीचे रह जाने वाले नकाबपोश ने उन सबों से पूछा--'क्या हुआ ?'

एक ने कहा-'सब समाप्त हो गया, गैंग का अस्तित्व समाप्त हो गया। सभी राक्षस काल के घाट उतार दिए गए।'

'सुरेन्द्र को क्या हुआ ?....' पुनः उसी नकाबपोश ने घायल नकाबपोश की ओर संकेत कर कहा।

'इन्हें पैर में गोली लगी है। हमारे बचाते-बचाते भी कोतवाल ने इन पर फायर कर दिया। खैर, कोई चिन्ता नहीं, ये शीघ्र अच्छे हो जायँगे।' उत्तर मिला।

'भाइयों! मेरी चिन्ता न करो। मैं शीघ्र ही अच्छा हो जाऊँगा। दुष्टों को सजा मिल गई—यह हमारे लिए

खुशी की बात है ...' उस घायल नकाबपोश ने धीमी आवाज में कहा ।

तभी एक ओर से अपनी पीठ पर अर्द्धमूछित किसी युवती को लादे कालाभूत आ पहुँचा ।

आते ही उसने उसे कार के पिछले हिस्से पर लिटा देना चाहा । युवती बहुत डरी हुई थी, तनिक में ही उसे होश आ गया ।

बैठते ही पूछा उसने—'तुम लोग कौन हो ?....'

'घबराओ नहीं, हम लोग तुम्हें तुम्हारे घर तक सकुशल पहुँचा देंगे ! यह बताओ तुम हो कौन ?' कालाभूत ने पूछा ।

'मैं यहाँ के सिटी मजिस्ट्रेट कालिका प्रसाद की बहू हूँ....' उस नवबधू ने बताया ।

'ओह !.... अब तुम कार में ठीक से बैठ जाओ, हम अभी तुम्हें पहुँचाये देते हैं !' कालाभूत बोला ।

युवती को सान्त्वना हुई । वह चुपचाप सीट पर बैठ गई ।

फिर एकाएक कुछ सोचती हुई बोली-'इस मकान में एक तहखाना भी है, उसके भीतर दो औरतें और बन्द हैं...'

'तुम कैसे जानती हो ?'

'मैं भी वहीं बन्द थी, अभी-अभी वे दुष्ट मुझे निकाल लाए और तभी ....'

'ठीक है, मैं उन्हें भी जाकर खोजता हूँ ।' कहकर कालाभूत अपने साथियों से बोला—'तुम लोग इन्हें पहुँचाकर घर चलो, मैं थोड़ी देर में आता हूँ...'

'कहिए तो हम दो-चार आदमी यहाँ ठहर जाएँ, कहीं आप पर कोई मुसीबत न आ जाए....'

'इसकी चिन्ता न करो दोस्तों ! तुम्हें बहुत तकलीफ उठानी पड़ी...' कृतज्ञ होकर कालाभूत बोला।

'पिशाचराज !....' एक नकाबपोश बोला–'तुम धन्य हो, तुम्हीं इस भयंकर संस्था के नाश के कारण हो....'

सब मोटर में जा बैठे। मोटर घूमकर शहर की ओर अविराम गति से भाग चली !

× × ×

कालाभूत किसी प्रकार खोजकर तहखाने के अन्दर जा पहुँचा। इतना बड़ा तहखाना देखकर उसे अचरज हुआ।

उसके भीतर सैकड़ों व्यक्ति वर्षों तक कैद रखे जा सकते थे।

तमाम आदमियों के एक साथ मिलकर चिल्लाने पर भी ऊपर आवाज पहुँचनी मुश्किल थी। वहाँ पर आठ-दस कमरे थे जिनके द्वारों पर बड़े-बड़े सीखचे लगे थे। उनमें रहने वाले कैदी आपस में एक दूसरे से बात-चीत कर सकते थे।

कालाभूत ने सभी कमरे खोज डाले।

दो स्त्रियों के अलावा पूरे तहखाने में कोई नहीं था। हल्के प्रकाश में उसने उन दोनों की ओर देखा। वे दोनों एक-दूसरे से बातें करने में मग्न थीं।

एक स्त्री अधेड़ आयु की, दूसरी बीस-बाईस की छोकरी।

उसके चेहरे पर चेचक के दाग थे, जिससे उसका रंग कुछ साँवला पड़ गया था।

कालाभूत अदृश्य रहकर ही दूर से उनकी बातों का आशय समझने का प्रयत्न करने लगा।

अधेड़ स्त्री बोली–'मैं मिर्जापुर की रहनेवाली हूँ। पता

नहीं ये दुष्ट मुझे कहाँ ले आए हैं, कई दिन बेहोश रहने के कारण मैं कुछ जान न सकी...मैं वहाँ के प्रिन्सिपल की पत्नि हूं। यह दुष्ट चाहते थे कि मैं अपने पति से कहकर मिर्जापुर में एक गर्ल्स कालेज की स्थापना करूँ, और फिर इन्हें अपनी हविस पूर्ति के लिए एक-एक युवती सौंपती रहूँ...'

कालाभूत चौंक पड़ा।

उसने गौर से देखा, सचमुच ही वह नेटिव कालेज के प्रिन्सिपल मि० भल्ला की पत्नि थीं। उन्हें पहचान कर वह प्रसन्न हो उठा।

वह स्त्री कहती जा रही थी—

'काफी दिनों से यह दुष्ट मुझे लालच दे रहे हैं, इसीलिए इन्होंने अब तक मुझे जिन्दा रख छोड़ा है। बहुत-सी कुमारियां मुझे मारकर दिखाई गईं कि बात न मानने पर मेरी भी यही हालत होगी। कई दिनों से मुझसे कोई पूछने नहीं आया...अभी बाहर से गोली चलने की आवाज आ रही थी, पता नहीं क्या हो रहा था।'

युवती ने कुछ जवाब नहीं दिया।

दोनों गम्भीरता से कुछ सोचती रहीं।

थोड़ी देर पश्चात मि० भल्ला की पत्नी ने पूछा—

'तुम यहाँ कैसे आ पड़ी ?'

युवती ने ठण्ढी साँस लेकर कहा—'मैं एक अभागिन दुखिया हूँ बहन जी ! मेरी कहानी बहुत बड़ी है। मैं भी मिर्जापुर की ही हूं।....मैं पढ़ती थी, उन्हीं दिनों एक युवक से प्रेम करने लगी। वह मुझे बहुत चाहता था, मैं भी उसे हृदय से चाहती थी।

लेकिन कुछ दिनों बाद, मैं एक दूसरे ही युवक के चक्कर में पड़ गई। वह युवक मेरे तन का लोभी था। मेरे साथ वह

खिलवाड़ करता रहा। उसी के कहने से मैंने अपने सच्चे प्रेमी को धोखा दे दिया, जिससे उसे बहुत निराशा हुई।

उसका पता नहीं क्या हुआ। मुझे उसी पापी की सजा मिल रही है...उस युवक ने मुझे फिलम अभिनेत्री बनाने की लालच दिया। मैं अपने पिता की तिजोरी से लगभग पचास हजार रुपया लेकर उसके साथ भाग गई....

कुछ दिन हम बम्बई में रहे ...वहाँ मुझे चेचक निकल आई तो एक दिन वह धोखेबाज सारा रुपया लेकर जाने कहाँ भाग गया...

लोगों ने मुझे अस्पताल में भर्ती करा दिया। वहाँ से निकलने के बाद, छुपकर मैं कहाँ-कहाँ रही, कितने दुःख भागी–यह एक लम्बी दास्तान है...

मैं मिर्जापुर किसी प्रकार पहुँची। यह सोचकर चली थी कि अपने पिता के पाँवों पर गिर माँफी माँग लूँगी—वे अवश्य क्षमा कर देंगे। लेकिन उन तक पहुँचने से पहले ही इन दुष्टों के चक्कर में फँस गई ....'

इतना कहकर युवती ने गहरी साँस ली और चुप हो गई।

कुछ देर मौनता रही।

कोई कुछ न बोला। कालाभूत को उस युवती की आवाज पहचानी लग रही थी। उसने प्रकट होकर कहा–'अब चलो, तुम्हें इन दुष्टों से सदा के लिए छुटकारा मिल गया....'

दोनों चौंक पड़ीं।

'कौन हो तुम ? ...' मि० भल्ला की पत्नी ने पूछा। उनके मुख से चीख निकलते-निकलते बची।

'मैं कालाभूत हूँ। 'गोल्डेन गैंग' को समाप्त करने के लिए आया था, वे सब मेरे हाथों मारे गए। आप मेरे

साथ निडर होकर चलिये, मैं जानता हूँ—आप प्रिन्सिपल साहब की पत्नी हैं...वे मेरे लिए पिता तुल्य हैं...'

मि० भल्ला की पत्नी कुछ आश्वस्त हुईं।

उन्होंने कुछ कहना चाहा कि कालाभूत पुनः बोल पड़ा-

'आप जल्दी चलें, अन्यथा थोड़ी ही देर में पुलिस आती होगी।'

'आप हमें कहाँ ले चलेंगे ?...' भल्ला की पत्नि ने पूछा।

'मैं आपको आपके घर पहुँचा दूँगा, आप मिर्जापुर से कुछ ही मील दूरी पर हैं। इन्हें भी ये जहाँ कहीं बतायेंगी, पहुँचा दिया जायगा...'

कालाभूत ने उन्हें सीखचों के बाहर निकाला। अन्धकार में कई सुरंगें, कमरे इत्यादि पार करके वे बाहर आ गए।

'तुम लोग मेरे कन्धों पर बैठ जाओ....' कालाभूत ने आदेशात्मक स्वर में कहा।

दोनों नारियाँ एक-दूसरे का मुँह ताकने लगीं।

'देर न करो, तुम्हें किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होगी और हाँ, तुम कहाँ जाओगी ?....' वह युवती की ओर मुड़कर बोला।

युवती कुछ सोच में पड़ गई।

ऐसा प्रतीत होता था—जैसे वह कोई भूली बात याद करने का प्रयास कर रही हो।

बोली वह—'आप ब्रजेश कुमार का घर जानते हैं ?'

कालाभूत ने चौंककर युवती को देखा !

फिर तत्काल ही उसे युवती की कहानी याद आ गई जिसे वह अभी थोड़ी देर पहले सुनायी थी।

बोला वह—'ठीक है, तुम्हें वहां पहुँचा दिया जायगा...'

दोनों ही कालाभूत के कन्धे पर सवार हो गईं।

कालाभूत के पैरों में देखते-देखते ही मोटर जैसी गति आ गई। उसका अपरिमित बल देखकर दोनों नारियाँ आश्चर्य से भर उठीं।

बीस मिनट दौड़ने के पश्चात् कालाभूत प्रिन्सिपल साहब के बँगले के सामने जा रुका।

कालाभूत युवती से बोला—'तुम यहीं रुकी रहो थोड़ी देर, मैं इन्हें पहुँचाकर अभी आया....'

'तुम चाहो तो मेरे घर चल सकती हो !....' मि० भल्ला की पत्नी बोलीं—'जब तुम्हारी इच्छा हो और तुम्हें अपने घर का पता लग जाय तो चली जाना...'

युवती कुछ कहे इसके पहले ही कालाभूत ने कहा—'आप निश्चिन्त रहे माँ जी, जहाँ ये जाना चाहती हैं...इन्हें पहुँचा दिया जायगा...अन्यथा फिर आप तो बनी ही हैं...'

कालाभूत से माँ सम्बोधन सुनकर भल्ला की पत्नी चौंकी, बोलीं—'भूतराज ! तुम मुझे माँ कहते हो...'

कालाभूत हँस पड़ा विकराल हँसी।

बोला—'आप तमाम लोगों की माँ हैं...'

उस युवती को अश्वासन देकर मि० भल्ला की पत्नि भीतर चल पड़ीं।

मिस्टर भल्ला के कमरे में प्रकाश हो रहा था। वे अब तक जाग रहे थे। जिसकी गृहस्थी वीरान हो गई हो, उस सांसारिक प्राणी को भला नींद कहाँ ?

कुछ लिखते-लिखते मि० भल्ला थक गये थे। इस समय वे हथेलियों पर अपना चेहरा टिकाये सुस्ता रहे थे। बहुत ही उदास लग रहे थे वह।

अपनी पत्नी के साथ पीछे आते हुए कालाभूत पर उनकी दृष्टि पड़ी तो उनके मुँह से खुशी की चीख निकल पड़ी।

दौड़कर वे अपनी पत्नी से जा लिपटे।

'तुम आ गई...आ गई तुम ?....' भरे गले से उन्होंने कहा।

कहते-कहते खुशी और दुःख के आवेग रो पड़े वे।

मिस्टर भल्ला की पत्नी भी सुबक कर रोने लगीं।

बिछड़े हुए दो प्राणियों का अद्भुत मिलन था। उनके दिल में अपार करुणा थी। एक दूसरे के लिए हजारों अरमान इकट्ठे हो गये थे।

उस सुखद सम्मिलन का दुःख और खुशी कौन जाने ?

उनके दिलों में उठ रही भावनाओं का पार कौन पाये ?

काफी देर बाद मि० भल्ला को होश आया कि यहाँ पर कालाभूत भी उपस्थित है। अपनी स्थिति का भान होते ही वे कुछ लज्जित हो उठे।

वे कालाभूत के चरणों पर झुकने के लिए आगे बढ़े तो उसने उन्हें गले से लगा लिया।

'तुम महान हो कालाभूत !...' मिस्टर भल्ला ने कहा—'तुम्हें ईश्वर ने यह रूप देकर कितना महान बनाया है, इसे कोई मेरे दिल से पूछे...धन्य है तुम्हें, तुमने अपना वचन निभा दिया। आज से तुम मेरे भाई हो सगे...'

कहकर मि० भल्ला पुनः रोने लगे।

कालाभूत उन्हें दिलासा देने लगा, जब वे चुप हो गए तो उसने जाने की इजाजत चाही।

मिस्टर भल्ला बोले—'कालाभूत !...तुमने अपनी प्रतिज्ञानुसार 'गोल्डेन गैंग' का विनाश तो कर लिया, अब

मैं चाहता हूँ तुम इन्सानों की तरह मेरे साथ रहो...'

कालाभूत हँसा धीरे से, बोला—'प्रिन्सिपल साहब ! मैं भी एक इन्सान ही हूँ। मेरा यह रंग-रूप, शरीर, सब बनावटी है...अभी वह समय नहीं आया कि मैं खुद को प्रकट करूँ, परन्तु जल्दी ही मैं अपने असली रूप में आऊँगा..'

'सच ...तुम सच कहते हो कालाभूत ! क्या वास्तव में तुम भी इन्सान हो ?....' हर्ष-विह्वल मि० भल्ला बोले।

'जिस दिन आप समाधि का उद्घाटन करेंगे, उसी दिन मैं सबके सामने आऊँगा।'

इतना कहकर कालाभूत अदृश्य हो गया।

× × ×

'अरे ! तुम रो रही हो अकेले, क्या हुआ, डर गई क्या ?..' लौटकर कालाभूत ने उस युवतीको रोते देख पूछा।

'ऐसे ही...' उसाँस लेकर युवती बोली—'अकस्मात् दिल भर आया सो रोने लगी...'

'मुझे ताज्जुब है, तुम जैसी युवती, जो रंगीन तितली बनकर फूल-फूल का रस लेना जानती हो, उसकी आँखों में पानी देखकर आश्चर्य होता है...तुम्हें भी दर्द है, तुम्हारे दिल में भी पीड़ा काँपती है ?...' व्यंग था कालाभूत की वाणी में।

'कालाभूत !...' व्यथित होकर वह बोली--'तुम नहीं समझ सकते...यह पश्चात्ताप और ग्लानि के आँसू हैं, इन आँसुओं की पीड़ा सब नहीं जान सकते—अगर तुम इन्सान होते तो मेरा दर्द समझते...'

'हः हः हः....' कालाभूत हँस पड़ा--'इन्सान न सही, पर इन्सानों के संग रहकर इन्सानियत और हैवानियत जानने लगा हूँ। वफा और बेवफाई को मैं पहचानता हूँ कान्ता...'

'तुम... तुम कैसे जानते हो मुझे कालाभूत ?...' हैरत से पूछा उसने।

'शक्ल बदल गई है तुम्हारी, पर आँखें वही हैं, जिनमें तुमने ब्रजेश की तस्वीर बसाई थी कान्ता ! मैं क्या नहीं जानता...मुझसे कुछ भी छुपा नहीं।'

कान्ता सिसक-सिसक कर रो पड़ी।

'कालाभूत !...मुझे याद है, एक बार अपने पिता और ब्रजेश की लड़ाई में तुम्हारा नाम सुना था। इसीलिए मैंने तुमसे उसी समय ब्रजेश के पास ले चलने को कहा था... मैं उनके पैरों पर गिरकर माँफी माँगना चाहती हूँ। उसके बाद मैं अपने पिता के पास चली जाऊँगी। एक बार यह तमन्ना लग पड़ी है कि जिसकी खतावार हूँ—उसके पैरों पर अपना सर रख दूँ, वह चाहे तो सर कलम करके मेरे गुनाहों की सजा दे ले...

मैं एक गिरी हुई नारी हूँ कालाभूत !....गिरकर सँभल गई हूँ.. और इन्सान गिरे नहीं तो सँभलने की कद्र कौन जाने ?...समय की आग में तपकर, अब मैं सुर्खरू हो गई हूँ... इसलिए अब कभी गिरूँगी नहीं... कभी नहीं....'

कालाभूत का दिल भी हमदर्दी से भर उठा।

कहा उसने—'कान्ता !... प्यार वह गङ्गाजल है, जो अपवित्र नहीं होता....इस शरीर का कोई ठिकाना नहीं, इन्सान को इन्सान से प्यार होना चाहिए....

प्यार से इन्सां बना है, इन्सान प्यार है
प्यार आफताब है, आसमान प्यार है
आवे-जहाँ प्यार, कोई दिल तो टटोले,
बियाबाँ में चले जाओ, भगवान प्यार है।

'कान्ता !...तुम्हारे दिल में ब्रजेश के लिए इतनी जगह है तो वह इतना छोटा नहीं कि तुम्हें सहारा न दे...'

इतना कहकर कालाभूत ने अपनी बगल में लगी बटन दबाई और पोशाक उतार कर अलग कर दी।

दूसरे ही पल वहाँ कान्ता के सामने ब्रजेश खड़ा था। कान्ता लता की तरह ब्रजेश के पाँवों से लिपट गई।

उस समय भोर होने वाली थी। ऊषा की लाली पूरब दिशा से झाँकने को ब्याकुल हो उठी थी।

● ●

दूसरे ही दिन, मिर्जापुर के 'किरण' दैनिक पत्र में निम्नलिखित पंक्तियाँ बड़े-बड़े अक्षरों में प्रकाशित हुईं।

'गोल्डेन गैंग' का विनाश

एक भीषण रहस्य—सरकार द्वारा
पारितोषिक की घोषणा !

मिर्जापुर में वर्षों से 'गोल्डेन गैंग' का आतङ्क छाया था ! जासूस सतत प्रयत्न करने पर भी उसका पता न लगा सके। परन्तु कल एक आश्चर्यजनक तरीके से इस गिरोह का विनाश हुआ है।

इस कमेटी के कर्णधारों की लाशें लालगंज के एक मकान में बरामद हुई हैं और वहीं एक पुर्जा भी पड़ा हुआ मिला है।

पुर्जे में लिखा है कि ये ही दुष्ट उस कमेटी के कर्ता-धर्ता थे। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि शहर कोतवाल रतन सिंह भी इस षडयन्त्र में शामिल था, क्योंकि वहीं पर उसकी भी लाश मिली है।

इस गिरोह के विनाश करने वाले का अभी तक पता नहीं है !

दयालु सरकार ने अपने ओहदेदार कोतवाल के कुकर्मों पर शोक प्रकट करते हुए यह घोषणा की है कि जिस मनुष्य ने इस गिरोह का विनाश किया है, उसे १०,००० रुपये पारितोषिक दिया जायगा।

जिस मनुष्य ने अपनी जान पर खेलकर इन दुष्टों का विनाश किया है, उसे सामने आकर सरकार से दस हजार रुपये का पारितोषिक ले अपनी कीर्ति-कौमुदी उज्ज्वल बनानी चाहिए।

× × ×

अगले ही दिन सरकार की सेवा में एक टाइप किया हुआ प्रार्थना-पत्र पहुँचा, जिसमें यह लिखा था कि पारितोषिक की धनराशि नेटिव कालेज के प्रिन्सिपल मिस्टर भल्ला के पास पहुँचा दी जाय जिसे वह गुप्ता स्मारक भवन में लगा सकेंगे।

उद्घाटन के सुअवसर पर वह मनुष्य वहाँ पहुँच जायगा। केन्द्रीय खुफिया विभाग के उच्च अधिकारी भी वहाँ उपस्थित हों तो बेहतर है, क्योंकि वह मनुष्य अपने देश के जासूस विभाग को एक नायाब तोहफा प्रदान करेगा, जिससे गुप्त षडयन्त्रों का पता लगाने में आसानी होगी।

नीचे हस्ताक्षर के स्थान पर 'कालाभूत' लिखा था।

सभी यह नाम सुनकर दङ्ग हो उठे।

× × ×

मि० भल्ला बहुत खुश थे।

पत्नि को पाकर जैसे उन्हें नया जीवन मिल गया था। उसके पहले वे बहुत परेशान थे। अपने बच्चे के भविष्य की उन्हें बेहद चिन्ता थी कि उसकी परिवरिश कैसे होगी।

स्वयं उनका जीवन सदा अस्त-व्यस्त रहेगा।

परन्तु अब वे उन चिन्ताओं से मुक्त थे।

उनकी सुख-शान्ति वापिस आ गई थी। वे पूरी तरह से अपने साइंस प्रोफेसर मित्र को अमर बनाने के लिए जुट गये। उन्होंने 'गुप्ता स्मारक भवन' के लिए कोई बात उठा न रखी।

पानी की तरह रुपया बहाया गया। अत्यधिक परिश्रम किया उन्होंने।

परिणाम यह हुआ कि थोड़े ही दिनों में वह भव्य भवन पूर्णत: तैयार हो गया। भवन में एक वृहद कमरा बनाया गया था जिसके मध्य में मिस्टर गुप्ता की समाधि थी।

समाधि सोने की बनी हुई थी, जिसे देखकर नेत्र तृप्त हो जाते थे।

आज गुप्ता स्मारक भवन का उद्घाटनोत्सव है।

नेटिव कालेज में एक वृहद् जलसे की योजना की गई है। शहर के बड़े-बड़े रईस, जमींदार तथा अन्य माननीय सज्जन आमंत्रित किये गये हैं।

केन्द्रीय खुफिया विभाग के प्रमुख अधिकारी भी वहाँ उपस्थित हैं।

जिस व्यक्ति ने इतनी भयंकर संस्था का सर्वनाश कर दिया, उसे देखने को सभी उत्सुक हैं!

अधिकारी यह सोचकर चकित हैं कि आखिर वह जासूस विभाग को कौन-सी नायाब वस्तु भेंट करना चाहता है।

सारा कालेज हरे-पीले कागजों से सजाया गया है।

कालेज के उद्यान की छटा और भी निराली है।

मि० भल्ला इस उत्सव को सफलीभूत बनाने के लिए जी-जान से जुटे हैं। 'स्मारक-भवन' के वृहद् कमरे में मिस्टर गुप्ता की समाधि के चारों ओर स्टूल तथा कुर्सियाँ सजाई गई हैं।

रङ्ग-विरङ्गे बल्वों की प्रखर ज्योति से समाधि भवन जग-मगा रहा है।

तीव्र प्रकाश में सोने की समाधि विचित्र रूप से चमक रही है।

घण्टाघर की घड़ी ने टन्-टन कर आठ बजा दिये।

धीरे-धीरे कालेज के विद्यार्थियोंने आना प्रारंभ किया।

तत्पश्चात् शहर के अन्यान्य गणमान्य सज्जन-वृन्द आने लगे! मोटरों से सड़क छिक गई। कालेज के विशाल फाटक पर जनता उमड़ पड़ी।

समाधि भवन के सुसज्जित द्वार पर खड़े मि० भल्ला और उनकी पत्नी आगत सज्जनों को रिसीव करने लगे।

विद्यार्थियों तथा अतिथियों से भवन ठसाठस भर गया।

चारों ओर निस्तब्धता थी।

किसी के साँस की आवाज भी सुनाई नहीं पड़ रही थी। सब निर्निमेष दृष्टिसे वह सोने की समाधि देख रहे थे।

तभी—

स्वर्गीय गुप्ता की मूर्ति के निकट धुआँ फैल गया और जब वह धुआँ दूर हुआ तो लोग विस्मित हो उठे।

वहाँ पर एक दानव जैसी आकृति खड़ी थी।

उसके समस्त शरीर पर काले-काले बाल और भयानक नाखून थे।

कुछ लोग भयत्रस्त हो उठे!

उसी समय उन्हें मेघ-गर्जन-सी आवाज सुनाई पड़ी।

'भाइयों! आप लोग आश्चर्य न करें...मैं कालाभूत हूँ। उस गिरोह का सर्वनाश मैंने और मेरे इसी कालेज के कुछ छात्र साथियों ने किया है। यह कार्य मैंने अपने गुरु स्वर्गीय गुप्ता जी के कहने से किया है। मरने से पहले मैंने उन्हें वचन दिया था...वे महान थे...उनकी शक्ति अपार थी, उनके अकस्मात् काल कवलित हो जाने से हमारी ही नहीं सम्पूर्ण विश्व की जो क्षति हुई है, उसे युगों तक पूरा नहीं किया जा सकेगा...'

उन्होंने ऐसे जाने कितने आविष्कार किए थे, जो मानव को अमर बनाने में सहायक होते.. लेकिन वे सब उन्हीं के साथ चले गए।

मैं आपको उनकी शक्ति का एकाध चमत्कार दिखाऊँगा।'

कहकर कालाभूत ने जासूस विभाग के दो प्रमुख अधिकारियों को बुलाया।

उन्हें कन्धे पर बैठाकर वह उत्सव भवन के विशाल मैदान में दौड़ने लगा।

लोगों ने ताज्जुब से देखा। कालाभूत आसानी के साथ साठ-सत्तर मील की रफ्तार ने दौड़ रहा था।

मि० भल्ला और उनकी पत्नी को छोड़कर सभी हैरत से भर उठे। वे लोग कालाभूत की शक्ति से परिचित थे।

थोड़ी देर बाद कालाभूत रुक गया।

उसने जासूस अधिकारियों से अपने शरीर पर गोली चलाने को कहा।

पहले तो वे लोग किसी प्रकार तैयार नहा हुए, मगर बहुत कहने पर उन्होंने अपने रिवाल्वरों से कालाभूत पर कई फायर किए।

धायँ! धायँ!!

'हः हः हः...' कालाभूत ने भयानक अट्टहास किया।

लोग एक बार फिर सहस उठे।

कालाभूत का बाल-बाँका भी नहीं हुआ।

लोग चकित हो उठे।

कालाभूत बोला—'भाइयों! यह सारी शक्ति मुझे अपने गुरु गुप्ता जी से ही मिली है। वे 'गोल्डेन गैंग' को

विनष्ट करना चाहते थे, मगर एक दिन धोखे में सोते समय उन्हीं दुष्टों द्वारा मारे गए...

यह पोशाक जो मैं पहने हूँ, उन्हीं का आविष्कार है। मरते समय उन्होंने मुझसे कहा था, यदि वे कुछ दिनों और जीवित रहते तो मनुष्य को अमर कर देते। उनकी इस पोशाक को मैं सहर्ष अपने देश के जासूस विभाग को दान करता हूँ...'

इतना कहकर उसने वह पोशाक उतार दी।

सबने देखा—कालाभूत के स्थान पर ब्रजेश खड़ा था। मि० भल्ला के मुख से खुशी की चीख निकल पड़ी।

सैकड़ों लोगों के मुख से निकला—'अरे ब्रजेश !....'

सभी गद्गद् हो उठे।

मिस्टर भल्ला ने सबको अपनी ओर आकर्षित करते हुए कहा—

'आगत सज्जनों ! आपने यहाँ पधार कर मिस्टर गुप्ता के प्रति अपना जो प्रेम प्रदर्शित किया है, उसके लिए हम आपके चिर-कृतज्ञ हैं।

अब उद्घाटन-क्रिया आरम्भ होनी चाहिये। सबसे पहले कालेज के विद्यार्थीगण समाधि पर माला चढ़ायेंगे।'

कालेज के प्रत्येक विद्यार्थी को पुष्पमाला दी गई थी। मिस्टर भल्ला का इशारा पाते ही सभी बारी-बारी से समाधि के पास पहुँच माला अर्पित कर अपना माथा टेकने लगे। देखते ही देखते वह दिव्य समाधि पुष्पमालाओं से ढँक गई। फूलों का ढेर लग गया।

ब्रजेश की भी पारी आई। वह हाथ में फूलों का गजरा लिए हुए अश्रु पूर्ण नेत्रों से, समाधि की ओर बढ़ा।

उसका हृदय मिस्टर गुप्ता के लिए रो रहा था। उसके भीतर एक संघर्ष मचा हुआ था।

वह समाधि के पास जाकर खड़ा हो गया और पुष्प माला चढ़ाने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाया।

तब तीव्र प्रकाश से समाधि-भवन जगमगा उठा।

प्रखर ज्योति से सबकी आँखें चौंधिया गईं। सभी ने आश्चर्य-विस्फारित नेत्रों से देखा, समाधि की जगह में मिस्टर गुप्ता की दिव्य आकृति खड़ी थी।

उसमें से एक उज्ज्वल प्रकाश निकल रहा था।

सबका सर अपने-आप नीचा हो गया। सभी ने उस दिव्य मूर्ति को हाथ जोड़कर अभिनन्दन किया।

ब्रजेश ने अपनी माला ऊँची की और उस दिव्य मूर्ति ने सर झुका दिया। पुष्पमाला उसके गले में जा पड़ी।

ब्रजेश के नेत्रों से दो बूँद आँसू टपक कर उस दिव्य मूर्ति के चरणों पर गिर पड़े।

—● बस ●—